यह रज़ा के नीज़े की मार है कि अदू के सीने में ग़ार है
किसे चारा जोई का वार है कि यह वार वार से पार है

नफ़स का पुजारी
वहाबी + देवबंदी

मुरत्तिब

आले रसूल अहमद कटिहारी

Published By: Mission Al- Ashrafi Al- Qadri Katihar

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझ को क्या

इमाम अहले सुन्नत अज़ीमुल बरकत आला हज़रत
अल शाह इमाम अहमद रज़ा खां अलैहिर्रहमां बरेली शरीफ़

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझ को क्या
दिल था साजिद नज्दिया फिर तुझ को क्या

बैठते उठते मदद के वासिते
या रसूलल्लाह कहा फिर तुझ को क्या

या ग़रज़ से छुट के महूज़ ज़िक्र को
नामे पाक उन का जपा फिर तुझ को क्या

बेख़ुदी में सज्दए दर या त़वाफ़
जो किया अच्छा किया फिर तुझ को क्या

उन को तम्लीके मलीकुल मुल्क से
मालिके आ़लम कहा फिर तुझ को क्या

उन के नामे पाक पर दिल जानो माल
नज्दिया सब तज दिया फिर तुझ को क्या

या इ़बादी कह के हम को शाह ने
अपना बन्दा कर लिया फिर तझ को क्या

देव के बन्दों से कब है येह ख़ित़ाब
तू न उन का है न था फिर तुझ को क्या

لَا يَعْبُدُوْنَ आगे होगा भी नहीं
तू अलग है दाइमा फिर तुझ को क्या

दश्ते गिर्दो पेशे त़यबा का अदब
मक्का सा था या सिवा फिर तुझ को क्या

नज्दी मरता है कि क्यूं ता'ज़ीम की
येह हमारा दीन था फिर तुझ को क्या

देव तुझ से ख़ुश है फिर हम क्या करें
हम से राज़ी है ख़ुदा फिर तुझ को क्या

देव के बन्दों से हम को क्या ग़रज़
हम हैं अ़ब्दे मुस्त़फ़ा फिर तुझ को क्या

तेरी दोज़ख़ से तो कुछ छीना नहीं
ख़ुल्द में पहुंचा रज़ा फिर तुझ को क्या

❀❀❀❀❀

शर्मिंदा क्यूँ ऐसे हालात करें

शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन हज़रत
अल्लामा सय्यद मुहम्मद मदनी मियां अल-अशरफ़ी किछौछा शरीफ

ज़िक्रे जहाँ में हम सब पड़ कर क्यूँ ज़ा-अ लम्हात करें
आओ पढ़े वश शम्स की सूरत रूए नबी की बात करें
जिन के आने की बरकत से धरती की तक़दीर खुली
आओ हम सब उन चरणों पर जान व दिल सौगात करें

नूर ए खुदा है नूर ए नबी है नूर है दीं और नूरे किताब
हम ऐसे रोशन क़िस्मत क्यों तारीकी की बात करें
रहमत वाले प्यारे नबी पर पढ़ते रहो दिन रात दुरूद
आओ लोगों अपने उपर रहमत की बरसात करें

क्या यह सूरत उन को दिखाने के लाएक़ है गौर करो
सामने उन के हूँ शर्मिंदा क्यूँ ऐसे हाल़ात करें
क़ब्र में ھا ھا لا ادری कहने की रुसवाई से बचो
बिगड़ी हालत कब बनती है चाहे लाख ھیہات करें

अहले इश्क गुज़र जाते हैं दार व नार की मंजिल से
अहले खिरद के बस में नहीं है अहले इश्क की मात करें
यह लाज्ज़ात की दुनिया कब तक ? इस की असीरी ठीक नहीं
आओ समझ से काम लें **अख्तर** ख़ुद को तालिब ए ज़ात करें

(तजल्लियात ए सुखन पृष्ट ३४)

दुश्मने दीन ए हसन झूटे फसाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

बद तमीजी तो है पैदाइशी खसलत तेरी
हक़ को बातिल से मिलाना यह है फितरत तेरी
रब की आयात का इनकार है आदत तेरी
अहल ए ईमान पे जाहिर है ख़बासत तेरी
हैं शयातीन तेरे नाज़ उठाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

औलिया से है अक़ीदत हमें और तुझ को बैर
वह हैं अल्लाह के अपने तू समझता है गैर
तू है बदबख़्त कहाँ तेरे मुक़द्दर में खैर
तेरे माथे पे तो शैतान ने रखा है पैर
लानतें तुझ पे हूँ आयात मिटाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

इहतराम और अक़ीदत से जो आते हम हैं
फूल चादर जो मज़ारात पे लाते हम हैं
फ़ैज़ अल्लाह के महबूबों से पाते हम हैं
क्यों तो मरता है अगर उर्स मनाते हम हैं
दुश्मने औलिया ओ दोज़खी थाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

नंगे मस्जिद में नहाता है तो तबलीग है यह
भोज मस्जिद पकाता है तो तबलीग है यह
नाक मस्जिद में बजाता है तो तबलीग है यह
बदबू मस्जिद में उड़ाता है तो तबलीग है यह
थू थू मस्जिद में ख़ुराफात मचाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

जश्न ए मिलाद मनाने पे तू रोता क्यों है
इस क़दर दर्द तेरे सीने में होता क्यों है
नारा ए जश्न से औसान तू खोता क्यों है
इस दिन शैतान का बन जाता तू पोता क्यों है
हाय तकदीर तेरी नार जाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

जश्ने देवबंद मुसर्रत से मनाते हो तुम
इंदिरा गाँधी के लिये बज़्म सजाते हो तुम
मुशरिका के लिए कुरान पढ़ाते हो तुम
कैसी मक्कारियाँ करते हो कराते हो तुम
दीन तो है नहीं, दिल बीच के खाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

फातिहा वाले यह हलवे यह मिठाई ज़र्दे
सभी न जाइज़ व बिद-अत तेरे आगे ठहरे
खीर और पूड़ी है दीवाली की जाइज़ ले ले
और बतलाये कि जाइज़ हैं कपूरे कौवे
क्यों न तो गंद बके गंद के खाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

फूल, खुशबू ए मज़ारात से चिढ़ता है तू
पोतड़े नानी के मिल जाएँ तो बाँटते खुशबू
बदबू को खुशबू तो खुशबू को बताए बदबू
तू मुसलमान नहीं तुझ में है भंगी की ख़ू
दूर हट गंद की सोगंद उठाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

सरवरे दीन को कहे मर के वह मिट्टी में मिले
गौस और ख्वाजा हैं बेबस तू यह बकवास करे
क़ब्र से घर पर मिठाई तेरा दादा लाए
इस को उस मुर्दे की जिंदा करामत जाने
कैसा बेशर्म है मक्कार बहाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

उनको ख़ालिक़ ने बनाया है नबी ए आखिर
खुद नबी ने भी किया है यही सब पर ज़ाहिर
लेकिन इक तेरे ही फ़िरके का लाईन शातिर
करके इंकार किया तुम को भी ख़ुद सा काफ़िर
ये हैं क़ाइद तेरे दोज़ख के ठिकाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

इल्मे गैब ए नबवी शिर्क नज़र आए तुझे
और शैतान को अल्लाह का साझी जाने
रब के महबूबों की तारीफ़ बुरी तुझको लगे
हाँ मगर थानवी मरदूद का कालिमा पढ़ ले

क्या यही दीन है शैतानी घराने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

दाढ़ी वाले जो बीवी का मज़ा लेता है
जो भरी भीड़ में भी टांग चढ़ा देता है
ऐसा बद फ़े-अल भी रूहानी तेरा नेता है
अपनी इज़्ज़त का गला तूने तो खुद रेता है

ओ शैतान को अक़्ताब बताने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

देख यह बात बताती है तेरे घर की किताब
रंडियों के यहाँ जाते थे तेरे आली जनाब
कर दी उस पीर ने इक बात कुछ इस दर्जा खराब
कि त-वाइफ ने किया पीर के मुंह में पेशाब

यह तेरे शेख हैं गंगा में नहाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

कोई गुस्ताख़, नबी (ﷺ) को कहे अपने जैसा
किसी मरदूद ने सरकार (ﷺ) को मजबूर कहा
कोई बेहूदा बके इल्म, बहाइम जितना
कोई बदबख़्त यह लिखता है कि हम से सीखा

यह कमीने हैं तेरे अगले जमाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

रब को जो झूटा कहें, हैं वह अकाबिर तेरे
और सिद्दीक हुए झूठ में माहिर तेरे
नजसुल ऐन से बदतर हुए ताहिर तेरे
जिन को ज़ालिम कहा रब ने वह हैं नासिर तेरे

क्या तेरे भैजे में कीड़े हैं पखाने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

बाब ए तौबा है कुशादा अभी तौबा कर ले
सुन हर इक काफ़िर व मुनकर से किनारा कर ले
मिल किसी **रिजवी** से, पाक अपना अकीदा कर ले
अपने ज़ुल्मत कदा दिल में, उजाला कर ले

फिर यह अय्याम नहीं लौट आने वाले
ओ वहाबी ओ मज़ारात को ढहाने वाले

नफ़्स का पुजारी वहाबी देवबंदी

इन पुस्तकों की मदद से तरतीब दी गई है

जमाअते अहल ए हदीस का नया दीन

लेखक

ख़लीफा ए शैखुल इस्लाम हज़रत यहिया अंसारी अशरफ़ी

अल वहाबियत

लेखक

मुनाज़िरे इस्लाम मुहम्मद ज़िया उल्लाह क़ादरी अशरफ़ी

गुस्ताखे रसूल गुरुह के सेक्सी मुल्ला

लेखक

मुनाज़िरे अहल ए सुन्नत हज़रत अब्दुस्सत्तार हमदानी बरकती

लेखक

देवबंदियत के बुतलान का इंकशाफ़

मुनाज़िरे इस्लाम मुहम्मद काशिफ इकबाल मदनी रज़वी

बदूरुर अहला	अल रौज़तुन नद्‌या	नुज़ुलुल अबरार
कन्जुल हकायक	अर्फुल जादी	फतवा नज़ीरिया
मल्फूज़ाते हकीमुल उम्मत	बेहश्ती ज़ेवर	लुगातुल हदीस
फ़तवा अल बानिया	अफाजातुल यौमिया	फ़तवा सत्तारिया
अल-दा ए वद-दाए	नैलअल औतार	हिफज़ुल इमान
रिसाला अल इमदाद	अरवाहे सलासा	बराहीने कातिआ
फ़ज़ाइल ए आमाल	मसलक ए देवबंद	तहजीरून नास
ग़ैर मुक़ल्लिदीन की ग़ैर मुस्तनद नमाज़		संगीन फ़ितना
सवातिउल इलहाम	तक्वीयतुल इमान	आदि

بسم الله الرحمن الرحيم

प्रथम सूचना

तक़लीद की अनिवार्यता होना अक़ली दलील से भी साबित होता है और नक़ली दलील से भी। जब आप रोगी होते हैं आपकी बुद्धि क्या कहती है कि आप किसके पास जाएँगे इंजीनियर के पास या डॉक्टर के पास?

जाहिर है कि बुद्धि डॉक्टर के पास जाने का आदेश करती है। जब मनुष्य स्वयं शरीअत से परिचित न हो और नरक में जाने से बचने के लिए शरीअत का पालन करना चाहता हो तो समस्या पूछने के लिए किसकी तरफ़ बढ़ेंगे ? धर्मगुरू या अज्ञानी की तरफ?

सामान्य ज्ञान यही कहती है कि उस की तरफ जाना चाहिए जो धर्म के आदेशों में परिचित हो और विद्वान हो। वह विद्वान खुद धर्म में विशेषज्ञ होगा या किसी विशेषज्ञ के नुस्खे को बताएगा इसी स्पेशलिस्ट को मुजतहिद कहते हैं और इन के बातों पर अमल करने वालों को मुक़ल्लिद कहते हैं |

मुक़ल्लिद शरीयत ए इस्लामिया की एक इस्तिलाह है।

अहले सुन्नत व जमाअत के चार इमाम हैं:

1.इमाम आज़म अबू हनीफा عليه الرحمه(विसाल १५० हिजरी)

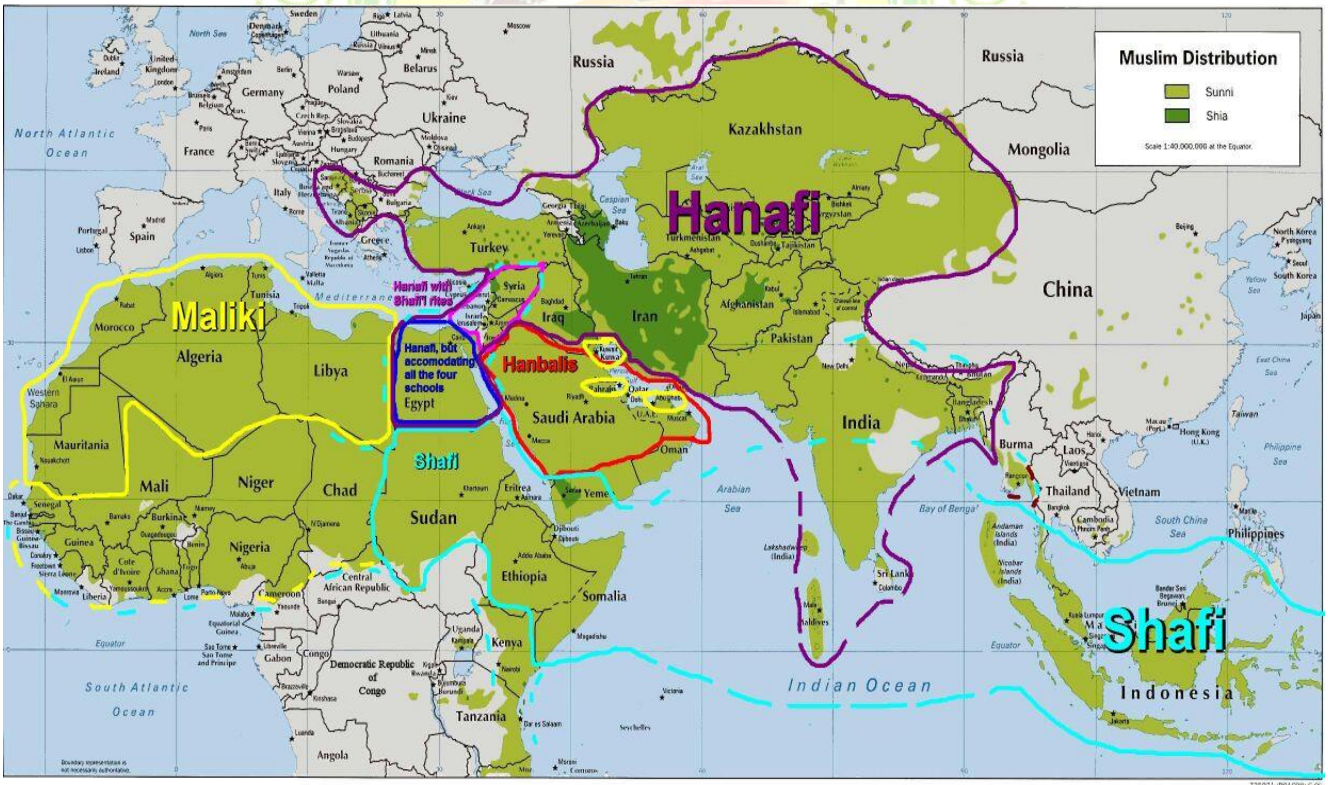
2. इमाम मालिक عليه الرحمه (विसाल १८९ हिजरी)

3. इमाम शाफ़ई عليه الرحمه (विसाल २०४ हिजरी)

4. इमाम अहमद बिन हम्बल عليه الرحمه (विसाल २४१ हिजरी)

इन आ-इम्मा ए किराम ने अपनी ख़ुदा दाद इल्मी व फ़िकरी क्षमताओं और मुज्तहिदाना अंतर्दृष्टि के आधार पर अपने अपने कार्यकाल में हस्बे ज़रूरत क़ुरआन और हदीस से मसाइल ए फ़िक़ह संकलित किए यूं इन इमामों के पदचिन्ह चार फ़िक़्ही मतों के रूप में अस्तित्व में आए।

इन चारों आ इम्मा ए किराम में से किसी भी फ़िक़्ही विचारधारा का पालन करने वाले को **मुक़ल्लिद** कहते हैं। जैसे इमाम ए आज़म अबू हनीफ़ा عليه الرحمه के मुक़ल्लिदीन को हनफ़ी, इमाम मालिक عليه الرحمه के मुक़ल्लिदीन मालिकी और इमाम शाफई عليه الرحمه के मुक़ल्लिदीन शावाफअ और इमाम अहमद बिन हन्बल عليه الرحمه के मुक़ल्लिदीन को हम्बली कहा जाता है। तस्वीर में देखें ....



इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति उनमें से किसी का पैरोकार नहीं हो तो वह **ग़ैर मुक़ल्लिद** है।

यह एक तारीखी हकीक़त (ऐतिहासिक तथ्य) है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन (जो खुद को अहले हदीस कहते हैं) का वजूद (स्थापित) अंग्रेजों के दौर से पहले न था | अंग्रेजों के समय से पहले भारत में न उनकी (ग़ैर मुक़ल्लिदीन की) कोई मस्जिद थी ना मदरसा और ना कोई पुस्तक | अंग्रेजों ने भारत में क़दम जमाया तो अपना अव्वलीन हलीफ (सबसे पहली सहयोगी) उलमाए देवबंद को पाया और जब उलमा ए अहले सुन्नत व जमात (सूफ़ी मुस्लिम) ने अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद का फतवा दिया और हजारों मुसलमानों को अंग्रेज़ के विरोध मैदाने जिहाद में ला खड़ा किया तो जिस ने अंग्रेज़ के विरोध यानि जिहाद को हराम करार दिया और मुसलमानों में तफरका और इन्तिशार (विभाजन एवं अराजकता) फैलाया वह ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात थे और आज तक अपनी रविश (विधि) पर क़ायम हैं | अल्लाह हम सब की इमान की हिफाज़त फरमाए आमीन |

फ़िक़्ह हनफ़ी जो लगभग बारह लाख (१२०००००) मासाइल का मजमुआ (संग्रह) हैं इस अजीमुश्शान फ़िक़्ह के चंद एक मसाइल पर ऐतराज़ करते हुए ग़ैर मुक़ल्लिदीन अवाम को यह बताने की कोशिश करते हैं कि फ़िक़्ह, क़ुरान व हदीस के विरोध है और ग़ैर मुक़ल्लिद अवाम की ज़ुबान पर तो यह एक चलता हुआ जुमला कि "फ़िक़्ह हनफ़ी में फुलां फुलां और हया सोज़ मसअला है" इस लिए ज़ुरूरत महसूस हुई कि अवाम को अगाह (सावधान) किया जाये कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन की मुस्तनद किताबों में क्या क्या गंदे और हया सोज़ मसाइल (घिनौनी बातें) भरे पड़े हैं | अफ़सोस ग़ैर मुक़ल्लिद उलमा ने यह

मसाइल क़ुरान व हदीस का नाम लेकर बयान किये हैं | आप यकीन करें जितने हयासोज़ मसाइल (घिनौनी बातें) ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लाहू अलैहि व सल्लम से मनसूब (संबंधित) किये हैं किसी हिन्दू, सिख, इसाई या यहूदी ने भी अपने मज़हबी पेशवा (धार्मिक गुरु) से मनसूब (संबंधित) नहीं किये होंगे | ग़ैर मुक़ल्लिदीन जान बूझ कर के इन मसाइल को छुपाते रहे हैं | इनकी कोशिश रही है कि हनफ़ी पर खाह मखाह के इतराज़ किये जायें ताकि उनके अपने मसाइल अवाम से छुपी रहें |

आप यह मसाइल पढ़ेगें तो हो सकता है कि कानों को हाथ लगायें और तौबा तौबा करें | शायद यह भी कहे कि ऐसी बातें लिखने की क्या जरूरत थी लेकिन यह हकीक़त है कि जिस तेज़ी से इखलाक को बालाए ताक रखते हुए ग़ैर मुक़ल्लिदीन अपना बुकलेट (Literature) फैला रहे हैं हकीक़त को उजागर करना हमारी मजबूरी है | दिए गए हवाले में कोई गलती हो तो मुत्तला फरमायें ताकि जल्द से जल्द इस्लाह कर दी जाये | दुआ करें कि अल्लाह तआला ग़ैर मुक़ल्लिदीन और देवबंदियों को हिदायत फरमाएं और उम्मत को इन खाब्बिस फितने से बचायें आमीन|

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का तआरूफ

जमात अलहे हदीस दौर जदीद का एक निहायत ही पुर फ़ितन बद अक़ीदा, दहशत गर्द, वहशतनाक और बिद्दती फिरका है जिसका बुनियादी मक़सद इस्लामी मूल्यों, सिद्धांतों

व विचारों और सहाबा ए कराम , ताबईन ए इज़ाम, मुहद्दीसीने मिल्लत, फुकहा ए उम्मत, औलिया अल्लाह, आ-इम्मा ए दीन, मुज्तहिदीन व मुजदद्दिन ए इस्लाम और असलाफ़ ए सालिहीन के खिलाफ एलान ए बगावत, तफसीर ए बिल-राय, अहादीस ए मुबारका की मन मानी तशरीह ख़ुद साख्ता (अपना बनाया हुआ), अक़ाइद व मसाइल, इंकार ए फ़िक्ह और आ-इम्मा अरबा ख़ुसूसन इमाम ए आज़म (رضی اللہ عنہ) की शान में बेअदबी व बकवास इस फ़िरका का ख़ुसूसी पहचान है|

मज़हबे अहले हदीस (ग़ैर मुक़ल्लिद)

जमात ए अहले हदीस (ग़ैर मुक़ल्लिद) का मज़हब, क़ुरान व सुन्नत, असलाफ़ ए उम्मत, आ-इम्मा ए मिल्लत ख़ास कर के इज्मा ए उम्मत के खिलाफ़ है |

इसी तरह यह लोग अपनी राह उम्मत के खिलाफ़ इख़्तियार करते हुए सवादे आज़म से कटे हुए हैं, रहमत ए खुदावन्दी से महरूम है हजुर अकरम नूर मुजस्सम (صلی اللہ علیہ وسلم) का फरमान है "ید اللہ علی الجماعۃ" यानी अक्सरियत पर अल्लाह का दस्ते करम है चुनांचे यह गिरोह बहुमत (अक्सरियत) से कट कर रसूल ए आज़म (صلی اللہ علیہ وسلم) की बिशारत से महरूम है|

ग़ैर मुक़ल्लिदियत हक़ीक़त में राफ्ज़ीयों (शिया) नेचारियों, दहरियों, काद्यानीयों, वहाबियों, नज्दीयों, तब्लीगीयों और मौदूदीयों की जमातों का मल्गूबा व माजूने मुरक्कब हैं यानी इन तमाम फ़िरको से मिलकर बना है |

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के बदलते चेहरे

ग़ैर मुक़ल्लिदीन अपने को पहले मुवह्हिद फिर कुछ दिनों के बाद मुहम्मदी कहलाते थे और एक ज़माना के बाद निहायत जादुई तरीकों से अहले हदीस हो गए |

ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने **"अहले हदीस"** नाम को इख़्तियार कर के लोगो को यह बताना चाहा कि इनकी जमाअत वह जमाअत है जो हदीस पर अमल करती है और तमाम सही हदीस पर अमल करना ही उस का मज़हब है इस बात को खुद ग़ैर मुक़ल्लिदीन उलमा बार बार दावा के शकल में दुहराते रहते हैं यानी एक ग़ैर मुक़ल्लिद साहब बड़े ख़ुश हो कर फरमाते हैं "वह (अहले हदीस) बुखारी, मुस्लिम की हदीसों को और तमाम सही हदीसों को काबिले अमल जानते हैं |

(मिल्लत ए मुहम्मदी पृष्ट ५)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने अपनी इस बात या अपने इस दावा को बड़े तश्हीरी (Propaganda) अंदाज़ में फैलाया है और बहुत से वह लोग जो ग़ैर मुक़ल्लिदीन कि मज़हब से सही जानकारी नहीं रखते इन के इस दावा को सही समझने लगे हैं मौजूदा दौर की इस मशगूल दुनिया में किसे इतनी फुर्सत है कि वो किसी बात की असल हकीक़त मालूम करने के लिए तहकीक करे और अगर करना भी चाहें तो ग़ैर मुक़ल्लिदीन उलमा की किताबों तक हर किसी को रसाई (पहुँच) आसान नहीं |

लिहाज़ा जरूरत थी कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन के इस फरेब से लोगों को निकाला जाये और जो असल वाकिया है उस को

सामने लाकर ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मज़हब की हकीक़त से आगाह कराया जाये |

ग़ैर मुक़ल्लिदीन की हक़ीक़त

- **हाजी इमदादुल्लाह साहब महाजिर मक्की** (عليه الرحمه) जो कि इकाबिर ए देवबंद मौलवी कासिम नानोतवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी अशरफ अली थानवी, मौलवी खलील अहमद अन्बेठ्वी वगैरह के पीर व मुर्शिद हैं वहाबिया नज्दिया के संबंध में फरमाते हैं कि " ग़ैर मुक़ल्लिद लोग दीन के रहज़न (लूटेरा) हैं इनके इख्तिलात (मेल जोल) से इह्तियात (परहेज़) करना चाहिए | (शमा इमे इम्दादिया पृष्ट २८)
- **बानी ए मदरसा देवबंद कासिम नानोत्वी** ने ग़ैर मुक़ल्लिदीन को बे वकूफ क़रार दे कर लिखा है कि किसी आलिम को ग़ैर मुक़ल्लिद देख कर जाहिल अगर तकलीद छोड़ दे तो यूं कहो इल्म था या ना था | अक्ल ए दीन भी दुश्मनों को नसीब हुई और जाहिलों को जाने दीजिये| (तस्फिया अल अक़ाइद पृष्ट ३५ प्रकाशित देवबंद)
- **वहाबियों और देवबंदियों के मौलवी अशरफ अली थानवी** के मल्फूज़ में है कि एक साहब ने अर्ज क्या कि हज़रत ! ग़ैर मुक़ल्लिद ब जाहिर तो सुन्नतों पर अमल करने वाले

मालूम होते हैं | फ़रमाया जी हाँ यहाँ तक कि सुन्नत के पीछे कुछ फ़राइज़ तक को भी छोड़ बैठते हैं यह ऐसे मुत्तबा ए सुन्नत हैं| अकाबिर ए उम्मत की शान में गुस्ताखी करना, क्या यह फ़र्ज तर्क (छोड़ना) नहीं ? बहुत ही बे बाक फिरका है | (अफा जातुल यौमिया भाग ५ पृष्ट ३०६-३०७)

- **देवबंदियों के मौलवी मुर्तज़ा हसन** ने अपने अखबार अल अदल में लिखा है कौल ए खुदा और हदीस ए रसूल हुक्म है, और हुक्म होता है और दलील और आदम को सजदा करो यह हुक्म अपने नफ़स के लिए दलील नहीं हो सकता, जो इस हुक्म ए वाजिबुल तामील होने के लिए दलील है, वह यहाँ मजकूर नहीं इस वजह से इस कौल को (जिस के साथ वाजिब अल तस्लीम होने की दलील ज़िक्र नहीं की गई) बिला दलील तस्लीम करता है तो तकलीद है और शैतान ने इस हुक्म को बिला दलील ना माना ग़ैर मुक़ल्लिद हो कर काफ़िर और मुरतद हो गया | (अख़बार अल अदल ७, /०९/१९२७) फतवा ए अहले हदीस पृष्ट ९०)
- **दारूल उलूम देवबंद का फतवा मौलवी सनाउल्लाह** दर्ज करते हैं कि हाफिज़, कारी, आलिम, जाहिद, मुत्तक़ी ग़ैर मुक़ल्लिद को इमाम बनाना नहीं चाहिए | (अख़बार अहले हदीस अमृतसर ०३/०८/१९४५)

- **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** ने लिखा है कि जो उलमा ए दीन की तौहीन और उन पर तअन व तशनीअ करते हैं कब्र के अन्दर उनका मुंह क़िबला से फिर जाता है बल्कि यह फ़रमाया कि जिस का जी चाहे देख ले | ग़ैर मुक़ल्लिदीन चूँकि आ-इम्मा ए दीन को बुरा कहते हैं इस लिए उन के पीछे नमाज़ पढ़नी मकरूह फ़रमाया है| (तजकिरा अल रशीद भाग २ सतर २१-२३)
- **मौलवी सुलेमान नदवी** ने फिरका वहाबिया को ग़ाली फ़िरका करार दिया है | (अहले हदीस अमृतसर २६/०५/१९४४ पृष्ट ५)
- **देवबंदियों के शेख़अल इस्लाम मौलवी हुसैन अहमद मदनी** के संबध दारुल उलूम देवबंद में ज़ेरे तालीम ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी छात्र ने वहाबी मौलवी अब्दुल मुबीन मंजर को ख़त लिखा कि "मौलाना मदनी अपनी तकरीरों में कहते हैं कि उन का (वहाबियों का) वजूद शैतान से हुआ है यह नजिस हैं | (अख़बार अहले हदीस दिल्ली कॉलम ३ ,१५/०४/१९५४)
- **देवबंदियों के मदरसा देवबंद के मुफ़्ती मौलवी अजीजुर रहमान** लिखते हैं कि अक्सर ग़ैर मुक़ल्लिदीन के अक़ाइद भी ख़राब होते हैं आ-इमा ए दीन पर खुसूसन तअन करना, इमाम ए हुमाम हजरत अबू हनीफा (رضی اللہ عنہ) पर

उनका शिआर (उनकी पहचान) हैं और रवाफिज़ (शिओं) की तरह सलफ सालिहीन को तअन कर के अपना दीन व इमान ख़राब करते हैं | (अहले हदीस अमृतसर २६/०६/१९१४ पृष्ट २)

- **देवबंदी लोगों के मौलवी मुहम्मद थानवी** भी वहाबीयों के संबंध में लिखते हैं ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबीयों का अक़ीदा है कि आ-इम्मा अरबा में से किसी एक की तकलीद करना शिर्क है और जो वहाबीयों के मुखालिफ़त करते हैं वह भी मुशरिक हैं | वहाबी अहल ए सुन्नत व जमाअत को क़त्ल करना और उनकी औरतों को क़ैद कर लेना जाइज़ समझते हैं इस के इलावा और दीगर अक़ाइद ए फासीदा भी हैं कि हम तक सुक्का लोगों के ज़रिए पहुंचे हैं और अक़ाइद तो हम ने उन से खुद भी सुने हैं वह एक खारजी फिरका है | (हाशिया निसाई शरीफ भाग १ पृष्ट ३६० प्रकाशित दिल्ली)
- सईदुलहक़ फ़ी तख़रीज जाअलहक़ में हैं कि " भारत में १२४५ हिजरी में यह नया फ़िरका **(ग़ैर मुक़ल्लिद)** जाहिर हुआ जिस के बानी अब्दुल हक़ बनारसी थे यह लोग तक़लीद को शिर्क कहते हैं और मज़ाहिबे अरबअ को मुशरिक फिरका कहते हैं | (सईदुल हक़ फ़ी तख़रीज जाअल हक़ पृष्ट ४३)

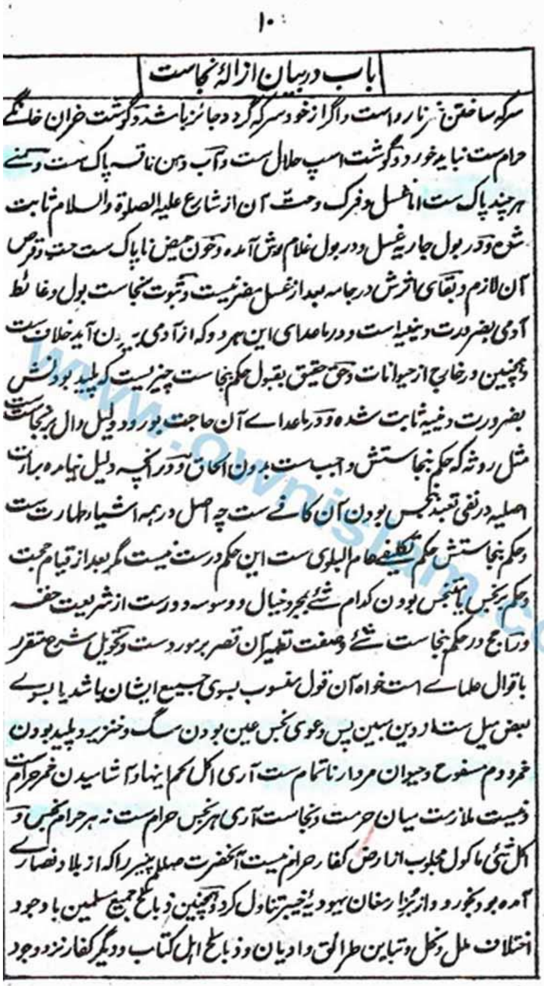
वहाबिया देवबन्दिया में शर्म का कुछ भी असर नहीं
देते हैं इलज़ाम सुन्नियों पर लेकिन अपनी ख़बर नहीं

नफ़स का पुजारी

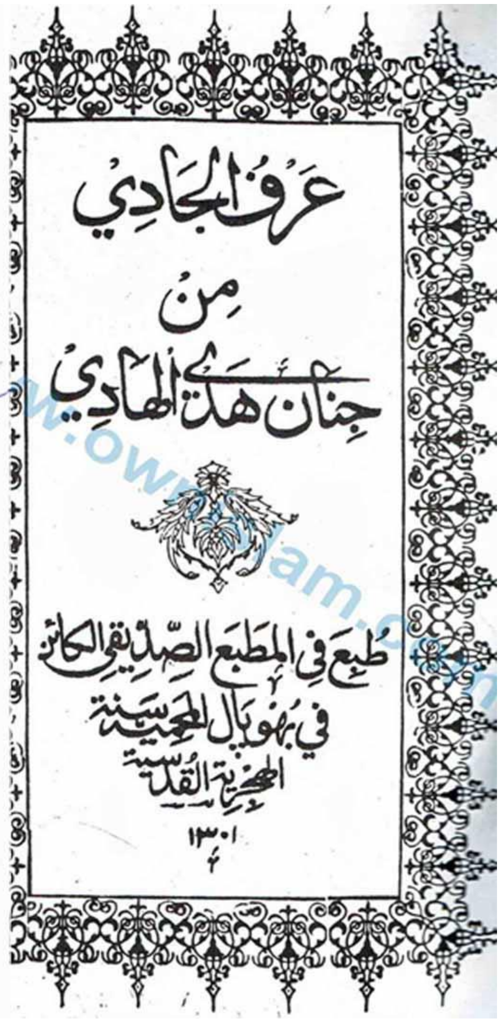
मनी (वीर्य) पाक है और खाना भी जाएज़

गै़र मुक़ल्लिदीन के नज़दीक मनी (वीर्य) पाक है और खाना भी जाएज़ है जैसा कि मशहूर गै़र मुक़ल्लिद आलिम नवाब सिद्दीक हसन खान लिखते हैं:

"मनी हर चंद पाक है" (अर्फुल्जादी फ़ारसी १०)


۱۰

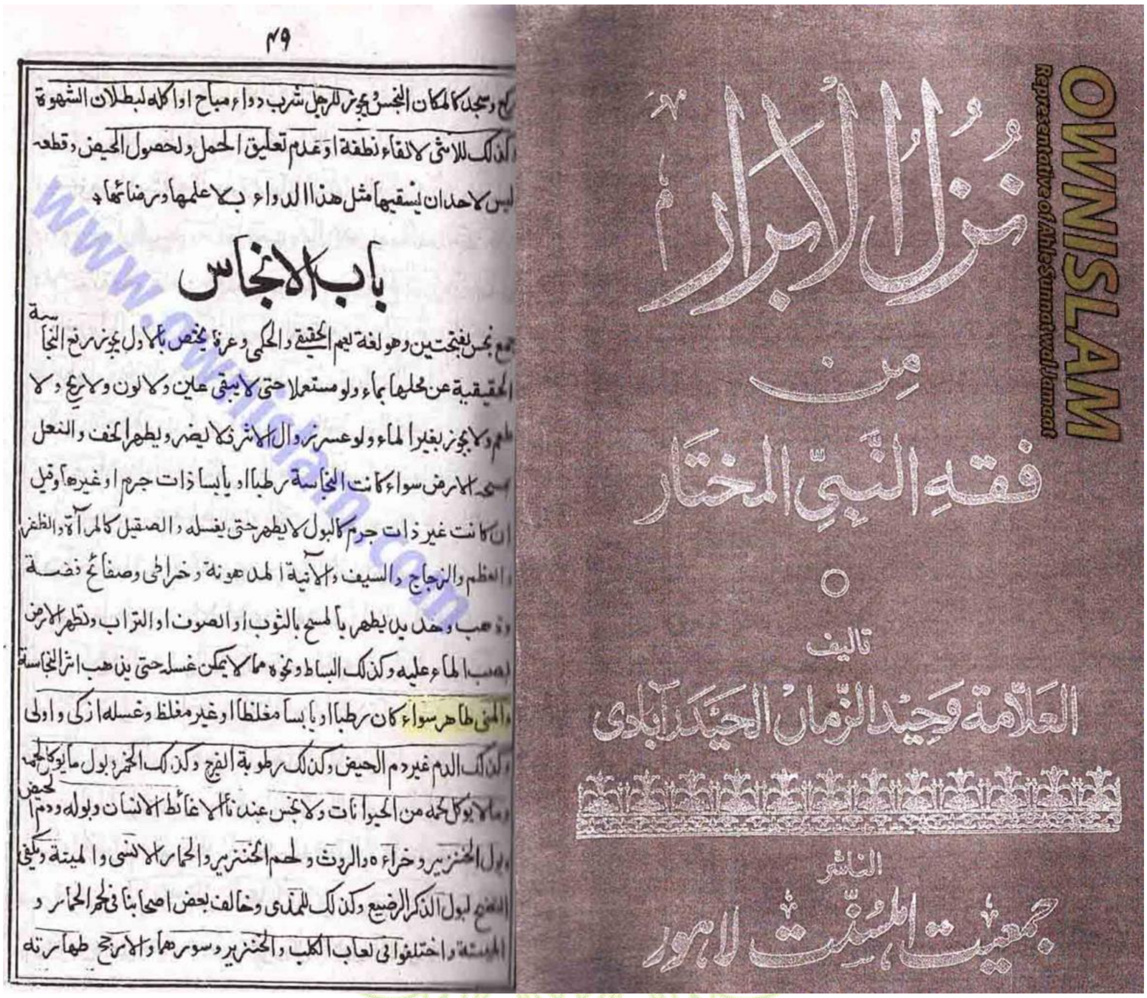
باب دربیان ازالۂ نجاست



मनुष्य कि वीर्य के नापाक होने की कोई दलील नहीं आई| (बदूरुर अहला १५)

दोनों (परुष और महिला) की वीर्य पाक है| (अल रौज़तुन नद्‌या भाग १ पृष्ट १३)

मारुफ़ ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम अल्लामा वहिदुज्ज़मा खान लिखते हैं: "मनी (वीर्य) खाह गाढ़ी हो या पतली, खुश्क (सुखा) हो या तर (भीगा) हर हाल में पाक है"| (नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट ४९)



और नामवर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मोलाना अबुल हसन मुहीउद्दीन लिखते हैं: "मनी (Sperm) पाक है और एक कौल में खाने की भी इजाज़त है"| (फ़िक़्ह मुहम्मदिया भाग १ पृष्ट ४१)

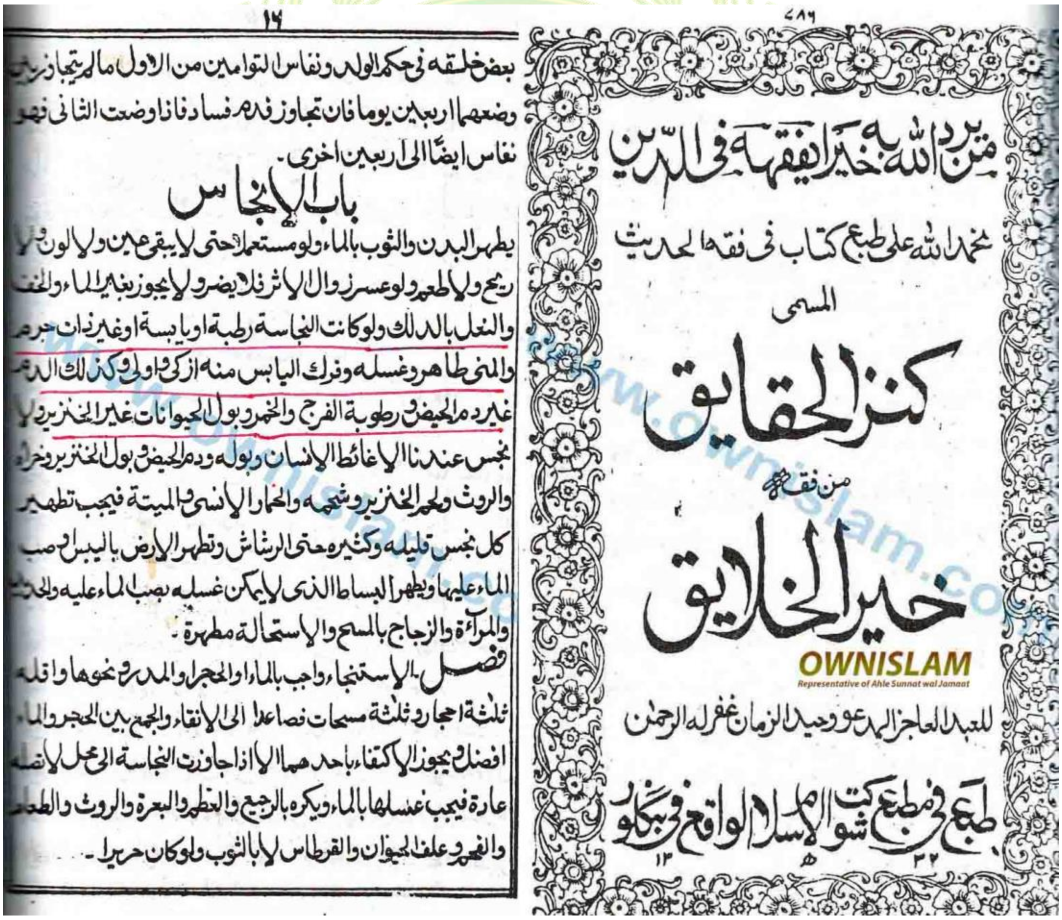
टिप्पणी: कुल्फियां बनायें, कस्टर्ड जमायें या आइस क्रीम बनायें ग़ैर मुक़ल्लिद मज़े उड़ायें |

नापाक के नसीब में नापाक ही होती है अल्लाह तआला ने दर अस्ल ग़ैर मुक़ल्लिदों को यह सज़ा दी है की वह मुअतबर

(पवित्र) खाना जिस पर कुरान शरीफ, दुरूद शरीफ़, कालिमा शरीफ़ पढ़ी गई हो वह खाना उनको नसीब न हो क्यूंकि इन ख़बीसों के नज़दीक यह खाना मुअतबर (पवित्र) नहीं है

शर्म गाह (योनि) की रतुबत (पानी/रस) पाक

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नजदीक महिला की शर्म गाह (योनि) की रतुबत (पानी/रस) पाक है जैसा कि मशहूर व मारुफ़ ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम वहीदुज्जामा खान ने लिखा है: "महिला की शर्म गाह (योनि) की रतुबत पाक है" (कन्जुल हकायक पृष्ट १६)


٤٨٦

من يرد الله به خيرا يفقهه في الدين

نحمد الله على طبع كتاب فى فقه الحديث

المسمى

كنز الحقايق

من فقه

خير الخلايق

للعبد العاجز المدعو وحيد الزمان غفر له الرحمن

طبع فى مطبع كتب شوكة الاسلام الواقع فى بنگلو

١٦

بعض خلقه في حكم الولد ونفاس التوامين من الاول ما لم يتجاوز ... وضعهما اربعين يوما فان تجاوز فدمه فساد فاذا وضعت الثاني فهو نفاس ايضا الى اربعين اخرى.

باب الانجاس

يطهر البدن والثوب بالماء ولو مستعملا حتى لا يبقى عين ولا لون ولا ريح ولا طعم ولو عسر زوال الاثر فلا يضر ولا يجوز بغير الماء والخف والنعل بالدلك ولو كانت النجاسة رطبة او يابسة او غير ذات جرم والمني طاهر وغسله وفرك اليابس منه ازكى واولى وكذلك الدم غير دم الحيض ورطوبة الفرج والخمر وبول الحيوانات غير الخنزير ولا نجس عندنا الا غائط الانسان وبوله ودم الحيض وبول الخنزير وخرؤه والروث ولحم الخنزير وشحمه والحمار الانسي والميتة فيجب تطهير كل نجس قليله وكثيره حتى الرشاش وتطهر الارض باليبس او صب الماء عليها ويطهر البساط الذي لا يمكن غسله بصب الماء عليه والحديد والمرآة والزجاج بالمسح والاستحالة مطهرة.

فصل الاستنجاء واجب بالماء او الحجر او المدر ونحوها واقله ثلثة احجار وثلثة مسحات فصاعدا الى الانقاء والجمع بين الحجر والماء افضل ويجوز الاكتفاء باحدهما الا اذا جاوزت النجاسة الى محل لا تصله عادة فيجب غسلها بالماء ويكره بالرجيع والعظم والبعرة والروث والطعام والفحم وعلف الحيوان والقرطاس لا بالثوب ولو كان حريرا ...

जब बच्चा महिला की योनि से बहर निकले और इस पर योनि कि रतूबत (पानी/ नमी) हो तो वह भी पाक है |

(फ़िकाह मुहम्मदिया पृष्ट २३)

वहाबी मौलवियों को सूझी कि हम तो नफसानी ख्वाहिशात के मुक़ल्लिद हैं | हम से इतने दिन कैसे सब्र हो सकता है लिहाज़ा अपना उल्लू सीधा करने के लिए अकाबिर ए वहाबिया ने हदीस नबवी की मुखालिफ़त करते हुए यह कहना शुरू कर दिया कि हैज़ की कोई मुद्दत नहीं |

हैज़ की कोई मुद्दत नहीं

वहाबियों के मुजतहिद क़ाज़ी शौकानी ने लिखा है कि हैज़ (माहवारी/ मासिक धर्म) की कम और ज़यादह दिनों की कोई मुद्दत (Period) नहीं| (हदियतुल मेहदी भाग ३ पृष्ट ५०)

हैज़ (मासिक धर्म) की मुद्दत (Period) नहीं | अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट १३, ९ अप्रैल १९३७)

इमामुल वहाबिया वहीदुज्जमा ने लिखा है कि जमाना ए हैज़ में काला (सियाह) रंग के खून के इलावा किसी और रंग का खून हैज़ नहीं | (हदिय्यतुल मेहदी भाग ३ पृष्ट ५२)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन महिला
हैज़ (माहवारी) से कैसे पाक हो

मारूफ ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम अल्लामा वहिदुज्ज़मा ग़ैर मुक़ल्लिद औरतों को हैज़ (माहवारी) से पाक का तरीका बाते हुए लिखते हैं: "महिला जब हैज़ से पाक हो तो दीवार के साथ पेट लगा कर खड़ी हो जाये और एक टांग इस तरह उठाए जैसे कुत्ता पिशाब करते वक़्त (समय) उठता है और कोई रोई

के गाले फुर्ज (योनि) के अन्दर भरे इस तरह वह पूरी पाक होगी"। (लुगातुल हदीस)

टिप्पणी: ग़ैर मुक़ल्लिद का अजीब व गरीब नुस्खा है ग़ैर मुक़ल्लिद तजरबा कर के देखें |

हैज़ (माहवारी) से पाकी के लिए खुशबू का प्रयोग

मारूफ ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मौलवी अबुलहसन मोही उद्दीन लिखते हैं: "हाईज़ा हैज़ से पाक हो कर गुस्ल कर ले फिर रूई की धज्जी के साथ खुशबू लगाकर शर्म गाह (योनि) के अन्दर रख ले" | (फ़िक़ह मुहम्मदिया भाग ४ पृष्ट २२)

टिप्पणी: जो क़ब्र को खुशबू लगाये वह क़ब्रपरस्त जो शर्मगाह को खुशबू लगाये वह शर्मगाह परस्त |

औरत का मस्जिद में आना जाना

अल्लामा वहिदुज्ज़मा लिखते हैं: जुन्बी नापाक आदमी हाईजा औरत को मस्जिद में आने जाने की इजाज़त है वहां ठहरना ना चाहिए | (हदीयतुल मेहदी पृष्ट ५७)

आगे लिखते हैं कि हाईजा औरतों और जनाबत (नापाकी) वाले लोगो को कुरान पढ़ना जायज़ है | (हदीयतुल मेहदी पृष्ट ५८)

औरत की इमामत

ग़ैर मुक़ल्लिदों का मज़हब है कि औरत मर्द की इमामत कर सकती है | (अरफुल जावी पृष्ट ३७)

हज़रत जाबिर फरमाते हैं कि मैं ने रसूल ए आज़म को मिम्बर पर यह फरमाते हुए सुना कि हरगिज़ कोई औरत किसी मर्द की इमामत न करे | (इब्न ए माजा)

वहाबियों ! तुम्हारे अकाबिर कितने अजीब मसाइल निकाल कर तुम्हें लुत्फ़ अन्दोज़ होने के मौक़ा देते हैं कि नमाज़ पढ़ते हुए भी इन्तिशार हो और आनंदित (लुत्फ़ अन्दोज़) हो जब वहाबिन इमाम होगी और उसके पीछे वहाबी हज़रात मुक्तदी हूँ तो जब इन की इमाम रूकू और सजदे में जाएगी तो वहाबियों में क्यूँ ना इन्तिशार होगा और क्यूँ न लुफ्त अन्दोज़ होंगे |

औरतों का मर्द इमाम

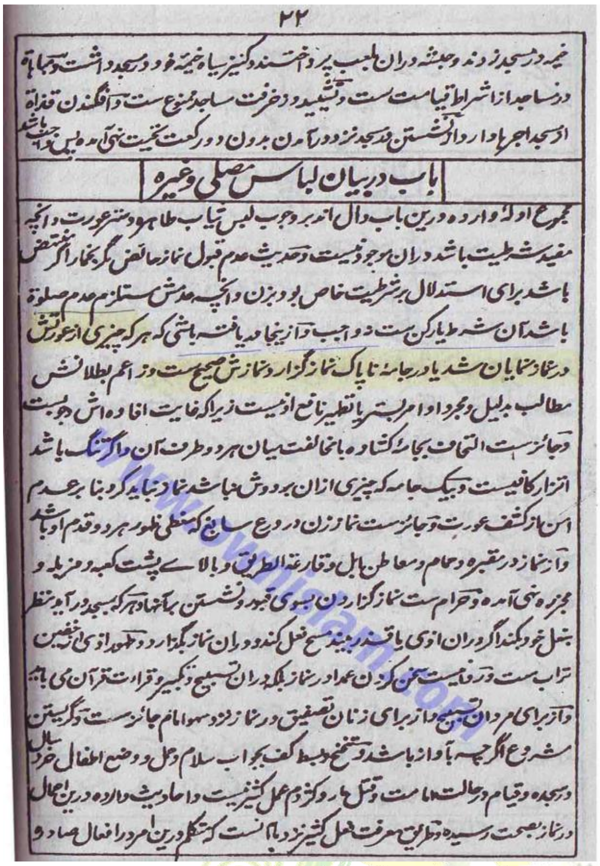
नवाब सिद्दीक हसन भोपाली ने लिखा है कि इस बात से रोकना कि मर्द उन औरतों की इमामत ना करे जिन के साथ मर्द न हो इसके अदम जवाज़ पर हमें कोई दलील नहीं| (अर्फुल जावी पृष्ट ३७)

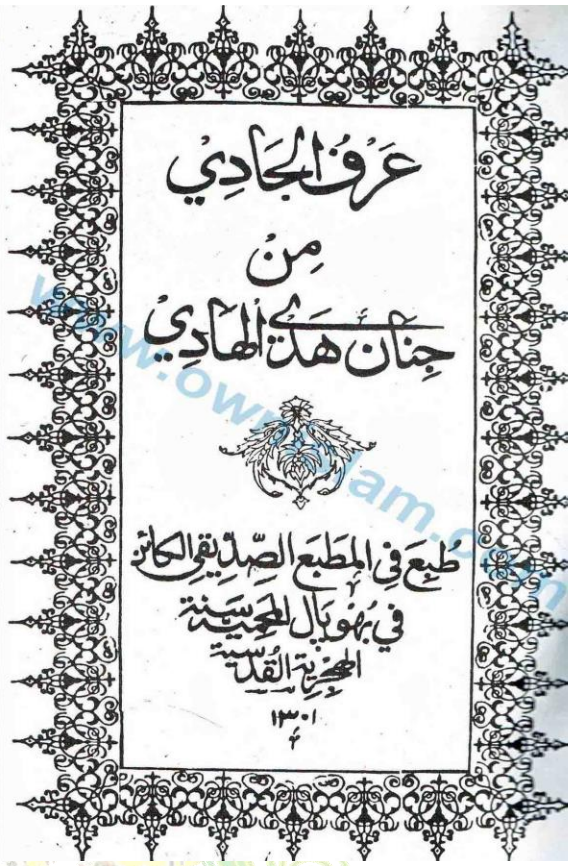
ना बालिग बच्चे की इमामत

नवाब नूरुल हसन भोपाली ने लिखा है कि ना बालिग बच्चे की इमामत सही है| (अर्फुल जावी फ़ारसी पृष्ट ३७)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन औरतों की नमाज़

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब नूरुल हसन खान लिखते हैं: "नमाज़ में जिसकी शर्म गाह (योनि) सब के सामने नुमाया (ज़ाहिर) रही उसकी नमाज़ सही है"|(अर्फुल जादी पृष्ट २२)





नंगे हो कर नमाज़ पढ़ना

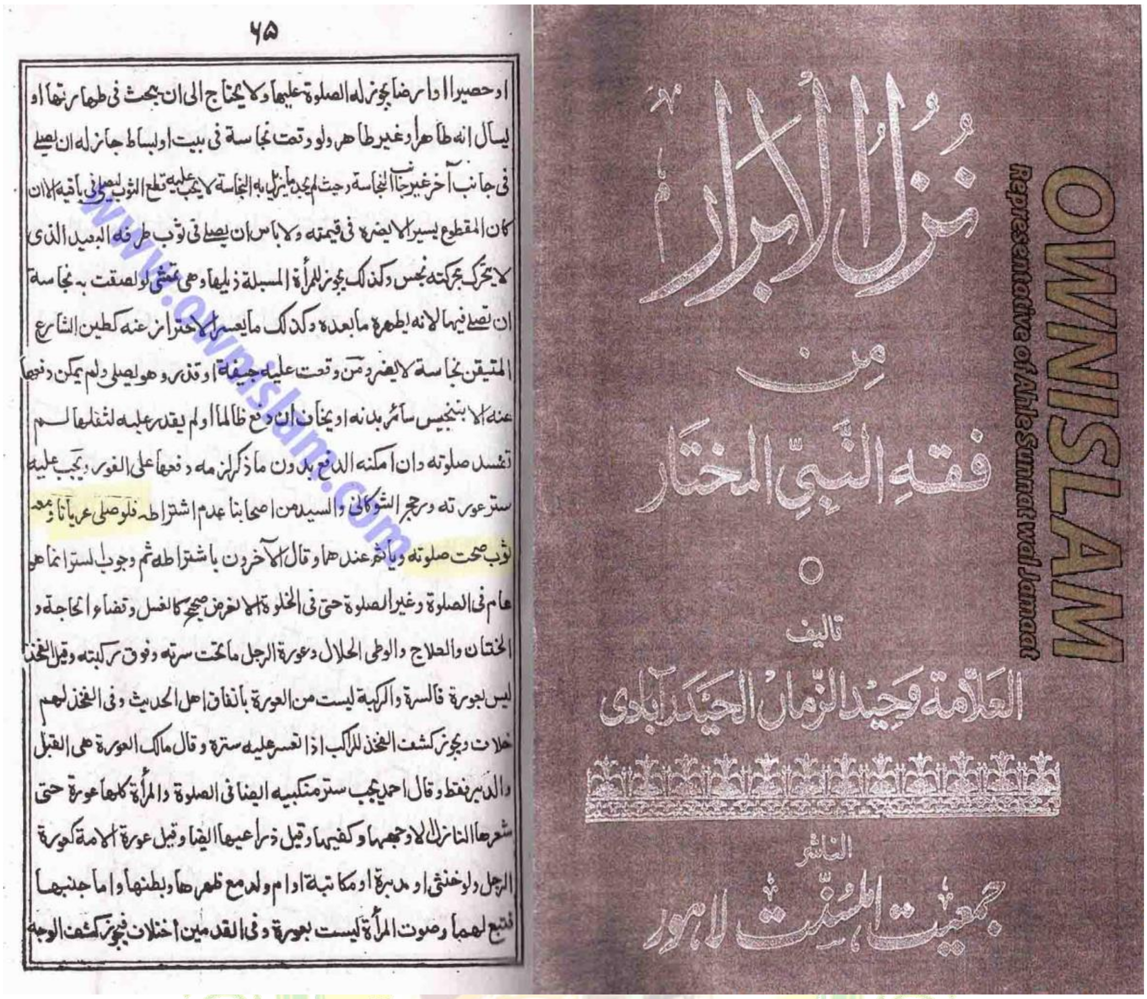
मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब सिद्दीक हसन खान लिखते हैं: "महिला तनहा (अकेली) बिलकुल नंगी नमाज़ पढ़ सकती है | महिला दोसरी महिलाओं के साथ सब नंगी नमाज़ पढ़ें तो नमाज़ सही है | मियां बीवी दोनों अकट्ठे मादर जाद नंगे (Connatural Naked) नमाज़ पढ़ें तो नमाज़ सही है| महिला अपने बाप, बेटे, भाई, चाचा, मामा सब के साथ मादरजाद नंगी नमाज़ पढ़े तो नमाज़ सही है"|

(बदूरुल अहलह पृष्ट ३९)

यह ना समझें कि यह मजबूरी के मसाइल होंगे |

अल्लामा वहीदुज्जामा परिभाषित (वज़ाहत) करते हैं " कि कपड़े पास होते हुए भी नंगे नमाज़ पढ़ें तो नमाज़ सही है"|

(नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट ६५)



नमाज़ में चलने से नमाज़ नहीं टूटती

वहाबियों के इमाम मौलवी वहीदुज्जामा खां ने लिखा है कि अगर घर में कोई ना हो और जरूरत पड़े तो नमाज़ में चल कर दरवाज़ा खोला जा सकता है इस चलने से नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ में कोई फर्क नहीं पड़ेगा |

(कन्जुल हक़ा इक पृष्ट २७)

काबा शरीफ़ की तरफ मुंह करना

वहाबियों के इमाम मौलवी अबुल हसन ने लिखा है कि संभोग के समय क़िबला (काबा शरीफ़) की तरफ मुंह करना जाईज़ है भले इमारतों में हो या मैदान में। (फ़िक़ह मुहम्मदिया पृष्ट ११

पायखाने के समय क़िबला (काबा शरीफ) को मुहं और पीठ करना जायज़ है और अगर कोई आढ़ न हो तो कुछ लोग कहते है कि आढ़ ना भी हो तो जाईज़ है|

(फ़िक़ह मुहम्मदिया पृष्ट १०-११)

देवबंदियों के मौलवी अशरफ अली थानवी ने भी फ़तवा दिया है कि इस्तंजा के समय क़िबला (काबा शरीफ को मुंह करना जाइज़ है | (इमदादुल फतवा भाग १ पृष्ट ३)

काबा शरीफ के जानिब पांव (पैर) कर के सोना जायज़ है |

(फ़तवा ए सत्तारिया भाग ०१ पृष्ट १५२)

कुरान पाक को तअज़ीमन बोसा देना (चूमना) जाएज़ नहीं नीज़ बे वज़ू कुरान पाक को छूना जाएज़ है |

(फ़तवा ए सत्तारिया भाग ०१ पृष्ट १८२)



यह है वहाबियुं देवबंदियों का मज़हब मगर हमारे आक़ा (ﷺ) का फरमान है कि जब तुम पखाना को जाओ तो (पखाना करते समय) क़िबला (काबा शरीफ) की ओर मुंह न करो और न पीठ करो | (मिश्कात शरीफ पृष्ट ४२)

खड़े होकर पिशाब करना जायज़ है

वहाबियों के मौलवी अबुल हसन ने लिखा है कि "अगर कोई खड़े होकर पेशाब करे तो बिला कराहत जाईज़ है"|

(फैजुल बारी भाग १ पृष्ट १२१)

मौलवी वहीदुज़ ज़मा ने भी तयस्सरुल बारी में लिखा है कि "खड़े होकर और बैठ कर दोनों तरह पिशाब करना जायज़ है"|

(तयस्सरुल बारी भाग १ पृष्ट १२६)

वहाबी मौलवी तो खड़े हो कर पेशाब करने के बिला कराहत जायज़ क़रार दे रहा है मगर हुज़ूर (ﷺ) ने इस को प्रतिबंधित फ़रमाई है जैसा कि हदीस शरीफ में है कि खड़े होकर पेशाब न करो | (मिश्कात शरीफ पृष्ट ४२, तिर्मज़ी पृष्ट ४)

शर्मे नबी खौफे खुदा यह भी नहीं वह भी नहीं

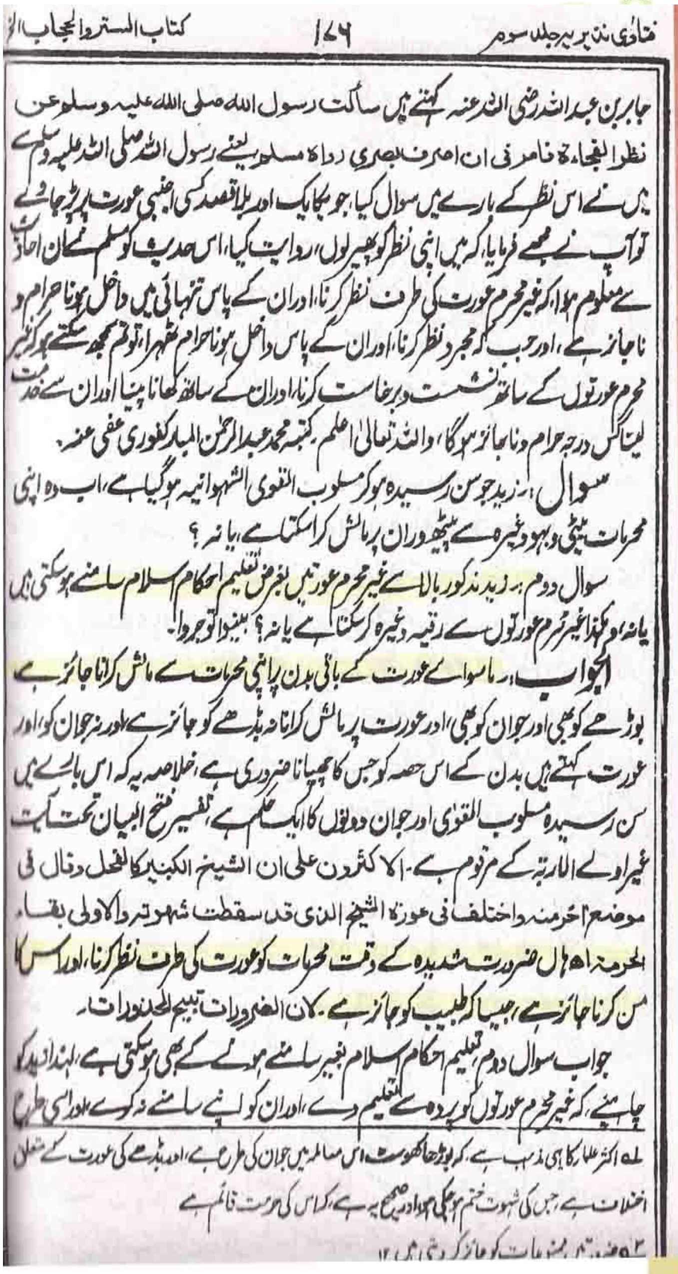
पानी में पेशाब

मौलवी अशरफ अली थानवी ने लिखा है कि अगर कसरत से मिक़दार में पानी जमा हो और उस में थोड़ी सी मिक़दार में पेशाब डाल दिया जाये तो वह पाक रहेगा | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ८ पृष्ट १५८)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का बहन और बेटी से आला ए तानासुल (लिंग) को हाथ लगवाना

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के शैखुल कुल फिल कुल मियां नज़ीर हुसैन देहलवी लिखते हैं: "हर शख्स अपनी बहन, बेटी, बहु, से अपनी रानों की मालिश करवा सकता है और बवक्ते ज़रूरत अपने आलाए तानासुल (लिंग) को भी हाथ लगवा सकते हैं"

(फतवा नज़ीरिया भाग ३ पृष्ट १७६)



فتاویٰ نذیریہ جلد سوم ۱۷۶ کتاب السترو الحجاب الخ

جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہ کہتے ہیں سالت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عن نظر الفجاءۃ فامرنی ان اصرف بصری رواہ مسلم یعنے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میں نے اس نظر کے بارے میں سوال کیا، جو یکایک اور بلا قصد کسی اجنبی عورت پر پڑ جائے تو آپ نے مجھے فرمایا، کہ میں اپنی نظر کو پھیر لوں، روایت کیا، اس حدیث کو مسلم نے، ان احادیث سے معلوم ہوا، کہ غیر محرم عورت کی طرف نظر کرنا، اور ان کے پاس تنہائی میں داخل ہونا حرام و ناجائز ہے، اور جب کہ مجرد نظر کرنا، اور ان کے پاس داخل ہونا حرام ٹھہرا، تو تم سمجھ سکتے ہو کہ غیر محرم عورتوں کے ساتھ نشست و برخاست کرنا، اور ان کے ساتھ کھانا پینا اور ان سے خدمت لینا کس درجہ حرام و ناجائز ہوگا، واللہ تعالیٰ اعلم۔ کتبہ محمد عبدالرحمٰن المبارکفوری عفی عنہ۔

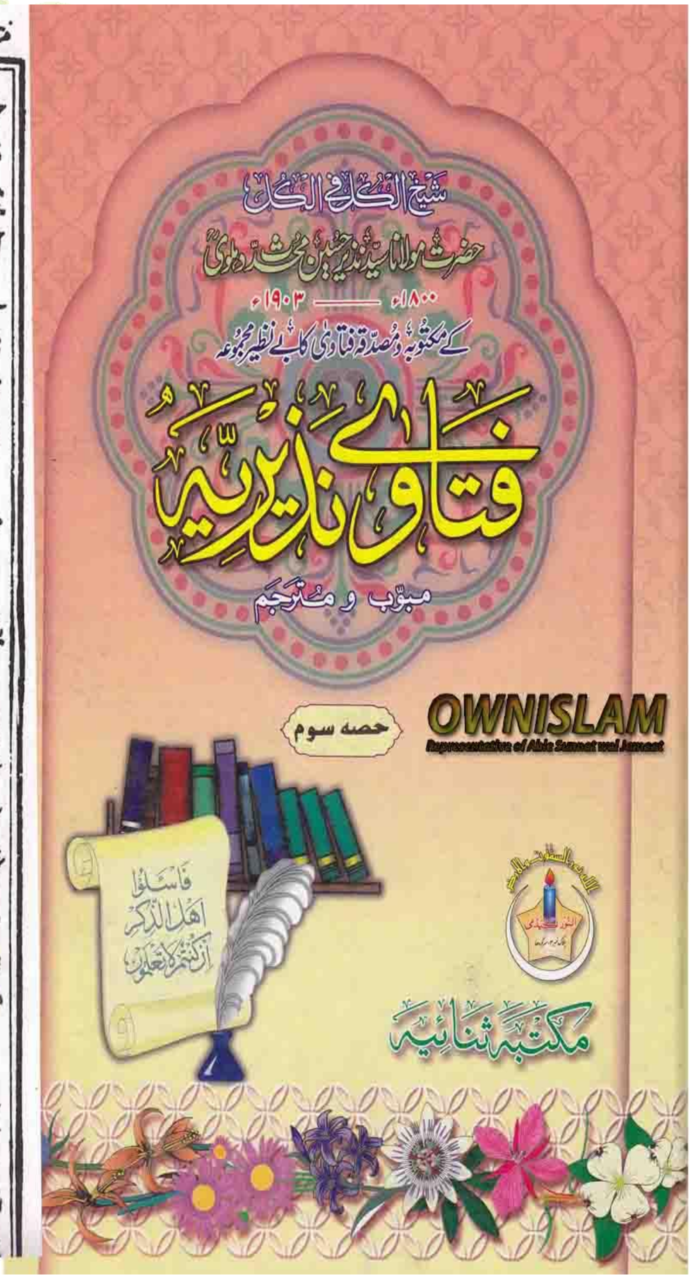
سوال:۔ زید جو سن رسیدہ ہو کر مسلوب القوی الشہوانیہ ہو گیا ہے، اب وہ اپنی محرمات بیٹی و بہو وغیرہ سے پٹھ و ران پر مالش کرا سکتا ہے، یا نہ؟

سوال دوم:۔ زید مذکور بالا سے غیر محرم عورتیں بغرض تعلیم احکام اسلام سامنے ہو سکتی ہیں یا نہ، و نیز اغیر محرم عورتوں سے رقیہ وغیرہ کر سکتا ہے یا نہ؟ بینوا توجروا۔

الجواب:۔ ماسوائے عورت کے باقی بدن پر اپنی محرمات سے مالش کرانا جائز ہے بوڑھے کو بھی اور جوان کو بھی، اور عورت پر مالش کرانا نہ بڈھے کو جائز ہے اور نہ جوان کو، اور عورت کہتے ہیں بدن کے اس حصہ کو جس کا چھپانا ضروری ہے، خلاصہ یہ کہ اس بارے میں سن رسیدہ مسلوب القوی اور جوان دونوں کا ایک حکم ہے، تفسیر فتح البیان تحت آیت غیر اولی الاربۃ کے مرقوم ہے۔ الا کثرون علی ان الشیخ الکبیر کالفحل وقال فی موضع آخر منہ واختلف فی عورۃ الشیخ الذی قد سقطت شہوتہ والاولی بقاء الحرمۃ اھ ہاں ضرورت شدیدہ کے وقت محرمات کو عورت کی طرف نظر کرنا، اور اس کا مس کرنا جائز ہے، جیسا کہ طبیب کو جائز ہے۔ لان الضرورات تبیح المحذورات۔

جواب سوال دوم: تعلیم احکام اسلام بغیر سامنے ہوئے کے بھی ہو سکتی ہے، لہٰذا زید کو چاہیئے، کہ غیر محرم عورتوں کو پردہ سے تعلیم دے، اور ان کو اپنے سامنے نہ کرے اور اسی طرح

لہ اکثر علماء کا یہی مذہب ہے۔ کہ بوڑھا کھوسٹ اس معاملہ میں جوان کی طرح ہے، اور بڈھے کی عورت کے متعلق اختلاف ہے، جس کی شہوت ختم ہو چکی ہو اور صحیح یہ ہے، کہ اس کی حرمت قائم ہے



पीछे के रास्ते सुहबत (संभोग) करना

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के लिए जायज़ है

और गुस्ल भी वाजिब नहीं

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम सिद्दीक हसन खान लिखते हैं: "शर्म गाह (योनि) के अंदर झांकने के मकरूह होने पर कोई दलील नहीं"|(बदूरुल अहला पृष्ट १७५)

आगे लिखते हैं: "रानुं में सुहबत (संभोग) करना और दुबुर (चूतड़) में सुहबत करना जायज़ है कोई शक नहीं बल्कि यह सुन्नत से साबित है" (बदुरुल अहला पृष्ट १५७) استغفرالله ۔ معاذ الله

और मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम वहीदुज्जामा लिखते हैं: "बीवीयुं और लोंडीयूं के ग़ैर फ़ितरी मुकाम (पीछे के मुकाम) के इस्तिमाल पर इनकार जाएज़ नहीं"|

(हदियुल मेहदी भाग १ पृष्ट ११८)

आगे लिखते हैं: "दुबुर (पीछे के मुकाम/ चूतड़) में सुहबत (संभोग) करने से गुसल भी वाजिब नहीं होता"

(नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट २३)

आदमी के पैखाने के स्थान में संभोग किया तो गुस्ल वाजिब नहीं| (नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट २४)

जानवरों की दुबुर में संभोग किया तो गुस्ल वाजिब नहीं |

(नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट २३)

मुर्दा औरत से जिमा (संभोग) किया तो गुस्ल फ़र्ज नहीं |

(नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट २३)

टिप्पणी :जिंदा तो जिंदा मुर्दों को भी नहीं छोड़ा |

अगर कोई औरत लकड़ी या लोहे का लिंग बनकर प्रयोग करे तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं | (नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट २३)

जानवर चौपाए (पशु) के पेशाब गाह में कोई परुष अपना लिंग दाखिल करे तो हमारे (अहले हदीसों) के नज़दीक हक बात यह है कि उस शख्स पर ग़ुस्ल नहीं है | हदियातुल मेहदी भाग ३ पृष्ट २४)

टिप्पणी: इन बातों से पता चलता है कि इन ग़ैर मुक़ल्लिदों के यहाँ ऐसी गंदी और घिनौनी हरकतें की जाती हैं|

फुलां जगह (दुबुर) में रख लो

देवबंदी मौलवी लिखते हैं कि जब वह शख्स शाह साहब के ख़त लेकर उस के पास पंहुचा तो गुस्ताख ने उस ख़त को मोड़ कर एक बत्ती सी बना दी और कहा ले जाओ | शाह साहब से कहो इस को अपनी फुलां जगह (दुबुर) में रख लो | गाली दी यह शख्स भी अजीब था यह सीधा शाह साहब के पास वापस आया और जो अल्फाज़ उस ने कहे थे नक़ल कर दिए | फरमाया अगर में जानता मेरे उस अमल से तेरा काम हो जाएगा तो मैं इस में भी तामुल (सोच-विचार) ना करता मगर में जानता हूँ कि यह लग्व (बे हूदा) हरकत है | (मजलिसे हकीमुल उम्मत पृष्ट २५९)

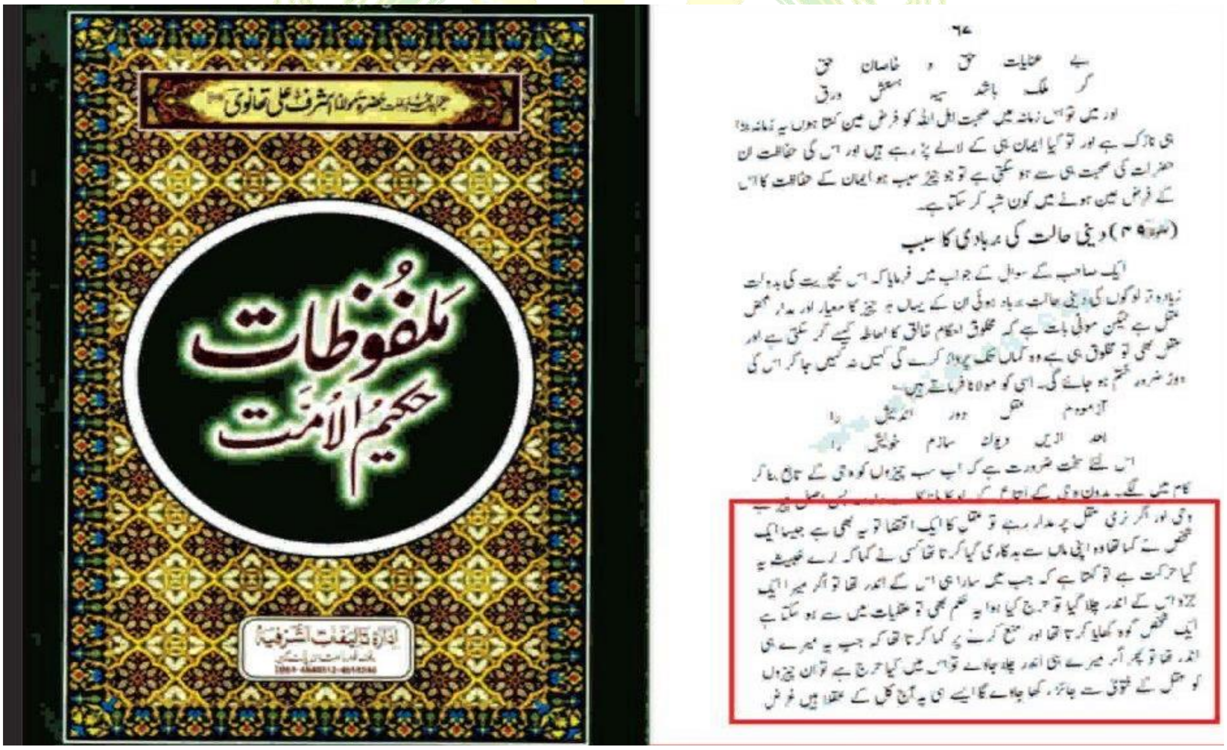
वहाबियों के इमाम मौलवी वहीदुज्जामा ने एक अजीब व ग़रीब मसअला ग़ैर मुक़ल्लिदीन के लिए यह भी बयान किया है कि: “खुद अपना आला ए तनासुल (लिंग) अपनी ही दुबुर (चूतड़) में दाखिल किया तो गुस्ल वाजिब नहीं”|

(नुज़ुलुल अबरार भाग १ पृष्ट २४)

टिप्पणी: यह कैसे मुमकिन है ग़ैर मुक़ल्लिदीन तजर्बा (अनुभाव) कर के दिखायें |

अपनी माँ से ज़िना

एक शख्स अपनी माँ से ज़िना करता था और कहता था कि जब में पूरा इस के अन्दर था और अब अगर मेरा एक अज़व (हिस्सा) अंदर चला गया तो क्या हर्ज़ है तो मौलवी अशरफ अली थानवी क्या कहते हैं स्कैन पेज देखें | (मल्फ़ूज़ाते हकीमुल उम्मत पृष्ट ६७)



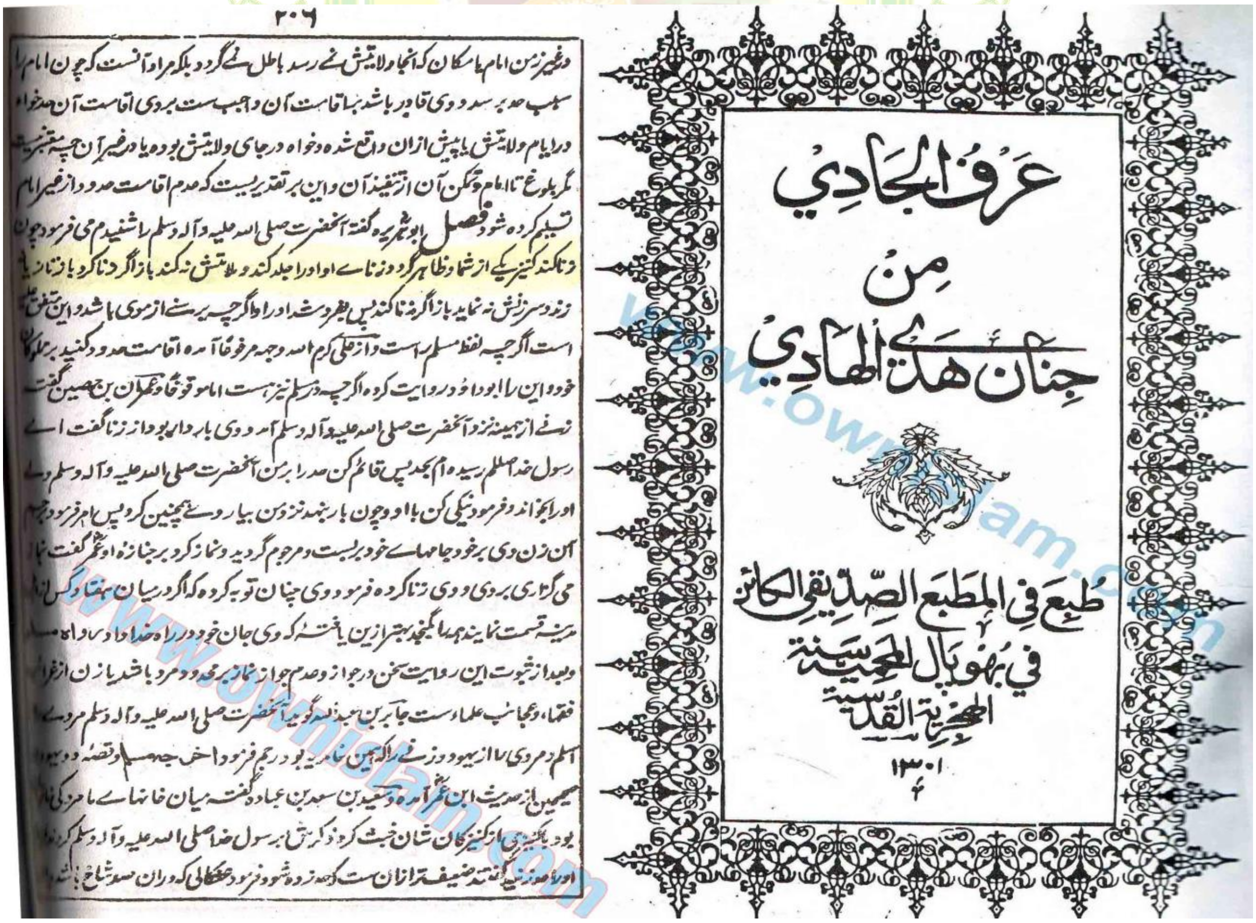
وحی اور اگر نری عقل پر مدار رہے تو عقل کا ایک اقتضا تو یہ بھی ہے جیسا ایک
شخص نے کہا تھا وہ اپنی ماں سے بدکاری کیا کرتا تھا کسی نے کہا کہ ارے خبیث یہ
کیا حرکت ہے تو کہتا ہے کہ جب میں سارا ہی اس کے اندر تھا تو اگر میرا ایک
جزو اس کے اندر چلا گیا تو حرج کیا ہوا یہ حکم بھی تو عقلیات میں سے ہو سکتا ہے
ایک شخص گوہ کھایا کرتا تھا اور منع کرنے پر کہا کرتا تھا کہ جب یہ میرے ہی
اندر تھا تو پھر اگر میرے ہی اندر چلا جاوے تو اس میں کیا حرج ہے تو ان چیزوں
کو عقل کے فتوی سے جائز کہا جاوے گا ایسے ہی یہ آج کل کے عقلا ہیں غرض

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक ज़िना करना जायज़ है

नवाब सिद्दीक हसन भोपाली ने तो चूतड़ और रानो वगैरह से आनंद लेने की इजाज़त दी है मगर इसके बेटे मौलवी नूरुल

हसन भोपाली ने तो मजबूरन ज़िना (व्यभिचार) को भी जायज़ क़रार दे दिया है जैसा कि लिखा है "जो शख्स ज़िना पर मजबूर किया जाये इस पर हद वाजिब नहीं क्यूंकि अहकामे शर इया इख़्तियार से मुक़य्यद है"| (अरफुल जावी पृष्ट २१५)

नफ़स का पुजारियों ने तो ग़ैर मुक़द्द्लिदीन मर्द और औरतों के लिए सारे दरवाजे खोल दिए जैसा कि मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब नूरुल हसन खान लिखते हैं: “जिनको ज़िना पर मजबूर किया जाये उसको ज़िना करना जायज़ है और कोई हद वाजिब नहीं | महिला की मजबूरी तो ज़ाहिर है | पुरूष भी अगर कहे कि मेरा इरादा ना था मुझे कुवते शहवत (Sexual Excitation) ने मजबूर किया तो मान लिया जाएगा अगरचे इरादा ज़िना का न हो” | (अर्फुल जादी पृष्ट २०६)



۲۰۶

عرف الجادي
من
جنان هدي الهادي
طبع في المطبع الصديقي الكائن
في بهوپال المحمية المحروسة
القدسية
١٣٠١

माँ, बहन, और बेटी से जिना की इजाज़त

मौलवी वहिदुज्ज़मा ने वहाबियों के लिए अपनी माँ, बहन, बेटी से जिना की खुली इजाज़त दे दी है जैसा कि मौलवी साहब लिखते हैं: अगर किसी ने मुहर्रीमत (माँ, बहन, बेटी अत्यादी) से ज़िना किया तो उसको हक ए महर की मिस्ल अदा करना पड़ेगा |(नुज़ूलुल अबरार भाग २ पृष्ट ३१)

ससुर का बहु से जिमा करना

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी वहिदुज्ज़मा ने लिखा है कि और इसी तरह कोई शख्स ने अपने बेटे की बीवी (बहु) से जिमा (संभोग) किया तो उसके बेटे पर औरत हराम नहीं होगी| (नुज़ूलुल अबरार भाग २ पृष्ट २८)

ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवियों ने माँ, बहन, बेटी और बहु अत्यादी से जिमा (संभोग) की जो इजाजत दी है आप ने पढ़ ली है यह सिलसिला यहाँ तक ही नहीं बल्कि अपनी सास से भी जिमा की इजाज़त इन लफ्जों में दे रखी है |

सास से जिमा

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी वहिदुज्ज़मा ने लिखा है कि और अगर इसी तरह कोई शख्स ने अपने सास से जिमा (संभोग) किया तो उस पर उसकी औरत हराम नहीं होती | (नुज़ूलुल अबरार भाग २ पृष्ट २८)

सगी नानी और दादी से निकाह जायज़ है

मौलाना सनानुल्लाह अमृतसरी ने एक सवाल के जवाब में दादी, और नानी के साथ निकाह करने को मुबह और जायज़ कर दिया और सौतीले भांजा की पोती से निकाह जायज़ कर दिया | (किताब अल तौहीद व अल सुन्नाह पृष्ट २७३ / अख़बार अलहे हदीस अमृतसर पृष्ट ४, ११ रमज़ान १३२८ हिजरी) अलाम खिल्किल्लाह पृष्ट ३, १०६)

सौतेली माँ से निकाह

इमाम अल वहाबिया सनाउल्लाह अमृतसरी ने अख़बार ए अहले हदीस में एक प्रशन का उत्तर देते हुए सौतीली माँ से निकाह जायज़ क़रार दिया लिखते हैं कि मेरे नाकिस इल्म में इसकी हुरमत की कोई दलील नहीं मिलती| (अख़बार ए अहले हदीस पृष्ट १२, १४ अप्रैल १९१६)

साली से ज़िना

इमामुल वहाबिया मौलवी सनाउल्लाह ने सवाल का जवाब दे हुए लिखते है कि साली से ज़िना करने से मन्कूहा (बीवी) हरम नहीं होती" | (अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट १०, २६ जनवरी १९१२)

आप हज़रात वहाबी अकाबिर की नफ़स परस्ती और शहवत ए ज़नी के इन अजीब अंदाज़ से बहुत हैरान होते होंगे | हैरानगी कि कोई बात नहीं दर हक़ीक़त वहाबी अकाबिर ने

अपनी किताबों में कुछ ऐसे मसाइल की तालीम और तरगीब अपने वहाबियों को दी है जिस से नफसानी जज़्बात उभरते हैं|

मुतआ (अस्थायी विवाह) जाएज़ है

वहाबियों के सबसे बड़ा इमाम मौलवी वहीदुज्जामा ने लिखा है कि "मुतआ (कुछ समय के लिए औरत से निकाह करना) की अबाहत (जाएज़ होना कुरान की कतई आयात से साबित है"| (नुज़ुलुल अबरार भाग २ पृष्ट ३३)

वहाबिया नज्दिया के इमामिया पार्टी मुखिया मौलवी अब्दुल वह्हाब और अब्दुस्सत्तार देहलवी के नजदीक मुतआ जाएज़ है| (अख़बार मुहम्मदी दिल्ली पृष्ट १५, १ जनवरी १९४१ ईस्वी)

जिस फ़िरका के मसाइल बे हयाई और घिनौनी हो उस फ़िरका के बारे में आप खुद ही ज़रा सोच लें |

सहीफ़ा अहले हदीस में है कि .....

المتعة حرام الی یوم القیامة

मुतआ कियामत तक हराम है |

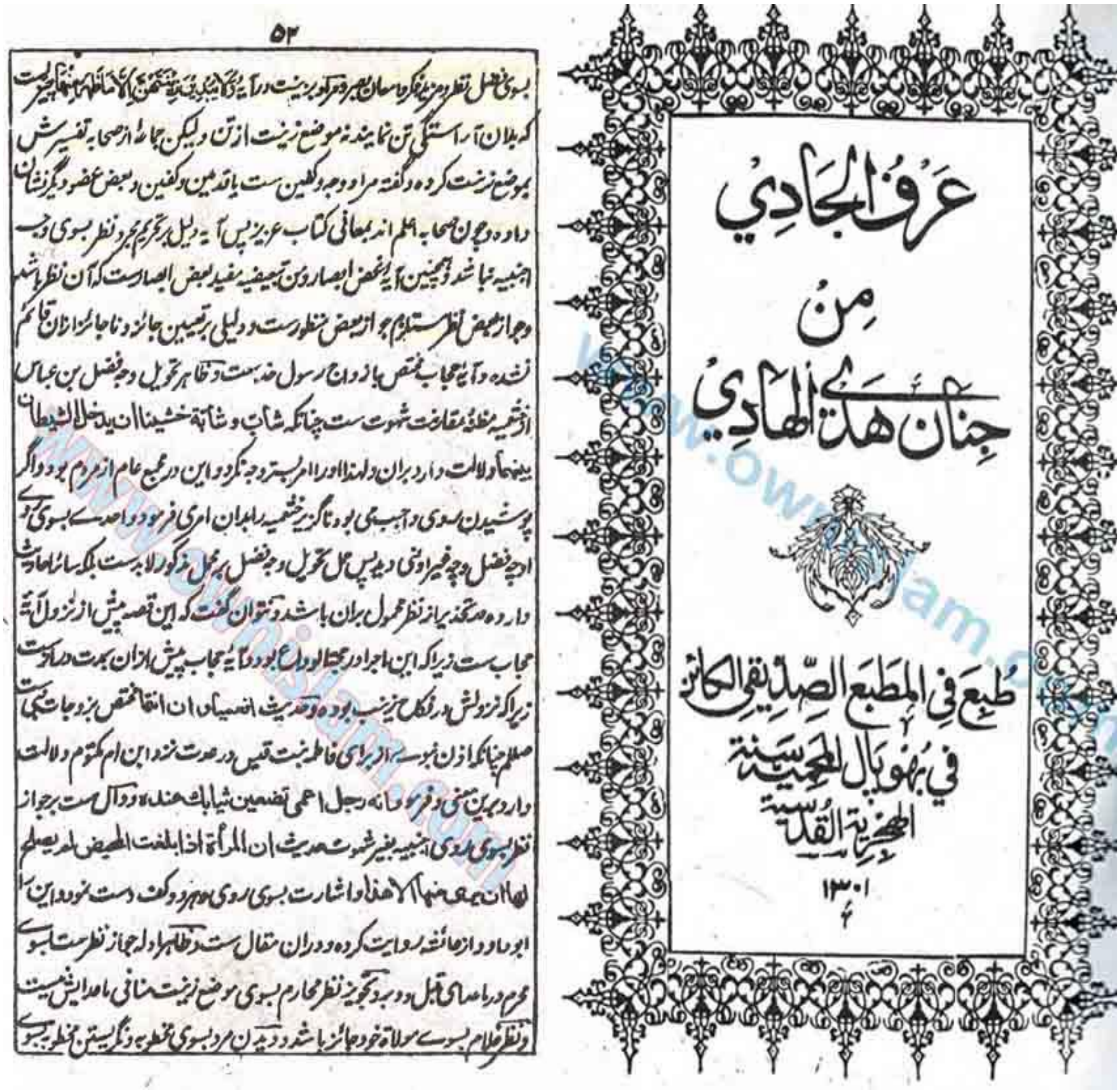
(सहिफा अहले हदीस कराची १६ सफ़र १३८७ हिजरी)

शिया लड़की के साथ निकाह

देवबंदियों के मुफ़्ती और इमाम मौलवी किफायतुल्लाह देहलवी ने लिखा कि शिया लड़की के साथ सुन्नी मर्द का निकाह दुरुस्त है | (किफ़ायतुल मुफ़्ती भाग १ पृष्ट २७८)

ग़ैर मुकल्लीदीन का
माँ, बहन, बेटी का जिस्म (शरीर) देखना

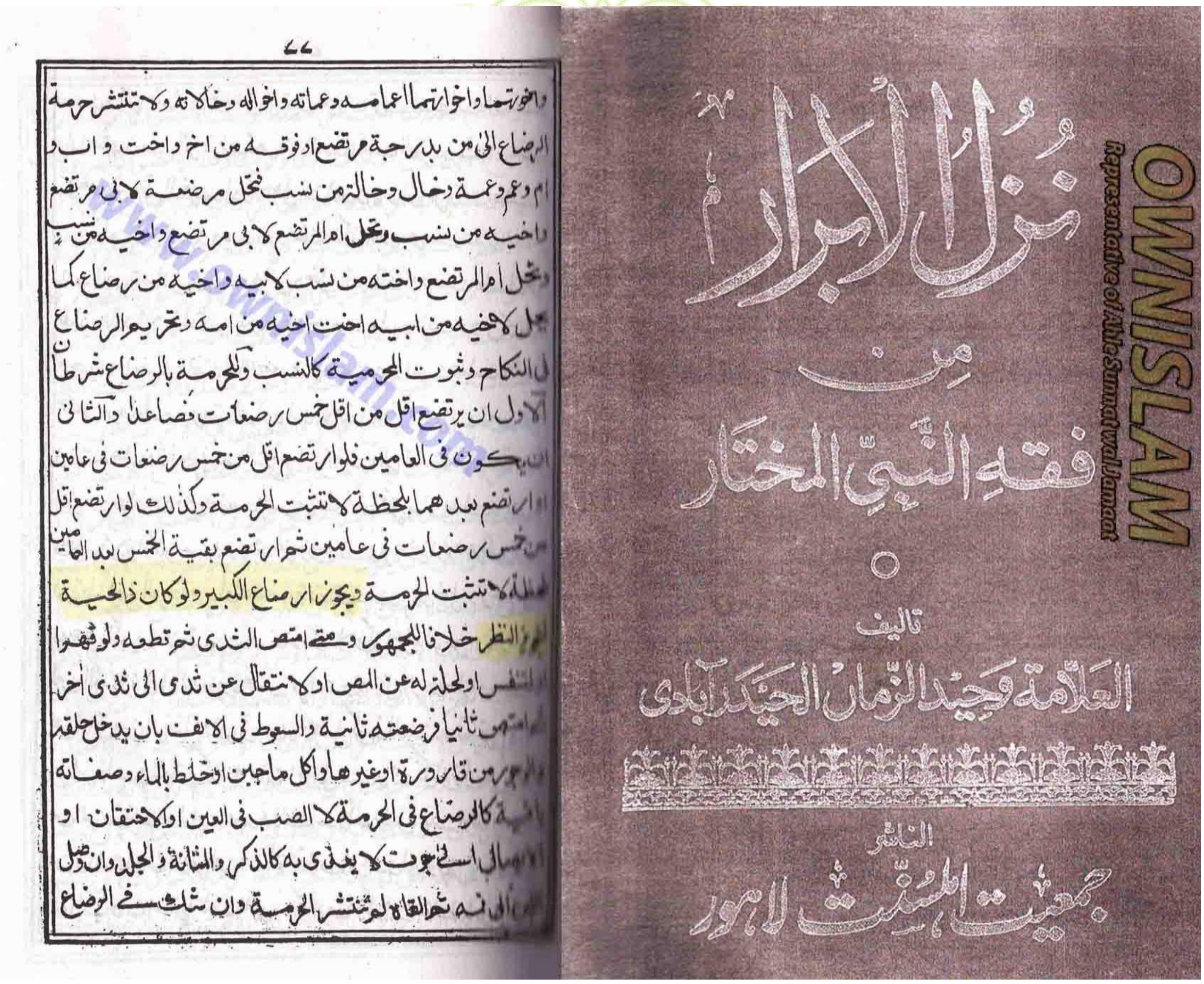
मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब नूरुल हसन खान लिखते हैं: "माँ, बहन, बेटी वग़ैरह कि क़बलो दुबुर (योनि एवं चूतड़) के सिवा पूरा बदन देखना जायज़ है" (अर्फुल जादी पृष्ट ५२)



टिप्पणी: यह मसाइल पढ़कर हमें शर्म आती है ना जाने ग़ैर मुक़ल्लिदीन इन पर कैसे अमल करते होंगे |

ग़ैर मुक़ल्लिद महिला का
दाढ़ी वाले पुरूष को दूध पिलाना

वहाबियों के मुफस्सिर और मुहद्दिस मौलवी वहीदुल्ज़्ज़मा हैदरबादी ने लिखा हैं:"जायज़ है कि महिला ग़ैर पुरूष को अपना दूध छातियों से पिलाये अगरचे वह पुरूष दाढ़ी वाला होता कि एक दुसरे को देखना जायज़ हो जाये"| (नुज़ुलुल अबरार भाग २ पृष्ट ७७)



٧٧

واخوتهما واخواتهما اعمامه وعماته واخواله وخالاته ولا تنتشر حرمة
الرضاع الی من بدرجة مرتضع او فوقه من اخ واخت واب و
ام وعم وعمة وخال وخالة من نسب فتحل مرضعة لابی مرتضع
واخیه من نسب وتحل ام المرتضع لابی مرتضع واخیه من نسب
وتحل ام المرتضع واخته من نسب لابیه واخیه من رضاع کما
یحل لاخیه من ابیه اخت اخیه من امه وتحریم الرضاع
فی النکاح وثبوت المحرمیة کالنسب وللحرمة بالرضاع شرطان
الاول ان یرتضع اقل من خمس رضعات فصاعدا والثانی
ان یکون فی العامین فلو ارتضع اقل من خمس رضعات فی عامین
او ارتضع بعدهما بلحظة لا تثبت الحرمة وکذلک لو ارتضع اقل
من خمس رضعات فی عامین ثم ارتضع بقیة الخمس بعد العامین
لا تثبت الحرمة ویجوز ارضاع الکبیر ولو کان ذا لحیة
لجواز النظر خلافا للجمهور ومتی امتص الثدی ثم قطعه ولو قهرا
او لتنفس او لحلته له عن المص او لانتقال عن ثدی الی ثدی آخر
ثم امتص ثانیا فرضعته ثانیة والسعوط فی الانف بان یدخل حلقه
والوجور من قارورة او غیرها واکل ماجبن او خلط بالماء وصفاته
الباقیة کالرضاع فی الحرمة لا الصب فی العین او الاحتقان او
الایصال الی جوف لا یغتذی به کالذکر والمثانة والجلد وان وصل
الی فمه ثم القاه لم تنتشر الحرمة وان شک فی الرضاع

वहाबियों के मुजद्दिद काजी शोकानी ने लिखा है जाइज़ है दूध पिलाना बड़ी उम्र वाले को अगरचे दाढ़ी रखता हो वास्ते जवाज़ नज़र के | (अल दररुल बिह पृष्ट ३४)

टिप्पणी: हो सकता हो कि वहाबी मौलवियों ने इसलिए औरतों का ग़ैर मर्दों को देखना जायज़ क़रार दिया है ताकि ग़ैर मुक़ल्लिदीन औरतें अपनी पसंद के मर्दों को दूध पिला लें और इमामुल वहाबिया सनाउल्लाह अमृतसरी ने भी इसलिए औरतों को मैक अप करने और सरों के बालों पर फूल झाड़ियाँ बनाने की इजाज़त दी है ताकि अपनी बनावट से मर्दों को क़ाबू कर लें | याद रहे कि यह मसाइल क़ुरान व हदीस के नाम पर बयान किया जा रहा है |

औरत के लिए ग़ैर मर्द को देखना

वहाबियों के मुफस्सिर और मुहद्दिस मौलवी वहीदुल्ज़्ज़मा ने लिखा हैं:" और औरत का ग़ैर आदमीयों को देखना जायज़ है और हदीस कि नबी पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) ने अपनी अज्वाज ए मुतहहरात (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) को फ़रमाया कि अब्दुल्लाह बिन मक्तूम तो नाबीना (आँखों में रौशनी न होना) है क्या तुम भी नाबीनी हो | यह नबी पाक (صلی اللہ علیہ وسلم)की अज्वाज ए मुतहहरात (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) के लिए ही ख़ास था |" (नुज़ूलुल अबरार भाग २ पृष्ट ७४)

वहाबी मौलवी ने वहाबी औरतों को अजनबी और ग़ैर मुहरिम मुर्दों को देखने और उनका नज़ारा करने की इजाज़त हदीस ए मुस्तफ़ा (صلی اللہ علیہ وسلم) की किस मक्कारी से मुखालिफत करते हुए दी है और शैतान मरदूद की शैतानियत की कैसे पुर ज़ोर समर्थन की है |

हज़रत अली(کرم اللہ وجہہ الکریم) नबी करीम (صلی اللہ علیہ وسلم) की खिदमत में हाज़िर हैं कि आप ने सब से दरयाफ्त फ़रमाया कि बतलाओ

औरत के लिए कौन सी बात सबसे बहतर (अच्छा) है ? इस पर तमाम सहाबा खामूश रहे और किसी ने कोई जवाब न दिया हज़रत अली (کرم اللہ وجہہ الکریم) फरमाते हैं कि मैं ने वापस आकर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) से पूछा कि औरतों के लिए सब से बहतर क्या बात है ?

उन्हों (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) ने फ़रमाया कि न वह ग़ैर मर्दों को देखे और न ग़ैर मर्द उन्हें देखें |

मौला अली मुश्किल कुशा (کرم اللہ وجہہ الکریم) ने यह जवाब हुज़ूर से अर्ज किया तो हुज़ूर ने खुश हो कर इर्शाद फ़रमाया कि वह (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) मेरे दिल के टुकड़े हैं | (दार अल क़ुतनी)

सह्हा ए सित्ता में से तिर्मज़ी शरीफ और अबू दाऊद शरीफ में हदीस शरीफ है कि कुछ उम्माहातुल मोमीन (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) हजूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की खिदमत में थीं | उसी वक़्त इब्न ए मक्तूम आए | हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) ने अज्वाज ए मुतहहरात (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) को पर्दा का हुक्म फ़रमाया उन्हों ने अर्ज की कि वह तो नाबीना हैं फ़रमाया तुम तो ना बीना नहीं हो |

मौलवी नवाब सिद्दीक हसन भोपाली ने लिखा है कि पर्दा वाली आयत ख़ास नबी पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) की अज्वाज ए मुतहहरात (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) के बारे में वारिद (नाज़िल हुई है) उम्मत की दोसरी औरतों के वास्ते नहीं है | (बुन्यनुल मसूस पृष्ट १६८)

खुद बदलते नहीं क़ुरान बदल देते हैं

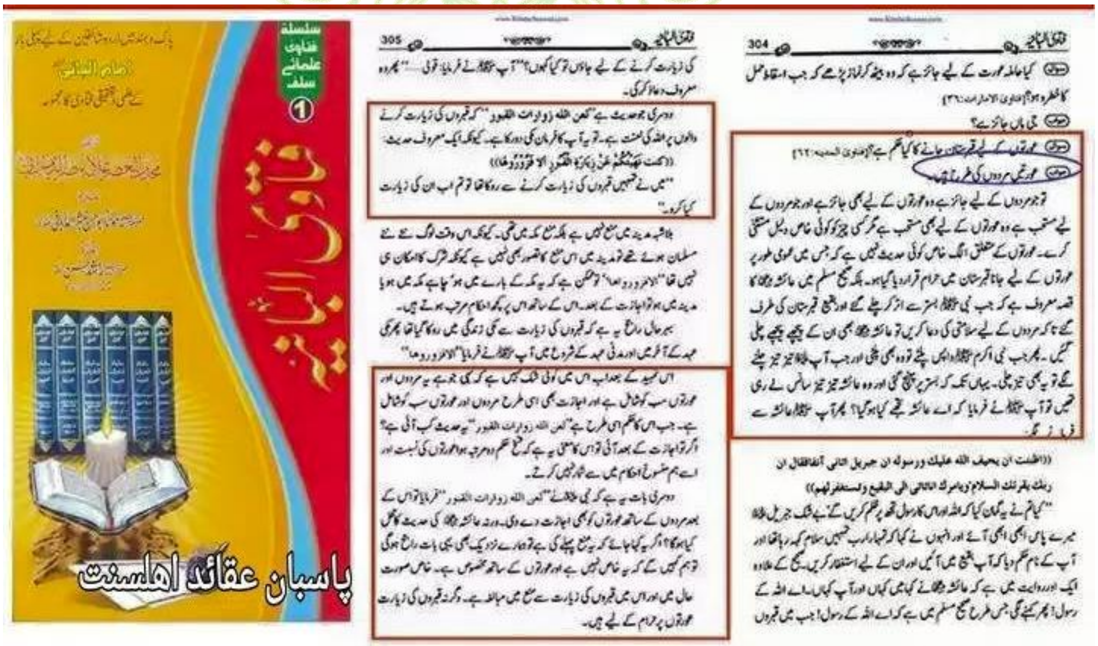
बे पर्दगी की इजाज़त

मौलवी अशरफ अली थानवी ने लिखा है कि एक अंग्रेज़ ने सवाल किया था बमअ अपनी अहलिया (अपनी बीवी के साथ) के मुसलमान हो गया था कि हम हिंदुस्तान आना चाहते हैं और हमारी मेम (बीवी) भी हमराह (साथ) होगी और वह ना पर्दा करेगी | मैं ने लिख दिया आप के लिए इजाज़त है | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ८ पृष्ट २५६)

देवबंदी मुबल्लिगे आज़म की बीवी फ़ैशन के लिए ब्यूटी पार्लर में

मारूफ देवबंदी मुबल्लिग मौलवी तारिक जमील की बीवी और भाभी फ़ैशन के लिए एक ब्यूटी पार्लर पर गयीं वहां पर उनके ज़ेवेरात चोरी हो गई | (रोजनामा नवाए वक़्त लाहोर २५ जुलाई २००७ - रोजनामा जंग लाहोर २८ जुलाई २००७)

नज़दी वहाबिन औरतें क़ब्रुस्तान जाया करेंगी (फ़तवा अल बानिया पृष्ट ३०४-३०५)



ग़ैर मुक़ल्लिदीन का
अपनी बेटी से निकाह (शादी)

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मौलवी वहिदुज्ज़मा ने लिखा है कि और अगर किसी औरत से जिना किया हो तो उस मर्द के लिए मज्नियाँ की माँ और बेटी जाएज़ है | (नुज़ूलुल अबरार भाग २ पृष्ट २१)

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब नूरुल हसन खान लिखते हैं: "अगर किसी महिला से ज़ैद ने ज़िना किया और उसी से लड़की पैदा हुई तो ज़ैद को अपनी बेटी से निकाह कर सकता है | (अर्फुल जादी पृष्ट १०९)



١٠٩

عرف الجادي
من
جنان هدى الهادي

طبع في المطبع الصديقي الكائن
في بهوبال المحمية سنة
الهجرية القدسية
١٣٠١
ه

ग़ैर मुक़ल्लिद पुरूष के लिए चार से अधीक शादीयों की इजाज़त

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब सिद्दीक हसन खान लिखते हैं: "चार की कोई हद नहीं (ग़ैर मुक्लिलद मर्द) जितनी औरतें चाहे निकाह में रख सकता है" | (ज़फरुल अमानी पृष्ट १४१/ (अर्फुल जादी पृष्ट ११५)

भारती औरतें हूरें हैं

देवबंदी वहाबी के मौलवी अशरफ अली थानवी ने लिखा है कि "मैं तो कहा करता हूँ कि हिन्दुस्तानी औरतें हूरें हैं (अफाजातुल यौमिया भाग ४ पृष्ट २२०)

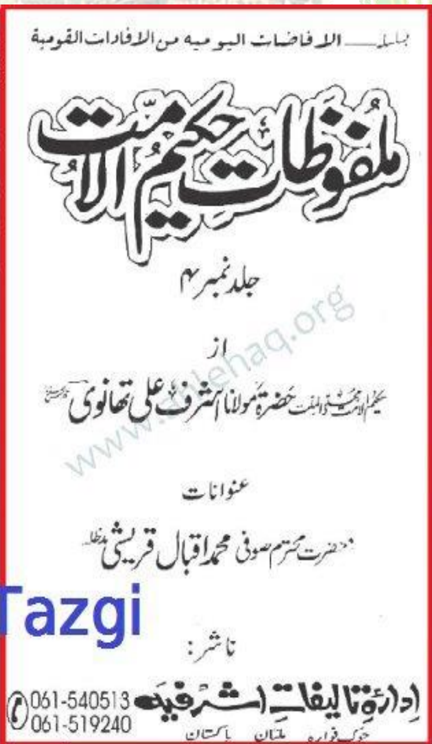


٢٢٠ ملفوظات حکیم الامت جلد 4

کہ دوسرا سمجھ نہ سکے مگر بات یہ ہے اجزاء کلام کی طرف توجہ نہیں کرتے بس یہ ہے ساری خرابی۔

ریل میں عورتوں کے ساتھ ہونے سے پریشانی

(ملفوظ ٢٩٥) ایک مولوی صاحب عورتوں کا سفر ریل میں ساتھ ہونا اور اس پر پریشانی اور تکلیف کا ہونا بیان کر رہے تھے حضرت والا نے فرمایا کہ میں تو ریل کو زندہ جنازہ کہا کرتا ہوں اور عورتوں کو زندہ اسباب مگر مردہ اسباب سے زیادہ تکلیف دہ۔ مردہ اسباب کو قلی نوکر کے سر پر رکھ سکتے ہیں مگر اس زندہ کو کیا کرے اسی سلسلہ میں فرمایا کہ یہ ہندوستان کی عورتیں جنت کی حوریں ہیں یہ ان میں ایک خاص بات ہے کہ اگر خاوند بیوی کو چھوڑ کر چلا جائے تو جس کونے میں چھوڑ کر جائے گا دس برس کے بعد پھر اسی کونے میں بیٹھی ملے گی۔ یہ اثر ہے۔ صفت قاصرات الطرف۔ کا جو حوروں کے باب میں وارد ہے یہ ضرور ہے کہ ان میں سلیقہ بہت کم ہے مگر عفیف ہونا اتنی بڑی صفت ہے کہ اس کے سامنے ان کا پھوڑ پنا کچھ بھی اثر نہیں رکھتا میں تو یہ بھی کہا کرتا ہوں کہ پھوڑ عورت عفیف ضرور ہوتی ہے مگر یہ ضرور نہیں کہ ہر عفیف پھوڑ بھی ہو پس اگر عورت کا پھوڑ پن ناگوار ہو تو اس کی عفت پر نظر کر کے اس آیت کو پڑھ لیا کرو حق تعالیٰ فرماتے ہیں: فان کرھتموھن فعسیٰ ان تکرھوا شیئا ویجعل اللہ فیہ خیرا کثیرا۔ یعنی ممکن ہے کہ ایک چیز تم کو ناپسند ہو اور اللہ تعالیٰ اسی میں خیر کثیر رکھ دیں یہ ہی کیا تھوڑی بات ہے کہ وہ بیبیاں سوائے ہمارے کسی پر نظر نہیں کرتیں حضرت باستثناء شاذ و نادر عورت کو وسوسہ بھی نہیں ہوتا غیر مردوں کا ایک مولوی صاحب نے اپنے ایک خادم سے اپنا ایک واقعہ بیان کیا اس خادم نے مجھ سے روایت کی کہ میں نے ایک بہلی کا کرایہ کیا جب بہلی شہر کے کنارے پر پہنچی تو وہاں اس بہلی والے کا مکان تھا وہاں اس نے بہلی کو روکا اس کی بیوی اس کو کھانا دینے آئی وہ بہلی بان اس قدر بدشکل تھا کہ شاید ہی کوئی اور دوسرا ایسا ہو اور وہ ایسی حسین کہ شاید ہی کوئی اور دوسری ہو مگر میں اس وقت اس کو دیکھ رہا تھا کہ یہ میری طرف بھی نظر کرتی ہے یا نہیں مگر اس نے ایک نظر بھی اس طرف نہیں دیکھا اور شوہر کو کھانا دے کر چلی گئی اسی کو فرماتے ہیں۔







नाम निहाद हूरूं से ज़िना

एक हाफिज़ जी अंधे थे हरीस थे उन्हों ने कहीं सुन लिया कि ख़ुदा ए तआला ने जन्नत में मोमिनीन के लिए हूरें पैदा की हैं बस हर वक़्त वह (हाफिज़ जी) दुआ किया करते थे कि ए अल्लाह हूरें भेज ! हूरें भेज ! बाज़ारी औरतें बड़ी शरीर (बद-तमीज) होती हैं | कहीं उन्होंने सुन लिया, (उन बाज़ारी औरतों ने) आपस में मशवरा किया कि चलो (हम) हाफिज़ को हूरों से तौबा करा दें | सब जमा हो के आयीं, आप (हाफिज़ साहब) ने खटका सुन कर पुछा कौन ? औरतों ने कहा हूर | (हाफिज़ जी) बड़े खुश हुए कि बहुत दिनों में मेरी दुआ कुबूल हुई | खैर मुंह काला किया (ज़िना किया) | दूसरी (बाज़ारी औरत) आई पूछा कौन हूर कहने लगी फिर सही | उस से भी मुंह काला किया | गर्ज़ बहुत सी (वह औरतें) थी | उनका भी कई वर्ष का जोश था | आख़िर कहाँ तक वह पूरा हो चूका तो और (औरत) आई पूछा कौन, कहा हूर | गाली देके (हाफिज़ जी) कहने लगे | सब हूरें मेरी ही किस्मत में आ गयीं | सो हज़रत जिस तरह से वह हूर से घबरा गए उस तरह तुम नूर से घबराते | (बरकाते रमज़ान मश्मूला खुत्बाते हकीमुल उम्मत भाग १६, पृष्ट २४८ -हफ्ते अख्तर ६/१०५)

शर्म गाह (योनि) का महल (स्थान) काइम (बरक़रार) रखने का नुस्खा

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के शैखेकुल फिलकुल मियां नजीर हुसैन दहलवी लिखेते हैं: "महिला को ज़ेरे नाफ बाल उसतुरे से साफ़

करना चाहिए उखाड़ ने से महल (योनि) ढीला हो जाता है"| (फ़तवा नज़ीरिया भाग ४ पृष्ट ५२६)

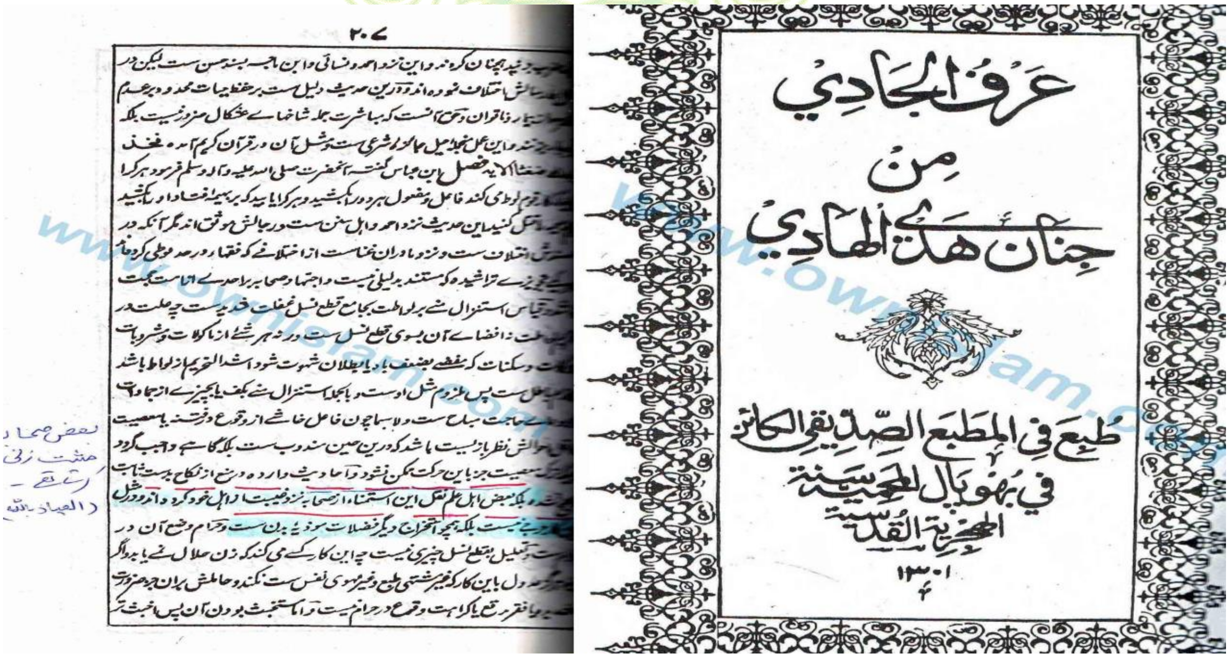
मुश्तजनी (हस्तमैथुन) जायज़ है

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब नूरुल हसन खान लिखते हैं: अगर गुनाह से बचना हो तो मुश्तज़नी (हस्तमैथुन) वजिब है | (अर्फ़ुल जादी पृष्ट २०७)

मौलवी वहीदुज्जामा ने भी यही लिखा है कि कुछ लोगो ने मुश्तज़नी (हस्तमैथुन) को जाएज़ क़रार दिया है और नबी पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) का जो इर्शाद मुबारक मुश्तज़नी (हस्तमैथुन) की वईद और मुमानिअत में है उस को ज़-इफ क़रार दिया है| (नुजूलुल अबरार)

टिप्पणी: और आगे जो लिखा है वह बात क़ारिऐन ज़रा दिल थम के पढ़िये

"और बअज़ (कुछ) सहाबा (علیہم الرضوان) भी किया करते थे"| (मुआज़ल्ला) (अर्फ़ुल जादी पृष्ट २०७)


٢٠٧

عرف الجادي من جنان هدى الهادي

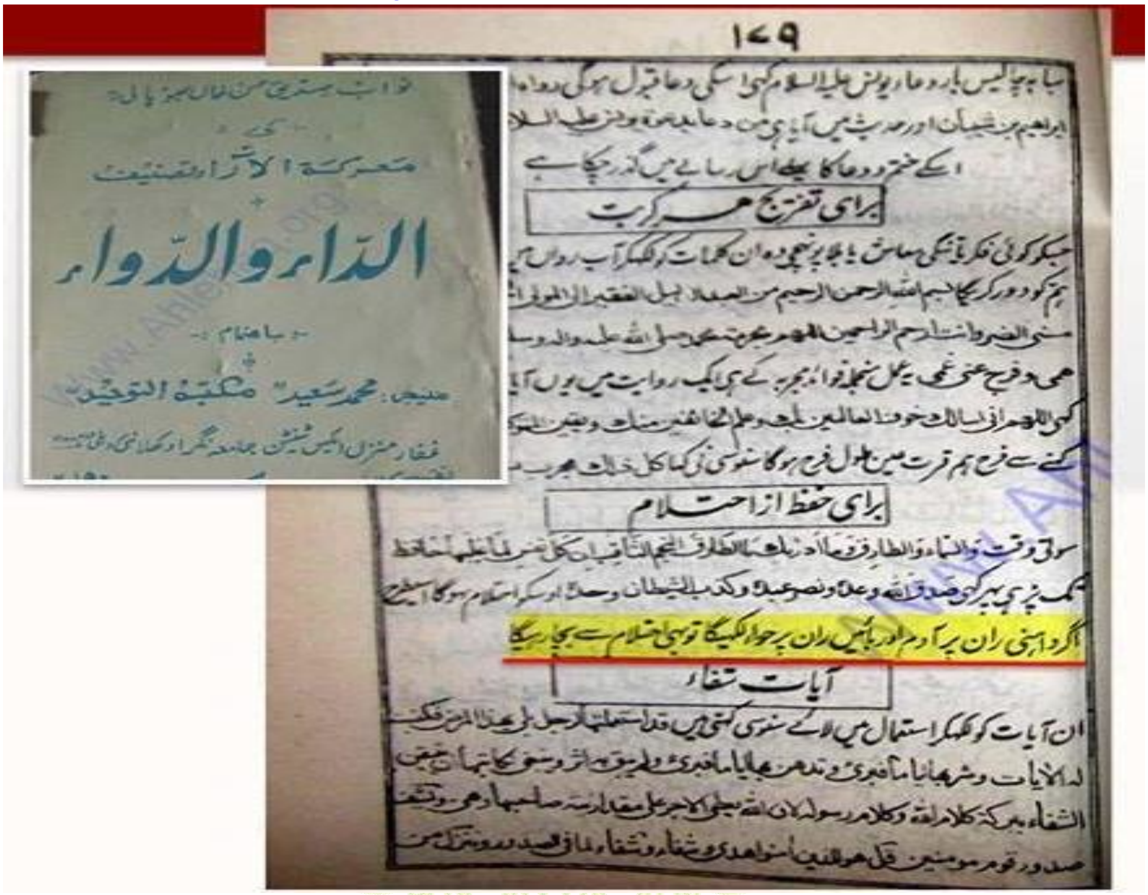
طبع في المطبع الصديقي الكائن في بهوپال المحمية المحروسة القدسية

١٣٠١

एहतिलाम रोकने की तहकीक

ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी नवाब सिद्दीक हसन भोपाली लिखते हैं" अगर दाएँ रान पर आदम का नाम और बाएं रान पर हव्वा का नाम लिख दिया जाये तो इहतिलाम नहीं होता |

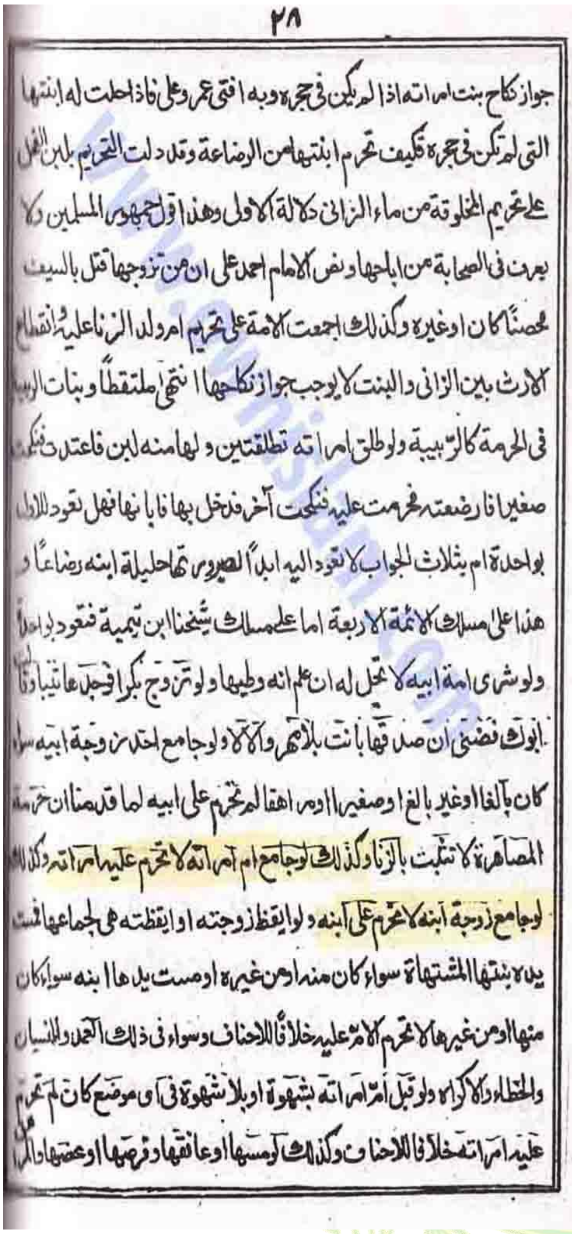
(अल-दा ए वद-दाए पृष्ट १७९)



एक महिला

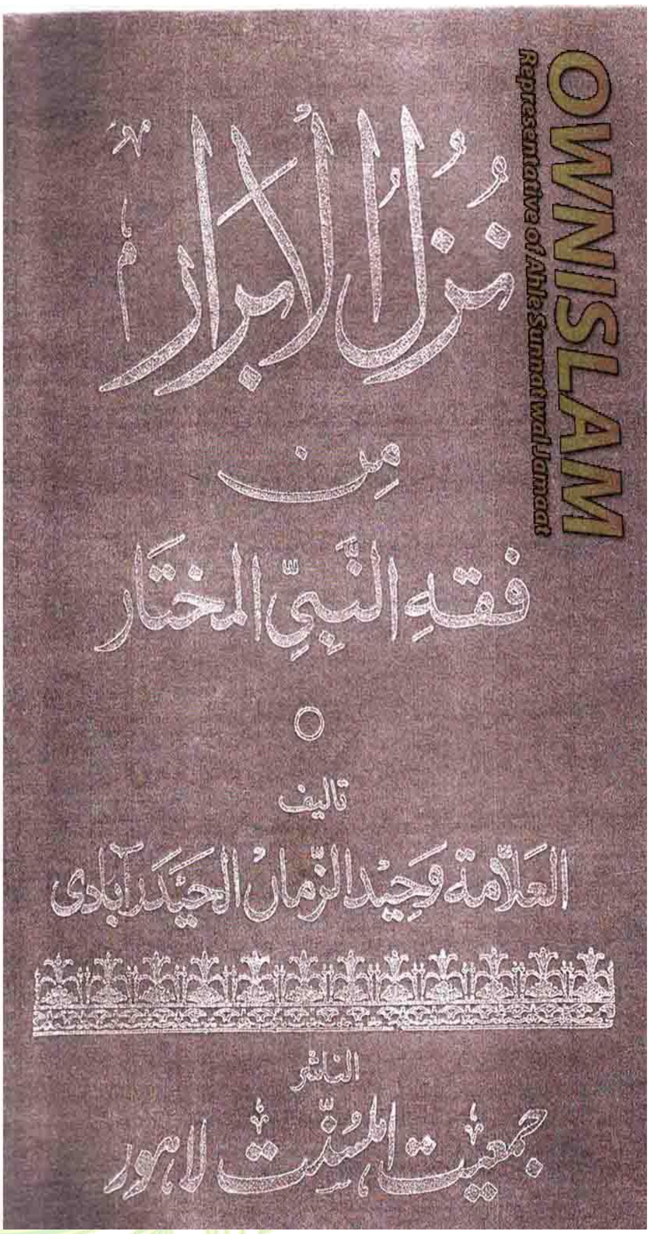
पिता एवं पुत्र के दोनों के लिए हलाल

ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी वहिदुज्ज़मा लिखते हैं: "अगर बेटे ने एक महिला से ज़िना किया तो यह महिला बाप के लिए हलाल है इसी तरह इसके बरअक्स (विपरीत) भी" | (नुज़ुलुल अबरार भाग २ पृष्ट २८)



٢٨

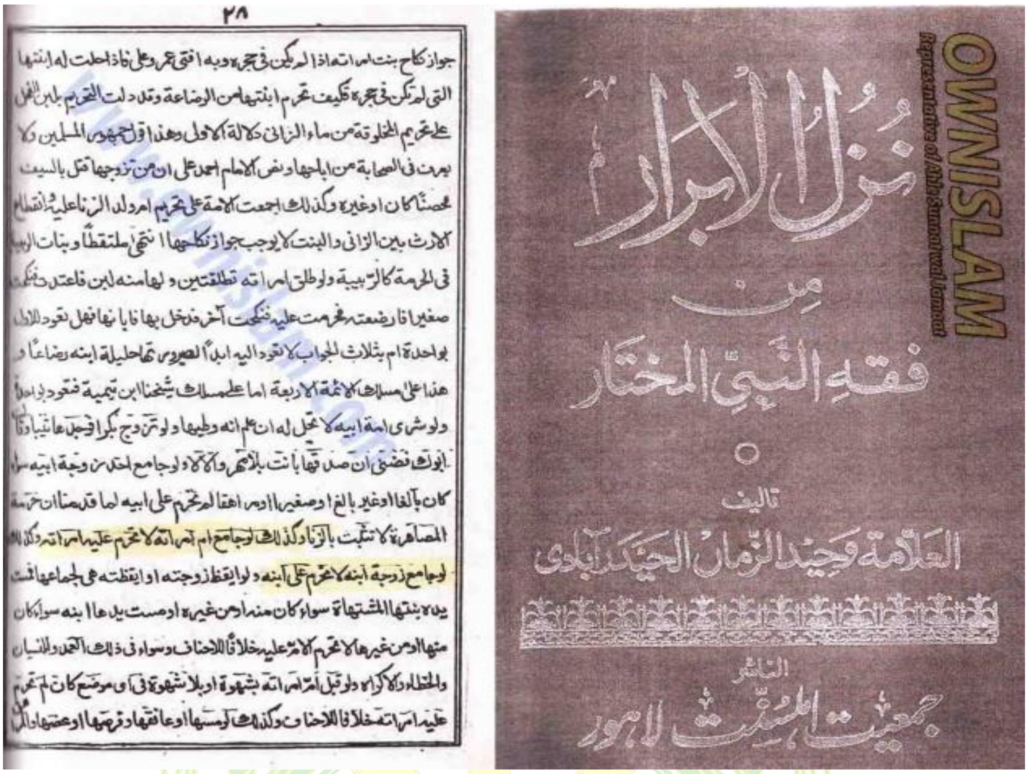
جواز نكاح بنت امرأته اذا لم يكن في حجره وبه افتى عمر وعلي فاذا حلت له ابنتها
التي لم تكن في حجره فكيف تحرم ابنتها من الرضاعة وقد دلت التحريم بلبن الفحل
على تحريم المخلوقة من ماء الزاني دلالة الاولى وهذا قول جمهور المسلمين ولا
يعرف في الصحابة من اباحها ونص الامام احمد على ان من تزوجها قتل بالسيف
محصنا كان او غيره وكذلك اجمعت الامة على تحريم ام ولد الزنا عليه وانقطاع
الارث بين الزاني والبنت لا يوجب جواز نكاحها انتهى ملتقطا وبنات الربيب
في الحرمة كالربيبة ولو طلق امرأته تطليقتين ولها منه لبن فاعتدت فنكحت
صغيرا فارضعته فحرمت عليه فنكحت آخر فدخل بها فابانها فهل تعود للاول
بواحدة ام بثلاث الجواب لا تعود اليه ابدا لصيرورتها حليلة ابنه رضاعا و
هذا على مسلك الائمة الاربعة اما على مسلك شيخنا ابن تيمية فتعود بواحدة
ولو شرى امة ابيه لا تحل له ان علم انه وطيها ولو تزوج بكرا فوجدها ثيبا وقال
ابوك فضني ان صدقها بانت بلا مهر والا لا ولو جامع احد زوجة ابيه سواء
كان بالغا او غير بالغ او صغيرا او مراهقا لم تحرم على ابيه لما قدمنا ان حرمة
المصاهرة لا تثبت بالزنا وكذلك لو جامع ام امرأته لا تحرم عليه امرأته وكذا
لو جامع زوجة ابنه لا تحرم على ابنه ولو ايقظ زوجته او ايقظته هي لجماعها فمست
يده بنتها المشتهاة سواء كان منه او من غيره او مست يدها ابنه سواء كان
منها او من غيرها لا تحرم الام عليه خلافا للاحناف وسواء في ذلك العمد والنسيان
والخطاء والاكراه ولو قبل ام امرأته بشهوة او بلا شهوة في اي موضع كان لم تحرم
عليه امرأته خلافا للاحناف وكذلك لو مسها او عانقها او قرصها او عضها ...



बाप और बेटे की मुश्तरक (साझा) बीवी

अल्लामा वहिदुज़्ज़मा लिखते हैं: अगर किसी ने अपनी माँ से ज़िना किया, खाह ज़िना कर ने वाला बालिग हो या ना बालिग या क़रीबुल बुलूग, तो वह अपने खाविंद (पति) पर हराम नहीं हूई | (नुज़ुलुल अबरार भाग २ पृष्ट २८)

टिप्पणी: बहुत खूब ! निकाह और ज़िना दोनों की गाड़ी चलती रहे |



खून और क़ै वज़ू नहीं टूटता

नवाब सिद्दीक हसन भोपाली ने लिखा है कि वज़ू खून और क़ै से (अगरचे इसकी मिक़दार कितनी भी हो) नहीं टूट ता (अर्फ़ुल जावी पृष्ट १४)

बिला वज़ू और गुस्ल के क़ुरान छूना

नवाब सिद्दीक हसन भोपाली ने लिखा है कि जिस का वज़ू और गुस्ल न हो ऐसे शख्स को क़ुरान करीम का छूना जाएज़ है | (अर्फ़ुल जावी पृष्ट १५)

ज़िना की औलाद बांटने का तरीका

ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी वहिदुज्ज़मा ने लिखा है अल्लामा वहिदुज्ज़मा लिखते हैं: एक महिला (ग़ैर मुक़ल्लिदह) से तीन

(ग़ैर मुक़ल्लिद) बारी बारी सुहबत (सेक्स) करते रहे और इन तीनों की सुहबत से लड़का पैदा हुआ तो लड़के पर कुरआ अंदाजी (आकर्षित कार्य) होगी | जिसके नाम कुरआ (आकर्षित) निकल आया उसको बेटा मिल जायेगा और बाक़ी दो को यह बेटा लेने वाला तिहाई दियत (देयधन) देगा | (नुज़ुलुल अबरार भाग २ पृष्ट ७५)

गर्भशय का चित्र

हाफिज अब्दुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं: रहम मसाना (पिशाब की थैली / मुत्रशय) और रोदा मुस्तक़ीम (पखाना निकलने की अंतड़ी) के दरमियान पुट्ठे की तरह सादा रंग का गर्दन वाला एक अज़व (अंग) है जिस की शक्ल क़रीब क़रीब उलटी सुराही की बतलाया करते है मगर पूरा नक्शा उसका कुदरत ने खुद पुरूष के अन्दर रखा है | पुरूष अपनी आलत (लिंग) को उठाकर पैरूं के साथ लगा ले तो आलत मअ खुस्सितीने रहम का पूरा चित्र है"| (तंज़ीम यकुम मई १९३२ पृष्ट ६ कालम नम्बर १)

टिप्पणी : ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी सनाउल्लाह अम्त्रितसरी इस पर टिप्पणी करते हैं "चित्र बना देते तो शायद लाभ होता" |

औरत की शर्मगाह कैसी होती है ???

एक बार भरे मजमा में हज़रत (गंगोही) की किसी तक़रीर पर एक नो उम्र दिहाती बे तकल्लुफ पूछ बैठा कि हज़रत जी औरत की शर्मगाह कैसी होती है ? अल्लाह रे तालीम, सब हाज़िरीन ने गर्दनें झुका ली मगर आप मुतलक़ चीं ब चीं ना हुए बल्कि बे

साख्ता फ़रमाया कि जैसे गेहूं का दाना | (तज्किरतुर रशीद भाग २ पृष्ट १००)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के लिए
बेहतरीन महिला

वहाबियों के मशहूर व मारूफ मौलवी वहिदुज्ज़मा ने लिखा है : "ग़ैर मुक़ल्लिदीन के लिए (बहतर महिला वह है जिसकी फुर्ज (योनि) तंग हो और शहवत (सेक्सी) के मारे दांत रगड़ रही हो और जमाअ (संभोग / हमबिस्तरी) कराते समय करवट से लेटी हो" | (लुगातुल हदीस भाग ६ पृष्ट ४२८)



لغات الحدیث | ا | ب | ت | ث | ج | ح | خ | د | ذ | ر | ز | س | ش | ص

نیت سے لے لے کہ اس کا مالک بن جائے تو وہ اس کو دوزخ میں لے جائے گی)-

اَلْحَرَقُ وَالْغَرَقُ وَالشَّرَقُ شَهَادَةٌ- جل جانا اور ڈوب جانا اور اچھو ہو کر مرنا شہادت ہے (یعنی شہادت کا ثواب ان موتوں میں ملے گا)-

اَلْحَرِقُ شَهِيْدٌ- آگ میں جل کر مرنے والا شہید ہے (ایک روایت میں اَلْحَرِيْقُ شَهِيْدٌ ہے معنی وہی ہیں)-

اِحْتَرَقْتُ- میں جل گیا (یعنی تباہ ہو گیا- یہ اس شخص نے کہا تھا جس نے اپنی عورت سے ظہار کیا تھا اور یہی کلمہ اس شخص نے بھی کہا تھا' جس نے رمضان میں دن کو عمداً جماع کیا تھا)-

اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنْ اُهْلِکَ قُرَيْشًا- میرے پاس وحی آئی کہ قریش کے لوگوں کو تباہ کروں-

فَلَمْ يَزَلْ يُحَرِّقُ اَعْضَاءَ هُمْ حَتّٰى اَدْخَلَهُمْ مِنَ الْبَابِ الَّذِیْ خَرَجُوْا مِنْهُ- ان کے اعضاء برابر جلاتے رہے یہاں تک کہ اسی دروازے میں داخل کر دیا جہاں سے وہ نکلے تھے-

اِنَّهُ نَهٰى عَنْ حَرْقِ النَّوَاةِ- آپؐ نے کھجور کی گٹھلی کو گھسنے سے منع فرمایا یا جلانے سے (گویا کھجور کی عظمت اور قدر کرنے کا حکم دیا یا اس وجہ سے کہ وہ گھر کے پلے ہوئے جانوروں کی خوراک ہے بھیڑ' بکری اور اونٹ وغیرہ کی)- (ایک قرأت یوں بھی ہے لَنَحْرِقَنَّهُ یعنی ہم اس گوسالہ کو گھس ڈالیں گے (سوہان سے رگڑ کر ریزہ ریزہ کر دیں گے)- مشہور قرأت لَنُحَرِّقَنَّهُ ہے یعنی اس کو جلا ڈالیں گے)-

شَرِبَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَاءَ الْمُحْرَقَ مِنَ الْخَاصِرَةِ- آنحضرت ﷺ نے کمر کے درد کی وجہ سے جوش کیا ہوا پانی پیا-

جس کی فرج تنگ ہو یا جو شہوت کے غلبہ سے دانت کو دانت پر رگڑ رہی ہو (محیط میں ہے کہ حارقہ وہ عورت جو جماع کراتے وقت کروٹ سے لیٹتی ہے- سیوطی نے ابن جوزی سے ایسا ہی نقل کیا ہے یعنی عورتوں سے کروٹ سے جماع کرو)-

حَرِيْقَةٌ- پانی کو جوش کر کے اس پر آٹا چھڑک کر بناتے ہیں-

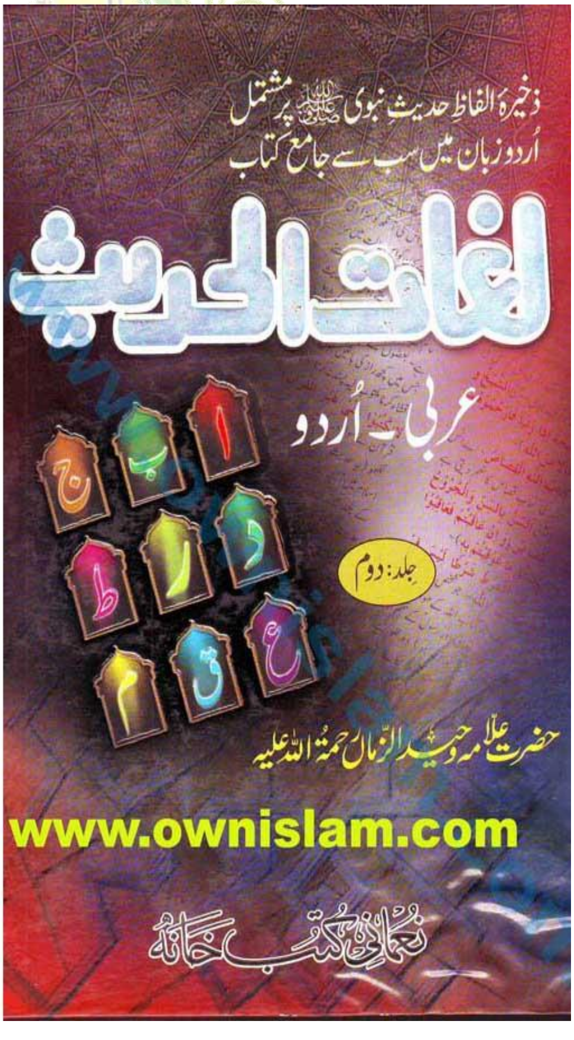
وَجَدْتُهَا حَارِقَةً طَارِقَةً فَائِقَةً- میں نے اس کو پر شہوت یا تنگ فرج' رات کو آنے والی اچھی اور بہتر پایا-

يَحْرُقُوْنَ اَنْيَابَهُمْ غَيْظًا وَّحَنَقًا- اپنے دانتوں کو غصے اور کینے سے پیستے ہیں-

دَخَلَ مَكَّةَ وَ عَلَيْهِ عِمَامَةٌ سَوْدَاءُ حَرَقَانِيَّةٌ- آنحضرتؐ جب مکہ میں داخل ہوئے (یعنی فتح مکہ کے روز) تو آپؐ ایک کالا جیسے آگ میں جلا ہوا عمامہ باندھے ہوئے تھے (زمخشری نے کہا حَرَقَانِیْ منسوب ہے حَرَق کی طرف' جس کے معنی جلنے کے ہیں- اس میں الف اور نون زیادہ کر دیا اور حَرْق اور حَرَق دونوں جلنے کے معنی میں آئے ہیں لیکن وہ خَرَق جس کے معنی سوراخ کے ہیں جو کپڑے کے پھٹنے سے پڑ جاتا ہے' وہ بفتحہ زا ہے- محیط میں ہے کہ حَرَق اس سوراخ کو کہتے ہیں جو جلنے سے کپڑے میں پڑ جاتا ہے اور خَرَق وہ سوراخ جو جلنے سے یا کپڑے کو پھٹنے سے پڑ جائے)-

اَمَّا عَدِیُّ بْنُ اَرْطَاةٍ فَقَدْ غَرَّنِیْ بِعِمَامَةِ الْحَرَقَانِيَّةِ السَّوْدَاءِ- (حضرت عمر بن عبدالعزیزؒ نے فرمایا) عدی بن ارطاۃ نے تو مجھ کو اپنے جلے ہوئے کالے عمامہ سے دھوکا دیا (میں اس کو ایک اچھا آدمی سمجھا)-

لَوْ جُعِلَ الْقُرْاٰنُ فِیْ اِهَابٍ مَّا احْتَرَقَ- اگر قرآن ایک کھال میں رکھا جائے تو وہ کھال نہیں جلے گی (مطلب یہ ہے کہ حافظ قرآن دوزخ کی آگ سے محفوظ رہے گا- بعض نے کہا



ईदेन का खुतबा

मौलवी सिद्दीक हसन भोपाली लिखते हैं कि ईदेन का खुतबा बे वज़ू जायज़ है | (बदूरुल अहिल्लह पृष्ट ७९)

नमाज़ में लड़का या लड़की को उठाना

वहाबियों की मशहूर किताब फ़िक्ह मुहम्मदिया में लिखा है कि लड़के और लड़की को नमाज़ में उठाना दुरुस्त है, बराबर है नमाज़ ए फ़र्ज हो या नफ्ली और इसी तरह जायज़ है, नमाज़ में उठाना हर जानवर पाक का, परिंदे और बकरी का" | (फ़िक्ह मुहम्मदिया भाग १ पृष्ट १४७)

कुत्ते को उठाकर नमाज़

अल्लामा वहिदुज्ज़मा लिखते हैं: कुत्ते को उठाकर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ फासिद नहीं होती | (नुज़ुलुल अबरार पृष्ट ३०)

बे नमाज़ काफ़िर व मुशरिक है

वहाबिया नज्दिया के रिसाला सहीफ़ा अहले हदीस में लिखा है कि बे नमाज़ शरीअत की रू से काफ़िर मुशरिक है |

(सहीफ़ा अहले हदीस कराची पृष्ट १९, १६ मई १९५७)

वहाबियों के मौलवी रफीक खां पसरोरी ने भी लिखा है कि "बे नमाज़ काफ़िर है " | (इस्लाह अक़ाइद पृष्ट १०८)

बे नमाज़ का जनाज़ा नहीं (सहीफ़ा अहले हदीस कराची पृष्ट २२, १५ जमाद अल सानी १३७३ हिजरी)

बे वज़ू पढ़ लिया करो

और

शराब भी पी लिया करो

देवबंदी मौलवी अपने शैख़ के बारे में लिखते है कि आप खान साहब के पास तशरीफ़ ले गए तो रंडी पास बैठी हुई थी और नशा में मस्त थे | आप ने खान साहब से फ़रमाया कि भाई खान साहब ! अगर तुम नमाज़ पढ़ लिया करो तो चार आदमी और जमा हो जाया करें और मस्जिद आबाद हो जाए | खान साहब ने कहा कि मेरे से वज़ू नहीं होता और ना यह दो बुरी आदतें छूटती हैं | आप ने फ़रमाया कि बे वज़ू पढ़ लिया करो और शराब भी पी लिया करो | (तज़किरा मशाइख देवबंद पृष्ट ८,९७ - अरवाहे सलासा पृष्ट २१६)

अफ़ीम ((Opium) इतनी खा लिया कर

हज़रत मौलाना गंगोही से एक शख्स गाँव का रहने वाला मुरीद होने आया, कहता हैं कि मैं अफ़ीम खाता हूँ | फ़रमाया अच्छा यह बतला कितनी खाता है ?

इतनी मेरे हाथ पर रख दे | चुनांचे उस ने एक गोली बना कर हाथ पर रख दी | हज़रत मने उस का एक हिस्सा तोड़ कर उस को खिला दिया कि इतनी खा लिया कर | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ४ पृष्ट ३१८)

एक देहाती आप से बैअत हुआ और अपनी देहाती ज़ुबान में अर्ज़ किया मोल्बी जी और तो सारी चीज़ें छोड़ दूंगा पर

अफ़्हीम (अफ्यून) ना छोड़ूंगा | आप ने इर्शाद फ़रमाया जा ना छोड़ना | (तज़किरा मशाइख देवबंद पृष्ट ८,१४८)

भूक प्यास वाले रोज़ा फ़र्ज़ नहीं

अल्लामा वहिदुज्ज़मा लिखते हैं: जिस को ज्यादा भूक लगे उस पर रोज़ा फ़र्ज नहीं है| (अर्फुल जावी पृष्ट ८०)

तअज्जुब है कि इतनी अहम् इबादत जो फ़र्ज़ है इसके बारे में ग़ैर मुक़ल्लिदों ने अपनी राय से यह फैसला कर लिया कि जिसको भूक लगे वह रोज़ा न रखे | अल्लाह और उसके रसूल के फरमान के मुकाबिले में यह हिम्मत और दीन व शरीअत के साथ मुल्हिदों के सिवा ऐसा मजाक कौन कर सकता है ???

आगे फिर बेबाकी के साथ लिखा है कि.....

रोज़ा का फिदया देना वाजिब नहीं

जो रोज़ा रखने पर क़ादिर (ताक़त) ना हो उसको रोज़ा का फिदया देना वाजिब नहीं है | (अर्फुल जावी पृष्ट ८०)

हालते रोज़ा में संभोग

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का मज़हब है कि अगर रोज़ा दार अपनी औरत से योनि के इलावा या दुबुर (पीछे के मुकाम) में संभोग करे और वीर्य न निकले तो इससे रोज़ा न टूटेगा जैसा लिखते हैं अगर किसी ने अपनी औरत से योनि के इलावा या दुबुर (पीछे के मुकाम) में संभोग करे तो इस का रोज़ा नहीं टूटे गा| (कंज अल हका इक पृष्ट ४७)

इस से मालूम हुआ कि ग़ैर मुक़ल्लिदों के यहाँ औरतों से दुबुर के मक़ाम में संभोग किया जाता है और रोज़े के हालत में भी कर ले तो रोज़ा नहीं टूटे गा |

हज करने वालों को ज़कात देना

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का मज़हब है कि हज करने के लिए ज़कात दी जा सकती है जैसा कि नवाब वहिदुज्ज़मा खां लिखते हैं" हज करने वालों को ज़कात देनी जाएज़ है |(कन्जुल हक़ा इक पृष्ट ४६)

जबकि अल्लाह (جل جلاله) ने साहिब ए इस्तिताअत पर हज फ़र्ज़ किया है जो मुस्तती (हज करने के ताक़त न रखता हो) नहीं उस पर हज फ़र्ज़ नहीं है |

ज़ेवेरात पर कोई जकात नहीं

इमाम ए वहाबिया मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने फतवे दिया है कि ज़ेवेरात पर जकात फ़र्ज वाजिब नहीं हैं | (बदूरल अहला पृष्ट १०१) अख़बार ए अहले हदीस पृष्ट१३, ८ अक्टूबर १९१५)

जूती समेत मस्जिद में नमाज़

वहाबियों के नवाब सिद्दीक हसन भोपाली के लड़के नूरुल हसन भोपाली ने लिखा है कि "गंदगी और नजासत से भरे हुए जूते का ज़मीन से रगड़ना उसको पाक कर देता है, यही काफी है और उस में नमाज़ अदा करना और उसी से मस्जिद में दाखिल होना जायज़ है" | (अर्फुल जावी फ़ारसी पृष्ट ११)

मौलवी वहीदुज्जामा ने भी लिखा है कि "मस्जिद में जूता पहन कर जाना सुन्नत है, नमाज़ जूते समेत पढ़ना सुन्नत है"| (तयस्सरुल बारी भाग १ पृष्ट १००)

वहाबी मौलवी अब्दुल कादिर हसारी ने लिखा है कि" नंगे पाऊं नमाज़ पढ़ना मुशाबिहत ए यहूद (यहूदियों की पहचान) है"| (सहीफ़ा अहले हदीस कराची पृष्ट २९, १६ जमादिल अव्वल १३८७)

सजदा ए तिलावत की जगह रूकू

वहाबियों के मौलवी सनाउल्लाह ने फ़तवा दिया है कि सजदा ए तिलावत की जगह रूकू काफी है (अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट २ कॉलम ३, २३ अगस्त १९६४)

लड़कियों का घर में गाना

वहाबी के मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने लिखा है कि लड़कियों का गाना घर में ईद या शादी के मौके पर जायज़ है इन को राग से कोई संबध नहीं | (अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट १२, १६ अप्रैल १९१५)

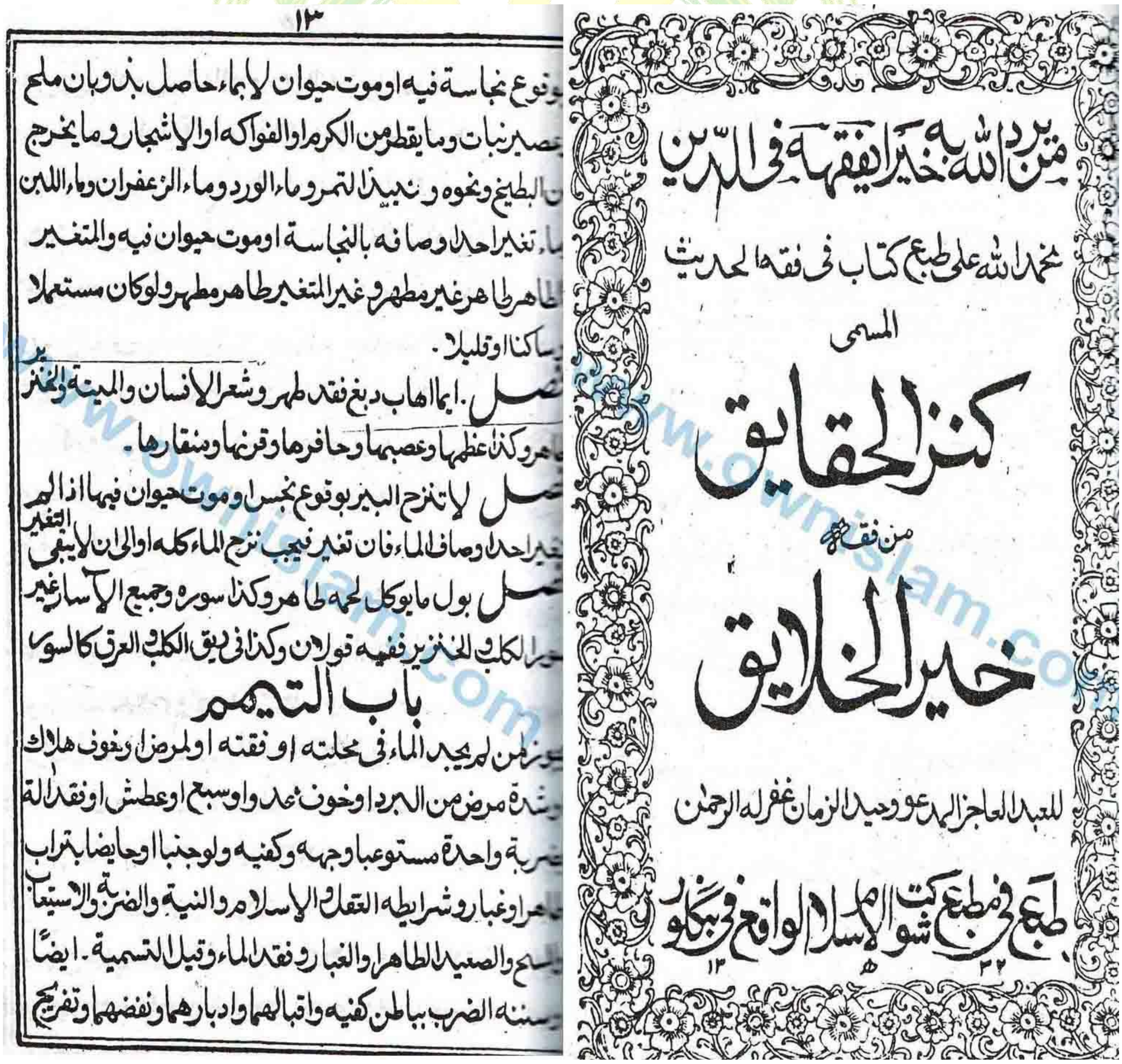
वहाबी के सरदार जी मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने लिखा है कि शादी में गाना बजाना जाएज़ है| (अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट १०, ५ जनवरी १९१२)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मौलवी वहीदुज्जामा ने लिखा है कि शादी, खतने, और इसी किस्म की ख़ुशी की प्रोग्राम (तक़रीबात) में ग़ना गाना बजाना और मज़ामीर में कोई हर्ज नहीं | (नुजूलुल अबरार पृष्ट ७३ प्रकाशित बनारस)

शादी में वलीमा की दावत हो और किसी एक तरफ ढोलक वगैरह बजती हो तो खाने खाते क्यूंकि शादी में इतने की इजाज़त आई है | (अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट १२, १४ जनवरी १९१६)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नजदीक सूअर की अज़मत (महीमा)

अल्लामा वहिदुज्ज़मा लिखते हैं: सूअर पाक है सूअर की हड्डी, पुट्ठे, खुर, सींग और थोथनी सब पाक है"| (कन्जुल हक़ा इक़ पृष्ट १३)



١٣

نوع نجاسة فيه اوموت حيوان لابماء حاصل بذوبان ملح
صيرنبات ومايقطرمن الكرماوالفواكه اوالاشجار ومايخرج
البطيخ ونحوه ونبيذ التمروماء الورد وماء الزعفران وماء اللبن
تغيراحد اوصافه بالنجاسة اوموت حيوان فيه والمتغير
طاهر غيرمطهر وغيرالمتغيرطاهرمطهرولوكان مستعملا
ساكنا اوقليلا ـ

فصل. ايما اهاب دبغ فقد طهر وشعرالانسان والميتة والخنزير
وكذا عظمها وعصبها وحافرها وقرنها ومنقارها ـ

فصل لاتنزح البير بوقوع نجس وموت حيوان فيها اذا لم
يتغير احد اوصاف الماء فان تغير فيجب نزح الماء كله اوالى ان لايبقى التغير

فصل بول مايوكل لحمه طاهر وكذا سوره وجميع الاسار غير
الكلب والخنزير ففيه قولان وكذا فى ريق الكلب العرق كالسور

باب التيمم

لمن لم يجد الماء فى محلته او نفقته اولمرض اوخوف هلاك
مرض من البرد اوخوف عدو اوسبع اوعطش اوفقد الة
ضربة واحدة مستوعبا وجهه وكفيه ولوجنبا اوحائضا بتراب
اوغبار وشرايطه العقل والاسلام والنية والضربة والاستيعاب
والصعيد الطاهر والغبار وفقد الماء وقيل التسمية ـ ايضا
سنته الضرب بباطن كفيه واقبالهما وادبارهما ونفضهما وتفريج

من يرد الله به خيرا يفقهه فى الدين

بحمد الله على طبع كتاب فى فقه الحديث

المسمى

كنز الحقايق

من فقه

خير الخلايق

للعبد العاجز الراجى عفو وحيد الزمان غفر له الرحمن

طبع فى مطبع كتب شوكة الاسلام الواقع فى بنگلور

सूअर माँ (माता) की तरह पाक है

अल्लामा सिद्दीक हसन खान लिखते हैं: सूअर के हराम होने से इसका नापाक होना हरगिज़ साबित नहीं होता जैसे कि माँ हराम है मगर नापाक नहीं" | (बदूरुल अहला पृष्ट १६)

सूअर का झूठा और कुत्ते का पिशाब पखाना पाक है

अल्लामा वहिदुज्ज़मा खान लिखते हैं: "लोगों ने कुत्ते और सूअर और इनके झूठे के संबंध में विरोध किया ज्यादा राजिह (सबसे सही) यह है कि इनका झूठा पाक है ऐसे लोगों ने कुत्ते के पिशाब, पखाना के संबंध विरोध किया है हक़ बात यह है कि इनके नापाक होने पर कोई दलील नहीं"| (नुज़ुलुल अबरार भाग ४ पृष्ट ५०)

मौलवी वहीदुज़ ज़मा ग़ैर मुक़लिद ने लिखा है कि कुत्तों का पेशाब नजिस नहीं है | (हदीयतुल मेहदी भाग ३ पृष्ट ७८)

गधी, कुतिया और सोरनी का दूध ग़ैर मुक़ल्लिदीन के लिए पाक है

मारुफ़ ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम नवाब सिद्दीक हसन खान लिखते हैं: "गधी, कुतिया और सोरनी का दूध पाक है" | (बदूरुल अहला पृष्ट १६)

टिप्पणी: मनी भी पाक और यह दूध भी पाक ग़ैर पुक़ल्लिदीन का मिल्क शैक तैयार है |

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक

हलाल जानवरों का पेशाब एवं पखाना पाक है

मुफ़्ती अब्दुस सत्तार इमामे फिर्का गुरबाए अहले हदीस फरमाते हैं: "हलाल जानवारूं का पेशाब एवं पखाना पाक है जिस कपड़े पर लगा हो उस से नमाज़ पढ़नी दुरुस्त है नीज बतौरे अद्वियात (दवाई) का पर्योग करना दुरुस्त है| (फ़तवा सत्तारिया भाग ४ पृष्ट १०५)



فتاوی ستاریہ ۱۰۵ جلد اول

سوال (۱۸۱) اگر کسی کپڑے میں گوبر یا پیشاب حلال جانور ماکول اللحم کا لگا ہوا ہو اور اس سے بچنا امر محال اور مشکل ہو جیسا کہ دیہاتیوں کے لئے مشکل ہے تو اس کپڑے میں نماز جائز و درست ہے یا نہیں اور ماکول اللحم کا گوبر یا پیشاب پاک ہے یا پلید؟

(سائل ایک اعرابی)

جواب (۱۸۱) ماکول اللحم کا بول و براز عند الشرع پاک ہے (دیکھو مشکوٰۃ) اور جس کپڑے پر وہ لگا ہوا ہو اس میں نماز پڑھنی درست ہے۔ کراہیت طبعی دیگر شے ہے اگر دھو لیا جائے تو بہتر ہے ورنہ کوئی قباحت شرعی نہیں۔ خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مرابض الغنم یعنی بکریوں کے باڑے میں نماز پڑھا کرتے تھے۔ نیز ماکول اللحم کا بول و براز بطور ادویات کے استعمال کرنا جائز ہے چنانچہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے چند اصحاب کو اونٹنیوں کا دودھ اور پیشاب پینے کا حکم فرمایا تھا (سنن نسائی وغیرہ) ہاں فقہ حنفیہ مثل درمختار وغیرہ عربی اور مثل مفتاح الجنۃ وغیرہ اردو میں لکھا ہے کہ اگر کپڑے پر مثل درہم شرعی یعنی ہتھیلی کے برابر نجاست غلیظ (مثل پاخانہ انسان وغیرہ) لگی ہوئی ہو تو بھی نماز پڑھنی جائز و درست ہے لاحول ولا قوۃ الا باللہ وھذا اغلاط جدا فقط

(مفتی) ابو محمد عبد الستار غفر لہ الغفار وصانہ عن شرور الاشرار

الجواب صحیح والرای نجیح ابو محمد عبد الوہاب امام جماعت غرباء اہلحدیث

فاضل مجیب بارک اللہ فی علمہ وفہمہ نے جو کچھ لکھا ہے یقیناً وہ صحیح ہے۔

مہر

ابو الخلیل عبد الجلیل جھنگو

خادم شریعت ثبو

ابو الخلیل عبد الجلیل خاں

مدرس مدرسہ موری دروازہ دہلی

(صحیفہ اہلحدیث دہلی بابت ماہ ذیقعدہ ۱۳۴۹ھ مطابق اپریل ۱۹۳۱ء جلد ۱۰ نمبر ۱۱)

سوال (۱۸۲) حاملہ بزنا کا نکاح زانی یا غیر زانی سے ہو سکتا ہے یا نہیں؟

(سائل شیر محمد قوم بھٹہ ضلع ملتانی)

جواب (۱۸۲) حاملہ کی عدت وضع حمل ہے اور حالت عدت میں نکاح کرنا جائز نہیں لہذا بعد وضع حمل بصدق دل تائب ہو کر نکاح ہو سکتا ہے کیونکہ نکاح کرنا شرعاً حلال ہے اور زنا حرام ہے اور شے حرام کے ارتکاب سے شے حلال حرام نہیں ہو سکتی۔ پس زنا کی وجہ سے نکاح حرام نہیں ہو سکتا حدیث مرفوع میں موجود ہے لا یحرم الحرام الحلال (ابن ماجہ) اگر غیر زانی قبل وضع حمل کسی وجہ سے نکاح کر بھی لے تو تاوقتیکہ وضع حمل نہ ہو جماع نہ کرے کیونکہ حدیث میں غیر کی کھیتی کو پانی پلانے

یستفتونک قل اللہ یفتیکم

شیخ الحدیث حضرت العلام مولانا الحافظ الحاج مفتی ابو محمد عبد الستار صاحب دہلوی

امام

جماعت غرباء اہلحدیث کثر اللہ سوادھم کے گرانقدر علمی و تحقیقی فتاوی کا

الموسوم بہ

فتاوی ستاریہ

جامع

مولانا حافظ عبد الغفار صاحب سلفی

امام محمدی مسجد بنس روڈ کراچی

حسب فرمائش

شیخ محمد عمران صاحب اینڈ برادرس

احمد پراچہ بلڈنگ کراچی ۲

ناشر

مکتبہ سعودیہ

حدیث منزل۔ کراچی ۱

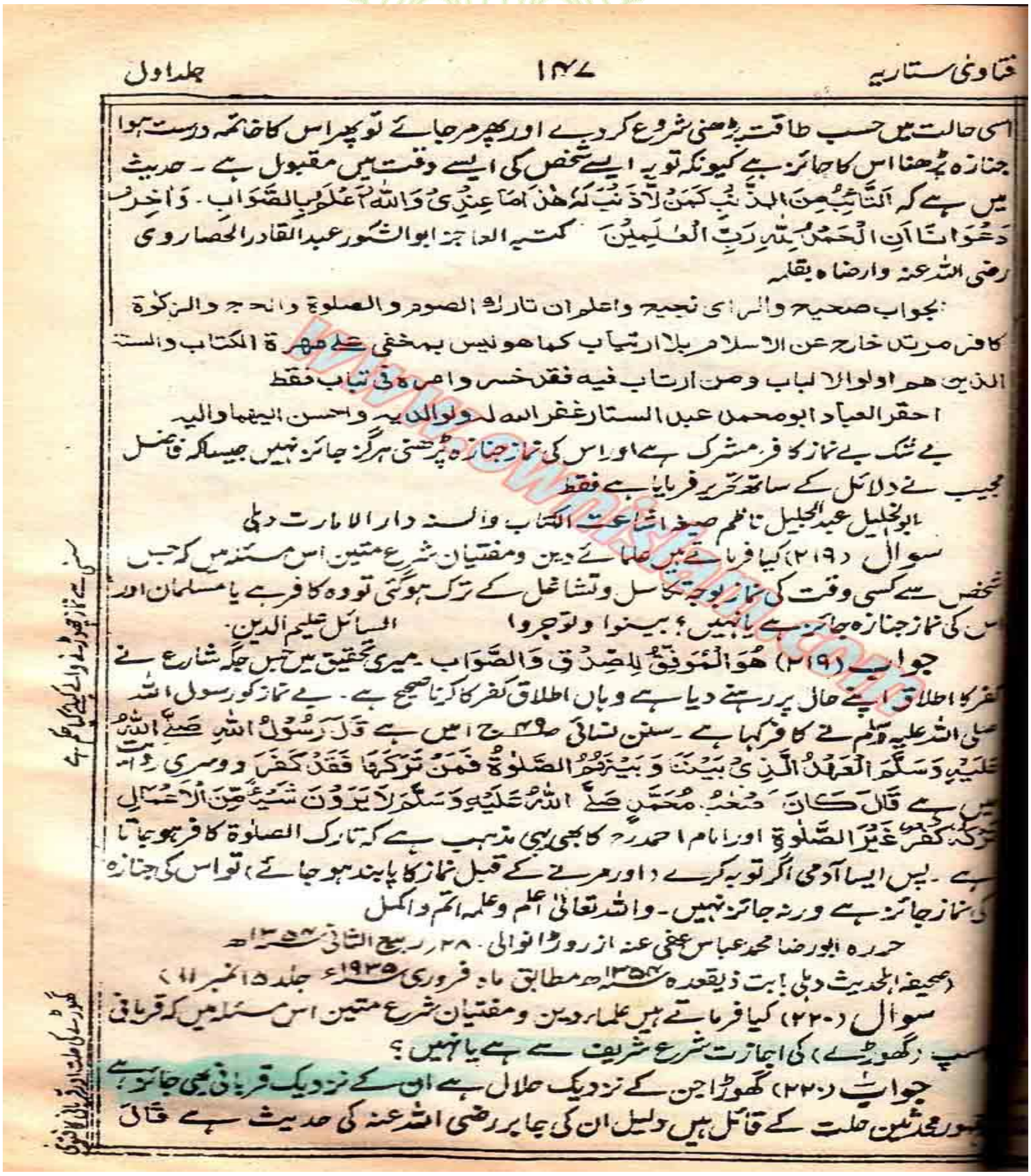
टिप्पणी: यानी शर्बते ब नफ्शा ना मिला तो घोड़े का पेशाब पी लिया बिना डोल के बजाये लेद चबाली जवारिशे कमोनी के बजाये भैंसे का गोबर खा लिया |

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक

घोड़ा हलाल है इसकी कुर्बानी (बलि) भी जरूरी है

नवाब नुरुल हसन खान लिखते हैं: घोड़ा हलाल है | (अरफुल जादी पृष्ट २३६)

मुफ़्ती अब्दुस्सत्तार साहब लिखते हैं: घोड़े की कुर्बानी (बलि) करना भी साबित बल्कि जरूरी है | (फ़तवा सत्तारिया भाग १ पृष्ट १४७-१५२)



فتاوٰی ستاریہ ۱۴۷ جلد اول

اسی حالت میں حسب طاقت پڑھنی شروع کردے اور پھر مرجائے تو پھر اس کا خاتمہ درست ہوا جنازہ پڑھنا اس کا جائز ہے کیونکہ توبہ ایسے شخص کی ایسے وقت میں مقبول ہے۔ حدیث میں ہے کہ اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ کَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَہٗ ھٰذَا مَا عِنْدِیْ وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ۔ وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ کتبہ العاجز ابوالشکور عبدالقادر الحصاروی رضی اللہ عنہ وارضاہ بقلمہ

الجواب صحیح والرای نجیح واعلم ان تارک الصوم والصلوۃ والحج والزکوۃ کافر مرتد خارج عن الاسلام بلا ارتیاب کما ھو لیس بمخفی علی مھرۃ الکتاب والسنۃ الذین ھم اولوا الالباب ومن ارتاب فیہ فقد خسر وامرہ فی تباب فقط

احقر العباد ابومحمد عبدالستار غفر اللہ لہ ولوالدیہ واحسن الیھما والیہ

بے شک بے نماز کافر مشرک ہے اور اس کی نماز جنازہ پڑھنی ہرگز جائز نہیں جیسا کہ فاضل مجیب نے دلائل کے ساتھ تحریر فرمایا ہے فقط

ابوالخلیل عبدالجلیل ناظم صیغہ اشاعت الکتاب والسنہ دارالامارت دہلی

سوال (۲۱۹) کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ جس شخص سے کسی وقت کی نماز بوجہ تکاسل وتشاغل کے ترک ہوگئی تو وہ کافر ہے یا مسلمان اور اس کی نماز جنازہ جائز ہے یا نہیں؟ بینوا وتوجروا السائل علیم الدین

جواب (۲۱۹) ھُوَ الْمُوَفِّقُ لِلصِّدْقِ وَالصَّوَابِ۔ میری تحقیق میں جس جگہ شارع نے کفر کا اطلاق اپنے حال پر رہنے دیا ہے وہاں اطلاق کفر کا کرنا صحیح ہے۔ بے نماز کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کافر کہا ہے۔ سنن نسائی صفحہ ج ا میں ہے قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَلْعَھْدُ الَّذِیْ بَیْنَنَا وَبَیْنَھُمُ الصَّلٰوۃُ فَمَنْ تَرَکَھَا فَقَدْ کَفَرَ دوسری حدیث میں ہے قَالَ کَانَ اَصْحَابُ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَا یَرَوْنَ شَیْئًا مِّنَ الْاَعْمَالِ تَرْکُہٗ کُفْرٌ غَیْرَ الصَّلٰوۃِ اور امام احمد رحمہ اللہ کا بھی یہی مذہب ہے کہ تارک الصلوۃ کافر ہو جاتا ہے۔ پس ایسا آدمی اگر توبہ کرے (اور مرنے کے قبل نماز کا پابند ہو جائے) تو اس کی جنازہ کی نماز جائز ہے ورنہ جائز نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ اتم واکمل

حررہ ابورضا محمد عباس عفی عنہ از روڑا نوالی۔ ۲۸ ربیع الثانی ۱۳۵۳ھ

(صحیفہ اہلحدیث دہلی بابت ذیقعدہ ۱۳۵۳ھ مطابق ماہ فروری ۱۹۳۵ء جلد ۱۵ نمبر ۱۱)

سوال (۲۲۰) کیا فرماتے ہیں علماء دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ قربانی اسپ (گھوڑے) کی اجازت شرع شریف سے ہے یا نہیں؟

جواب (۲۲۰) گھوڑا جن کے نزدیک حلال ہے ان کے نزدیک قربانی بھی جائز ہے جمہور محدثین حلت کے قائل ہیں دلیل ان کی جابر رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے قال

गोह हलाल है

नवाब नुरुल हसन खान लिखते हैं: "गोह (छिपकली नुमा एक जानवर) हलाल है" | (अरफुल जादी पृष्ट २३६)

काफ़िर का जबीहा

वहाबी मौलवी वहीदुज्जामा ने लिखा है कि और इसी तरह काफ़िर के हाथ का जिबह किया हुआ जानवर भी हलाल है | (नुज़ूलुल अबरार भाग ३ पृष्ट ७८)

खार पुश्त हलाल है

नवाब नुरुल हसन खान लिखते हैं: खार पुश्त (काँटों वाला चूहा) खाना हलाल है" | (अरफुल जादी पृष्ट २३६)

कुत्ता, सूअर और साँप हलाल है

वहाबी के मुजतहिद क़ाज़ी शोकानी ने लिखा है कि सब दरियाई जानवर (पशु) हलाल है यहाँ तक कि कुत्ता, सूअर और साँप भी हलाल हैं | (नैलअल औतार भाग १ पृष्ट २७ प्रकाशित मिस्र)



ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक

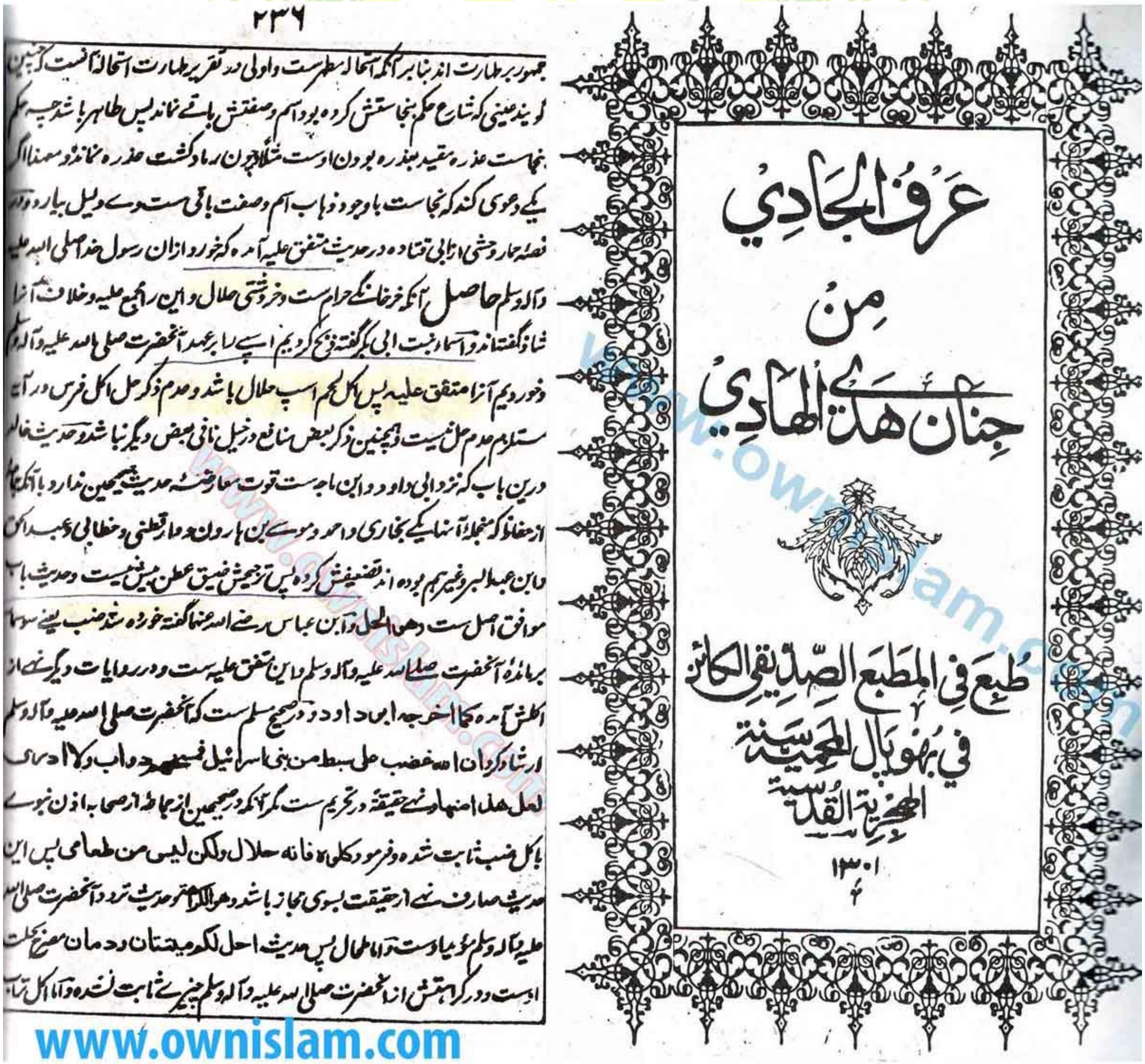
खुश्की (सूखे) के वह जानवर हलाल

सिद्दीक हसन खान लिखते हैं: "खुश्की के वह तमाम जानवर हलाल हैं जिन में खून नहीं"| (बदूरुल अहला पृष्ट ३४८)

नोट: यानी कीड़े मकोड़े, मक्खी, मच्छर छिपकली आदि |

बहरी (समुन्द्री) मुर्दा हलाल है

नवाब नुरुल हसन खान लिखते हैं: "बहरी (समुन्द्री) मुर्दा हलाल है यानी मेंडक, सुअर कछवा, केकड़ा, साँप इसान आदि" (अरफुल जादी पृष्ट २३६)



अब्दुल्लाह रोपड़ी के क़ुरानी मुआरिफ़

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के बद नसीब फ़िरके ने अपनी जिन्सी आग बुझाने के लिए कुरान पाक जैसी पवित्र ग्रंथ को भी न बख्शा | मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम और ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुहद्दिस ज़ीशान हाफिज़ अब्दुल्लाह रोपड़ी ने कुरान के मुआरिफ (अनुवाद) बयान करते हुए महिला और पुरुष के शर्मगाह की हीयत (रूपांतरण) और पुरूष व महिला के संभोग की कैफियत (स्थिति) जैसी खुराफात बयान करके अपने नामाए आमाल की सियाही में बढ़ोतरी किया है आईये इनके पहचानने के तरीके के कुछ नमुमे देखें |

महिला के रहम (गर्भशय) की पहचान

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुहद्दिसे आज़म अब्दुल्लाह रोपड़ी फरमाते हैं: "रहम (गर्भशय) की शक्ल लगभग सुराही की है रहम की गर्दन आम तौर पर छ: अंगुल से ग्यारह अंगुल उस महिला की होती है | संभोग करते वक़्त क़ज़ीब (लिंग) गर्दने रहम में दाखिल होता है और इस रास्ते मनी रहम में पहुँचती है अगर गर्दने रहम और क़ज़ीब लम्बाई में बराबर हूँ तो (मनी) वीर्य वस्त (बीच) रहम में पहुँच जाती है वरना वरे रहती है"| (तंज़ीम यकुम मई १९३२ पृष्ट ६ कालम नम्बर १)

टिप्पणी : क्या महिला को अपनी ग्यारह उन्गलियुं से शादी से पहले दुल्हा की आलत (लिंग) नाप लेना चाहिए कि मनी वस्त रहम (बीच) तक पहुंचा सके गा या नहीं ?

मनी रहम (गर्भशय) में पुहंचाने का दूसरा तरीका

हाफिज अब्दुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं:"और कई मर्तबा पुरुष की मनी ज्यादा दुफ्क़ (ज़ोर) के साथ निकले तो यह भी एक ज़रिया वस्त (बीच) में पहुँचने का है मगर यह ताक़त कुवते मर्दुमी (पुरूष शक्ति) पर मौकूफ (निर्भर) है"| (तंज़ीम यकुम मई १९३२ पृष्ट ६ कालम नम्बर १)

पुरूष और महिला की शर्म गाहों का मिलाप और क़रारे हमल (गर्भावस्था)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुहद्दिस रोपड़ी साहब लिखते हैं: "आलत (लिंग) ब मंजिला गर्दने रहम के है और खुस्सितीन बमंजिला पिछले रहम के हैं | पिछला हिस्सा रहम का नाफ (नाभी) के क़रीब से शुरू होता है और गर्दने की महिला की शर्मगाह में वाकअ (स्थित) होती है जैसे एक आस्तीन दुसरे आस्तीन में हो गर्दने रहम पर ज़ाइद (अधीक) गोश्त लगा होता है इसको रहम का मुंह कहते हैं और यह मुंह हमेशा बंद रहता है संभोग के वक़्त आलत (लिंग) के अन्दर जाने से खुलता है या जब शिशु का जन्म होता है | क़ुदरत ने रहम के मुंह में खुसूसियत के साथ लज्ज़त (आनंद) का इहसास रखा है अगर आलत इसको छूए तो दोनों महज़ूज़ (आनंदित) होते हैं ख़ासकर जब आलत और गर्दने रहम की लम्बाई यकसां (बराबर) होतो यह पुरुष एवं महिला की कमाले मुहब्बत (प्रेम)

और ज्यादती लज़्ज़त (आनंद की बढोतरी) और गर्भ ठहरने का जरिया है | रहम मनी का शाइक़ (शौकीन) है इसलिए संभोग के वक़्त रहम का जिस्म गर्दन के तरफ माईल (इच्छुक) हो जाता है गर्दने रहम की तकरीबन छ: अंगुश्त (ऊँगली) महिला की होती है और ज्यादा से ज्यादह ग्यारह उन्गुश्त होती है" | (तंज़ीम यकुम मई १९३२ पृष्ट ६ कालम नम्बर १)

टिप्पणी: हाफिज रोपड़ी को वासी (वियापक अनुभाव) तजर्बा है |

दाई ने टांगें पकड़ कर खींच लिया

मौलवी अशरफ अली थानवी जी ने लिखा है कि मैं कहता हूँ कि माँ के पेट से निकलने को कब जी चाहता था दाई ने टांगें पकड़ कर ज़बरदस्ती खींच लिया | (अफाज़ातुल यौमिया भाग २ पृष्ट ३१३)

रहम का महले (स्थान) वकूअ

हाफिज अब्दुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं: मुंह रहम का महिला की शर्मगाह में पिशाब के सुराख़ से एक ऊँगली से कुछ कम पीछे होता है"| (तंज़ीम यकुम मई १९३२ पृष्ट ६ कालम नम्बर १)

टिप्पणी : हाफिज साहब ने खूब पैमाइश (माप) की है |

अन्दर की कहानी

हाफिज अब्दुल्ला रोपड़ी ग़ैर मुक़ल्लिद अन्दर की पूरी कहानी से वाकिफ हैं लिखते हैं: "और गर्दने रहम की किसी महिला में दायें जानिब (ओर) और किसी में बाएं ओर माइल

होती है रहम के बहर की तरफ अगरचे ऐसी नर्म नहीं होती लेकिन बातिन इसका निहायत नर्म और, चिकनदार होता है ताकि आलत के दुखूल के समय दोनों महज़ूज़ (आनंदित)) हूँ नीज रबड़ की तरह खेंचने से खींच जाता है ताकि जितनी आलत दाखिल हो उतना ही बढ़ता जाये | कुंवारी औरतों में रहम के मुंह पर कुछ रगें सी तनी होती हैं जो पहली सुहबत में फट जाती है इसको अज़ालाए बुकारत कहते हैं | (तंजीम अहले हदीस रोपड़ी पर्थम जून १९३२ पृष्ट ३ कालम नंबर ३)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के लिए संभोग करने का बहतरीन सूरत

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुहद्दिसे आज़म हाफिज अब्दुल्ला रोपड़ी लिखते हैं: "और संभोग का बहतर सूरत यह है कि महिला चित लेटी हो और पुरूष ऊपर हो | महिला की रान उठाकर बहुत सी छेड़ छाड़ के बाद जब महिला की आँखों की रंगत बदल जाये और इसकी तबीअत में कमाले जोश आ जाये और पुरुष को अपनी ओर खींचे तो उस वक़्त दुखूल करे इससे पुरुष महिला का पानी एक्ठ्ठे निकल कर अमूमन गर्भ करार पाता है" | (अखबारे मुहम्मदी १५ जून १९३९ पृष्ट नंबर १३ कालम नंबर ३)

क़ारी एन कराम: यह थे हाफिज अब्दुल्ला रोपड़ी के कुरानी मुआरिफ - मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मौलाना मुहम्मद जूना गाढ़ी ने भी यह मुआरिफ अपने "अखबारे

मुहम्मदी” में नक़ल किये और उन्वान दिया “ अब्दुल्ला रोपड़ी एडिटर (संपादक) तंजीम के मुआरिफ कुरानी” इसे कोक शाश्तर कहें या लज्ज़तिन्निसा या तर्गीबे बद्कारी)

मौलाना जूना गाढ़ी का मुआरिफे कुरानी पर टिप्पणी

इन मुआरिफे कुरानी पर टिप्पणी करते हुए मारूफ (मशहूर) ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम शैख़ मुहम्मद जूना गाढ़ी ग़ैर मुक़ल्लिद के मुफ़स्सिरे कुरान और मुहद्दिसे ज़ीशान हाफिज अब्दुल्ला रोपड़ी के बारे में लिखते हैं: रोपड़ी ने मुआरिफे कुरानी बयान करते हुए रंडीयूं और भड़वों का अरमान पूरा किया और तमाश बीनों के तमाम हथकंडे अदा किये | (अखबारे मुहम्मदी १५ अप्रैल १९३९ पृष्ट नंबर १३)

जूना गाढ़ी की मुहज्जब जुबान

पाठको ! मुहम्मद जूना गाढ़ी साहब की “मुहज्ज़ब” भाषा का नमूना आप ने मुलाहेज़ा किया अफ़सोस कि आज सऊदी अरब में जो उर्दू तर्जुमा ए कुरान तकसीम (वितरण) हो रहा है वह उन्ही मुहम्मद जूना गाढ़ी का है काश सऊदी हकुमत किसी मुत्तकी (परहेजगार) आलिम का तर्जुमा ए कुरान शाए (प्रकासित) करने का अह्तमाम करती |

मुहम्मद की मुहब्बत दीन ए हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

रौज़ा ए नबी को गिराना वाजिब है

वहाबियों के नवाब मौलवी सिद्दीक हसन भोपाली के बेटे नूरुल हसन भोपाली ने लिखा है कि लुगत के लिहाज़ से हर उस चीज़ पर जो उठी हुई हो कब्र का लफ्ज़ सादिक आता है और वह शरीअत के मुनकिरत से है उससे मना करना और उसको मिटटी के बराबर करना मुसलमानों पर वाजिब है बगैर किसी इम्तियाज़ के चाहे पैगम्बर की कब्र हो या किसी और की हो | (अर्फुल जावी पृष्ट ६१)

इब्न ए क़य्यिम के नज़दीक क़ब्रों पर जो कुब्बे बने हुए हैं इन को गिरना वाजिब है | (फ़तहुल मजीद शरह किताब अल तौहीद पृष्ट २००)

सऊदी अरब में एक किताब सरह अल सुदूर प्रकाशित हुई है जिस के हाशिया पर उन्हों ने लिखा है कि "पस हुज़ूर ए अकरम की क़ब्र ए मुक़द्दस हर लिहाज़ से बुत (मूर्ति) है काश कि लोग इस बात को समझें | (सरह अल सुदूर पृष्ट २५ प्रकाशित सऊदी)

सब क़ब्रों से अफज़ल क़ब्र अशरफ अली थानवी की

ख्वाजा अजीज़ुल्हसन और मौलवी अब्दुल हक ने लिखा है कि "सब क़ब्रों से अशरफ वह क़ब्र है जो हज़रत अशरफ (अली थानवी) की लाश को अन्दर लिए हुए हैं जो दीन के मुजद्दिद थे क्या कोई उनका हमसर" | (अशरफुल सवानिह भाग ४ पृष्ट १८९)

यह नादान अंबिया ए कराम, सहाबा और औलिया की क़ब्रों से भी अफज़ल मान रहा है |



इब्न ए सउद ने जलीलुल क़दर सहाबा कराम (علیہم الرضوان) के मज़ारात गिराए तो देवबंदियों के अमीरे शरीअत अताउल्लाह शाह बुखारी इब्ने सउद के तरफ़दार थे | (अताउल्लाह शाह बुखारी पृष्ट ५४)

क़ाद्यानीयों के लिए तावीलें

देवबंदी मौलवी अशरफ अली थानवी के खलीफ़ा मौलवी अब्दुल माजिद दरियाबादी ने लिखा है कि "मेरा दिल तो काद्यानीयों की तरफ से भी हमेशा तावील ही तलाश करता रहता है | (हकीमुल उम्मत पृष्ट २५९)

देवबंदी फिरका के मौलाना अबुल कलाम आज़ाद कहते हैं कि वफ़ात ए मसीह (हज़रत ईसा की मौत) का ज़िक्र ख़ुद क़ुरान में है | (मल्फूजाते आज़ाद पृष्ट १३०)

वहाबियों का कालिमा

لاالہ الااللہ عبدالجبار امام اللہ

(अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट ८७७, ९जुलाई १९१५, अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट ११ कॉलम ३ , ५ अप्रैल १९१२)

शतरंज खेलना जाईज़

वहाबियों के मौलवी वहीदुज्जमा ने शतरंज खेलना भी जाईज़ क़रार दिया है "शतरंज खेलने पर इंकार जायज़ नहीं | (हदियतुल मेहदी पृष्ट ११८ प्रकाशित दिल्ली)

मर्दों को सोने के दांत लगाना

ग़ैर मुक़ल्ल्दीन के मज़हब में है कि मर्दों को सोने के दांत लगाना जायज़ है | (अख़बार ए अहले हदीस अमृतसर पृष्ट ८, १५ जनवरी १९४३)

सलातुल तस्बीह की नमाज़

इमाम अल वहाबिया मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने सलातुल तस्बीह पढ़ने से भी लोगों को मना करने की कोशिस की है चुनांचे फ़तवा देते हैं कि सलातुल तस्बीह जो मशहूर है

इसकी फ़ज़ीलत के संबंध में कोई सही हदीस शरीफ नहीं आई" | (अख़बार अहले हदीस अमृतसर पृष्ट२, २५ जून १९४३)

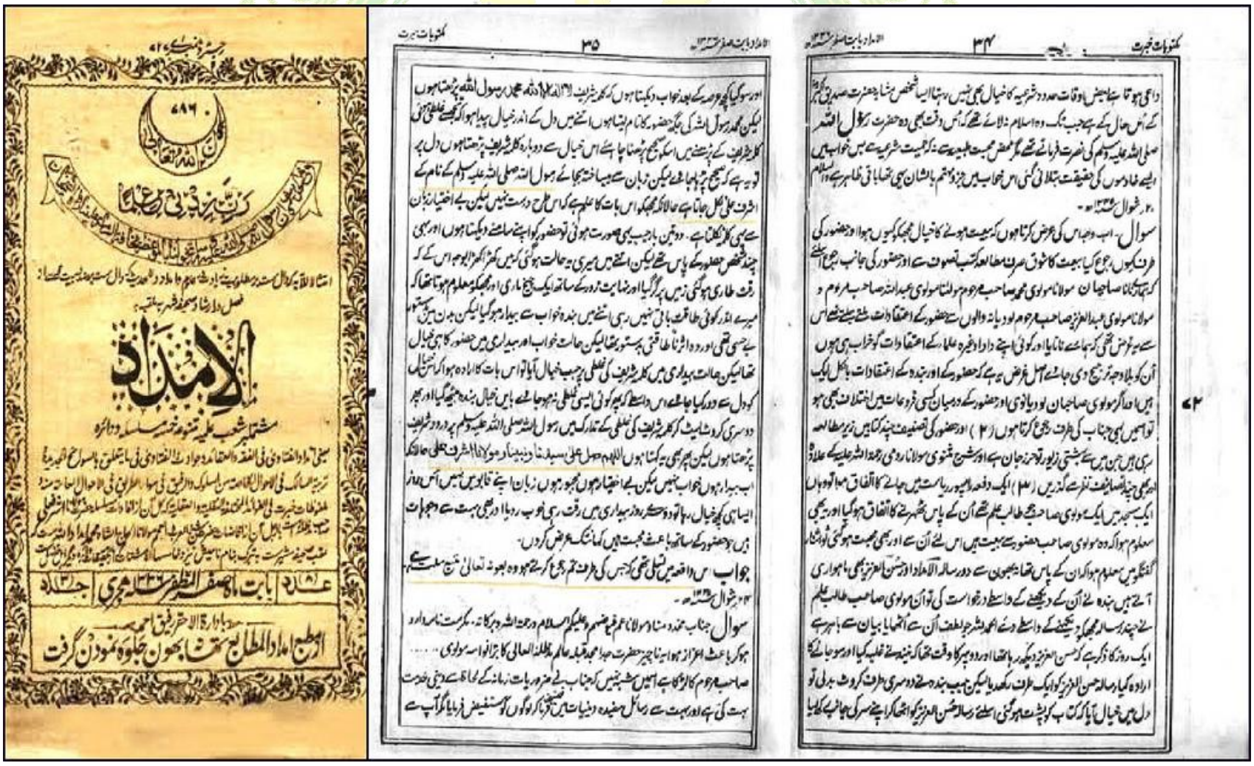
वहाबिया नज्दिया के इमाम ने किस तरह झूट बोलते हुए लोगों को तस्बीह और तहलील से रोकने की कोशिश करके शैतान मरदूद की मदद की है |

देवबंदियों का कालिमा

لاالہ الاالله اشرف علی رسول الله

اللهم صلی علی سیدنا و نبینا و مولانا اشرف علی

(रिसाला अल इमदाद पृष्ट ३५ बाबत सफर १३३६ हिजरी)

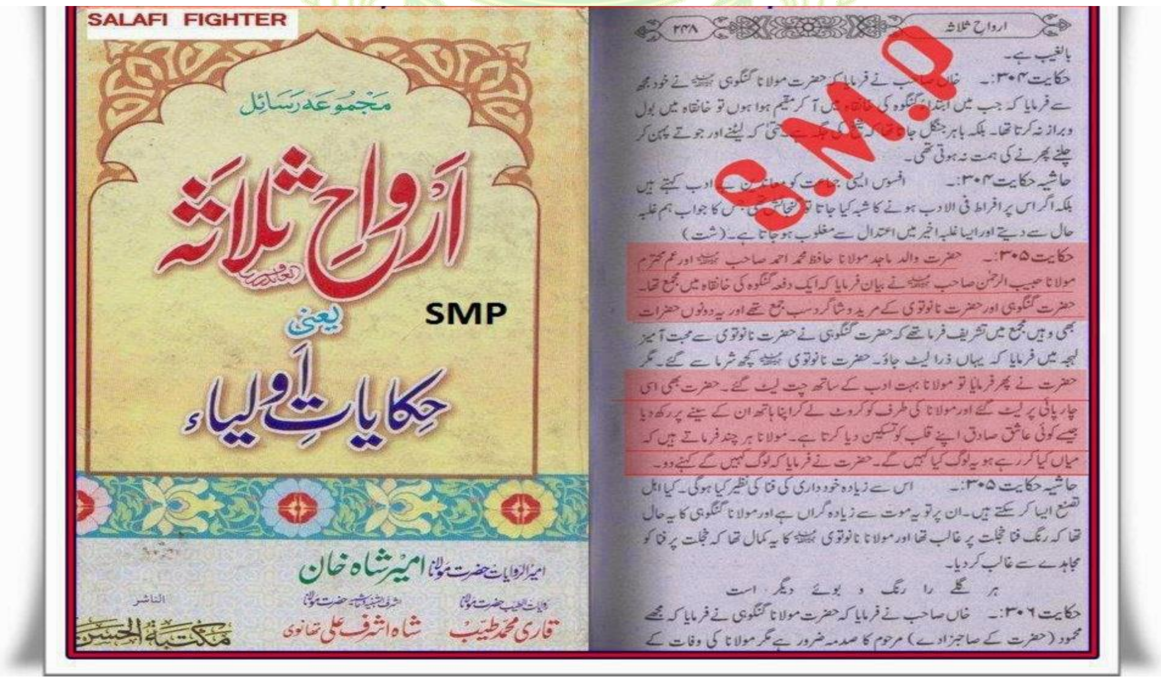


देवबंदी उलमा की अजीब गंदी हरकत

हज़रत वालिद माजिद मौलाना हाफिज़ मुहम्मद अहमद साहब, चाचा साहब मौलाना हबीबुर रहमान ने बयान किया है कि एक मर्तबा गंगोह की खानकाह में भीड़ (मजमअ) थी |

हज़रत गंगोही और नानोतवी के मुरीद व शागिर्द (छात्र) सब जमा थे और यह दोनों हजरात भी वहीं भीड़ में तशरीफ़ फरमा थे कि हजरत गंगोही ने हज़रत नानोतवी से मुहब्बत भरे लहजा में फ़रमाया कि यहाँ ज़रा लेट जाओ | हज़रत नानोतवी कुछ शरमा से गए मगर हज़रत ने फिर फ़रमाया, तो मौलाना बहुत अदब के साथ चित लेट गए | हज़रत भी उसी तरह चारपाई पर लेट गए और मौलाना की तरफ करवट ले कर अपना हाथ उनके सीने पर रख दिया जैसे कोई आशिक ए सादिक अपने क़ल्ब को तस्कीन दिया करता है मौलाना हर चंद फरमाते कि मियां क्या कर रहे हो यह लोग क्या कहेंगे ??? हज़रत ने फ़रमाया कि **लोग कहेंगे कहने दो"** |

(अरवाहे सलासा हिकायत नम्बर ३०५ पृष्ट २४८, हिकायत ए औलिया लेखक मौलवी अशरफ अली थानवी हिकायत नम्बर ३०५ पृष्ट २७३ प्रकाशित जकारिया बुक डिपो देवबंद सहारन पूर, अरवाहे सलासा मौलवी अशरफ अली थानवी हिकायत नम्बर ३०५, पृष्ट २८९ कुतुब खाना इमदाद अल गुरबा सहारनपुर)



۲۴۸ ارواح ثلاثہ

بالغیب ہے۔

حکایت ۳۰۴:۔ خاں صاحب نے فرمایا کہ حضرت مولانا گنگوہی نے خود مجھ سے فرمایا کہ جب میں ابتداءً گنگوہ کی خانقاہ میں آ کر مقیم ہوا ہوں تو خانقاہ میں بول وبراز نہ کرتا تھا۔ بلکہ باہر جنگل جاتا تھا ... کہ لیٹنے اور جوتے پہن کر چلنے پھرنے کی ہمت نہ ہوتی تھی۔

حاشیہ حکایت ۳۰۴:۔ افسوس ایسی جماعت کو ... ادب کہتے ہیں بلکہ اگر اس پر افراط فی الادب ہونے کا شبہ کیا جاتا تو ... اس کا جواب ہم غلبہ حال سے دیتے اور ایسا غلبہ اخیر میں اعتدال سے مغلوب ہو جاتا ہے۔ (شت)

حکایت ۳۰۵:۔ حضرت والد ماجد مولانا حافظ محمد احمد صاحب اور عم محترم مولانا حبیب الرحمٰن صاحب نے بیان فرمایا کہ ایک دفعہ گنگوہ کی خانقاہ میں مجمع تھا۔ حضرت گنگوہی اور حضرت نانوتوی کے مرید و شاگرد سب جمع تھے اور یہ دونوں حضرات بھی وہیں مجمع میں تشریف فرما تھے کہ حضرت گنگوہی نے حضرت نانوتوی سے محبت آمیز لہجہ میں فرمایا کہ یہاں ذرا لیٹ جاؤ۔ حضرت نانوتوی کچھ شرما سے گئے۔ مگر حضرت نے پھر فرمایا تو مولانا بہت ادب کے ساتھ چت لیٹ گئے۔ حضرت بھی اسی چارپائی پر لیٹ گئے اور مولانا کی طرف کو کروٹ لے کر اپنا ہاتھ ان کے سینے پر رکھ دیا جیسے کوئی عاشق صادق اپنے قلب کو تسکین دیا کرتا ہے۔ مولانا ہر چند فرماتے ہیں کہ میاں کیا کر رہے ہو یہ لوگ کیا کہیں گے۔ حضرت نے فرمایا کہ لوگ کہیں گے کہنے دو۔

حاشیہ حکایت ۳۰۵:۔ اس سے زیادہ خودداری کی فنا کی نظیر کیا ہوگی۔ کیا اہل تصنع ایسا کر سکتے ہیں۔ ان پر تو یہ موت سے زیادہ گراں ہے اور مولانا گنگوہی کا یہ حال تھا کہ رنگ فنا خجلت پر غالب تھا اور مولانا نانوتوی کا یہ کمال تھا کہ خجلت پر فنا کو مجاہدے سے غالب کر دیا۔

ہر گلے را رنگ و بوئے دیگر است

حکایت ۳۰۶:۔ خاں صاحب نے فرمایا کہ حضرت مولانا گنگوہی نے فرمایا کہ مجھے محمود (حضرت کے صاحبزادے) مرحوم کا صدمہ ضرور ہے مگر مولانا کی وفات کے

यह लोंडे बाज़ी नहीं तो और क्या है ? और यह इतना खतरनाक काम (फअल) है जिस से इन्सान तो इन्सान शैतान भी खौफ खाता है चुनांचे हज़रत इब्न ए अब्बास (رضی اللہ عنہ) का बयान है कि जब मर्द मर्द पर सवार होता है तो शैतान इस खौफ से भागता है कि कहीं यह लानत इसपर न आ जाये |

पुरानी जोरू से मेल जोल में

मौलवी अशरफी अली थानवी साहब की दो बीवियाँ थीं पहली बीवी बहुत पुरानी थी और दोसरी बहुत कमसिन और नई थी तो क्या थानवी साहब की पहली बीवी पुरानी जोरू होने की वजह से बा कौल खुद थानवी साहब की अम्मा कह लाई जाएँगी | "फ़रमाया कि बहुत लोग हरारत ए अजीजिया की मस्ती को रूहानी लज्ज़त समझ लेते हैं, उनको बुढ़ापे में अपनी गलती का एहसास होता है क्यूंकि उस वक़्त हरारत ए अजीजिया कम हो जाती है और जिसको जवानी में रूहानी लज्ज़त हासिल हो चुकी है, बुढ़ापे में इसकी लज्ज़त कम नहीं होती जैसे पुरानी जोरू से उन्स में ज्यादती होती है" | (कमालात ए अशरफिया लेखक मौलवी इसा इलाहबादी मल्फूज़ नम्बर ११३, पृष्ट ६८ प्रकाशित मक्तबा ए थानवी देवबंद सहारनपुर)

मज़ा तो मज़ी निकलने में आता है

मौलवी अशरफ अली थानवी साहब अपनी असली रूप दिखाते हुए अल्लाह के ज़िक्र में मज़ा हासिल करने की ख्वाहिश करने वालो से कहते हैं कि "मज़ा तो मज़ी निकलने में आता है लूहे

के चने चबाने में मज़ा कहाँ"| (हसनुल अज़ीज़ मुरत्तिब मौलवी हकीम योसुफ़ बिज्नोरी भाग ३ पृष्ट ३०६ प्रकाशित तलीफत ए अशरफिया देवबंद सहारनपुर)

मज़ी निकलेगी बहुत मज़ा आएगा

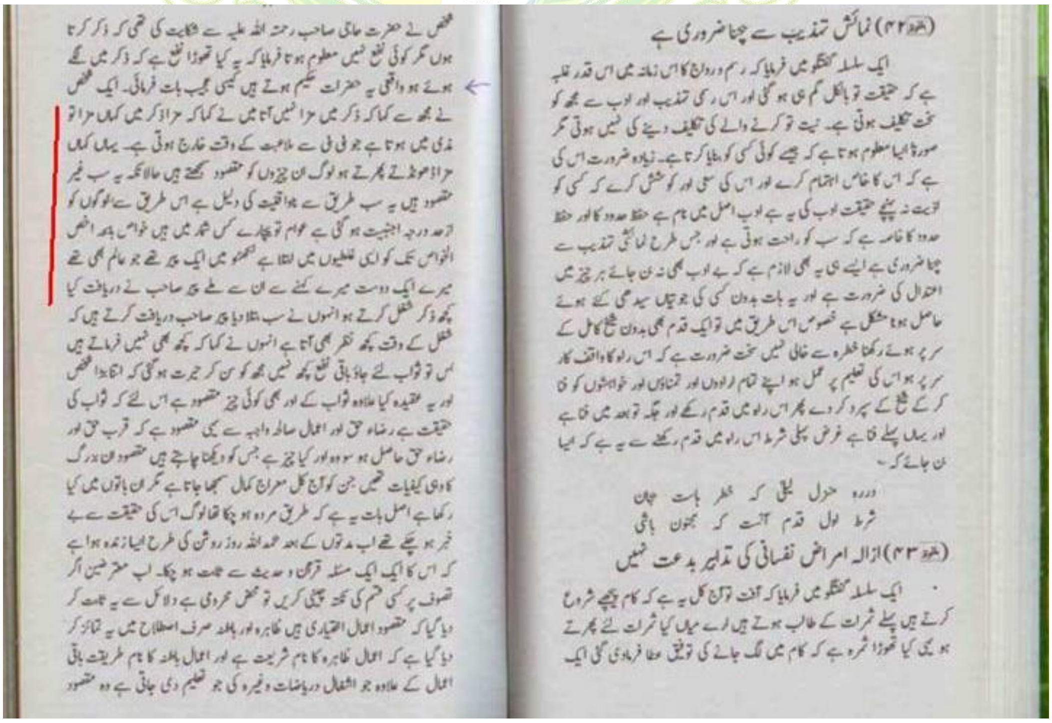
मौलवी अशरफ अली थानवी ने एक शख्स को जवाब इस अंदाज़ में देते हैं कि "लोग तो कैफियात के पीछे पड़े हैं और लज्ज़त के तालिब हैं, है तो फहश (गंदी) बात मगर मैं तो इस लज्ज़त के तलब पर यह कहा करता हूँ कि अगर मज़े ही की खवाहिश है तो मियां मज़ा तो मज़ी में आता है | बीवी को बगल में लेकर बेठ जाओ, चूमो, चाटो, मज़ी निकले गी बहुत मज़ा आएगा | (कमालात ए अशरफिया लेखक मौलवी इसा इलाहबादी, मल्फूज़ नम्बर २५०, पृष्ट ५४४ प्रकाशित मक्तबा ए थानवी देवबंद सहारनपुर)

मज़ा तो मज़ी में होता है

मौलवी अशरफी अली थानवी में शहवत ए नफसानी का फासिद माद्दा (sex mania) इतनी कसरत से था कि हर वक़्त उनके दिमाग में शहवत का भूत सवार रहता था और उनको हर बात और हर चीज़ में शहवत का ही ख्याल आता था यहाँ तक कि अल्लाह तआला के मुक़द्दस ज़िक्र के लिए भी वह शहवत संबंध रखने वाली फुहश (गन्दी) मिसालें देते थे हद तो यह हो गई कि थानवी साहब ने एक दो मर्तबा इत्तिफकिया यह जुमला नहीं कहा बल्कि यह जुमला तकिया कलाम के तौर पर हमेशा बोलते थे और अल्लाह के मुक़द्दस ज़िक्र की तौहीन व तजलील

बल्कि तमस्खुर करते थे | मात्र सात महीने ग्यारह दिन के इतने कम समय में थानवी साहब ने यह फुहश जुमला पांच बार इर्शाद फ़रमाया है यानि एक साल से भी कम समय में | यहाँ पर सिर्फ एक ही मजलिस का जिक्र किया जाता है बाक़ी आप तमाम हवाले जुमले के साथ मुनाज़िरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी मसरूफ बरकती नूरी साहब क़िबला की किताब "गुस्ताखे रसूल के गिरोह सेक्सी मुल्ला" से हासिल कर सकते हैं |

मौलवी अशरफ अली थानवी ने कहा कि "एक शख्स ने मुझ से कहा कि ज़िक्र में मज़ा नहीं आता, मैं ने कहा कि मज़ा ज़िक्र में कहाँ, मज़ा तो मज़ी में होता है जो बीवी से मुलाअबत (संभोग) के वक़्त ख़ारिज होती है, यहाँ कहाँ मज़ा ढूनते फिरते हो " | (अल अफाज़ातुल यौमिया मिनल अफादातुल कौमिया थानवी साहब के मल्फूज़ प्रकाशित मक्तबा ए दानिश देवबंद मल्फूज़ नम्बर ४२, भाग ६ पृष्ट ३५)



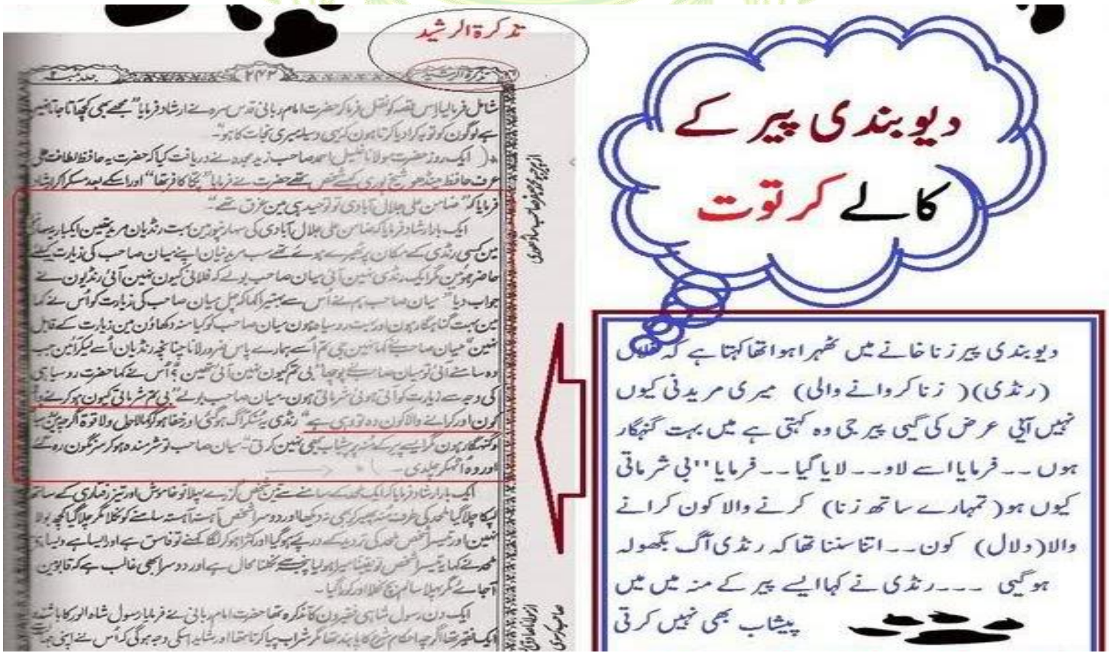
जी चाहता है गुफ्तगू जारी रहे

फ़रमाया कि अल्फाज़ तो उस के पास न थे मगर ख़ुलूस था जी चाहता था कि इस बे तहज़ीबी के साथ सिलसिला ए गुफ्तगू जारी रहे | (अफ़ा ज़ातुल यौमिया भाग १ पृष्ट ३२)

والله العظيم मौलाना थानवी के पावों धोकर पीना निजात ए उखरवी का सबब है |(तज्किरातुर रशीद भाग १ पृष्ट ११३)

देवबंदी मौलवी रंडियों के मकान में

देवबंदी पीर ज़ि ना खाने में ठहरा हुवा था कहता हैं कि फ़ुला (रंडी) मेरी मुरीदनी क्यूँ नहीं आई अर्ज की गई कि पीर जी वह कहती है में बहुत गुनाहगार हूँ, फ़रमाया उसे लाओ , लाया गया ,फ़रमाया "बी शर्माती क्यूँ हो (तुम्हारे साथ ज़िना) करने वाला कौन कराने वाला (दलाल) कौन, इतना सुनना था कि रंडी आग बगूला हो गई| रंडी ने कहा ऐसे पीर के मुंह में पेशाब भी नहीं करती | (तज्किरातुर रशीदिया भाग २ पृष्ट २४२)

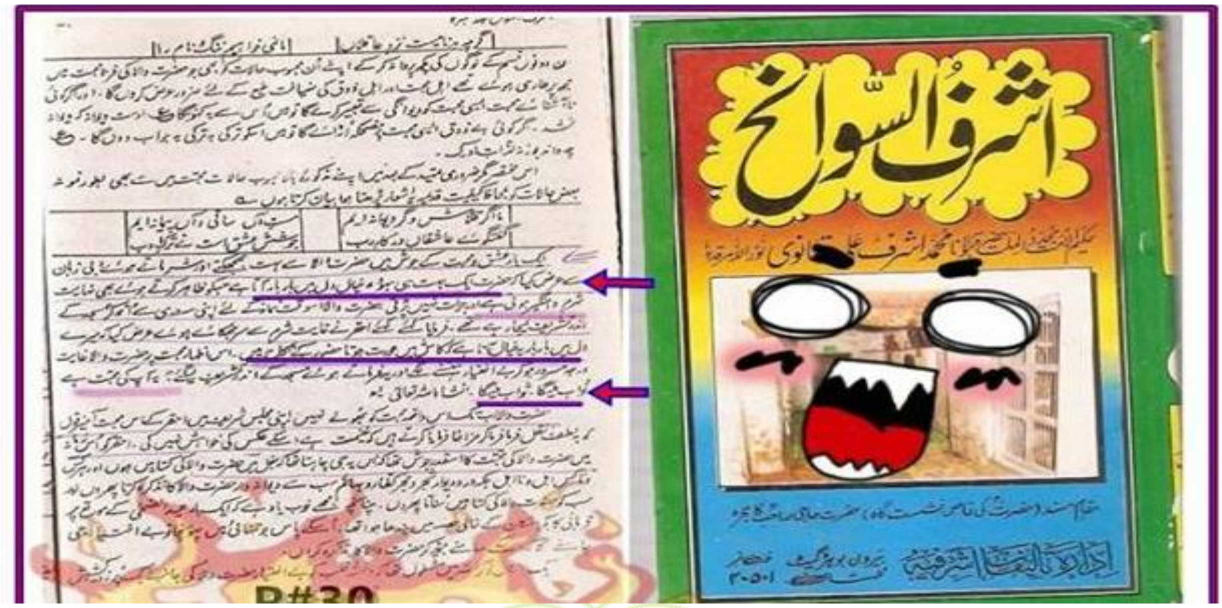


पुरानी जोरू अम्मा हो जाती हैं

मौलवी अशरफ अली साहब को औरत के संबंध अनेक किस्म के लग्व व फुहाश (गंदे) जुमले प्रयोग करने में ना मालूम क्या आनंद (लुत्फ़) आता था कहते हैं कि पुरानी जोरू (बीवी) अम्मा हो जाती हैं | (अल अफाज़ातुल यौमिया मिनल अफादातुल कौमिया (थानवी साहब के मल्फूज़) प्रकाशित मक्तबा ए दानिश देवबंद मल्फूज़ नम्बर ५३४, भाग १ क़िस्त २ पृष्ट ११६)

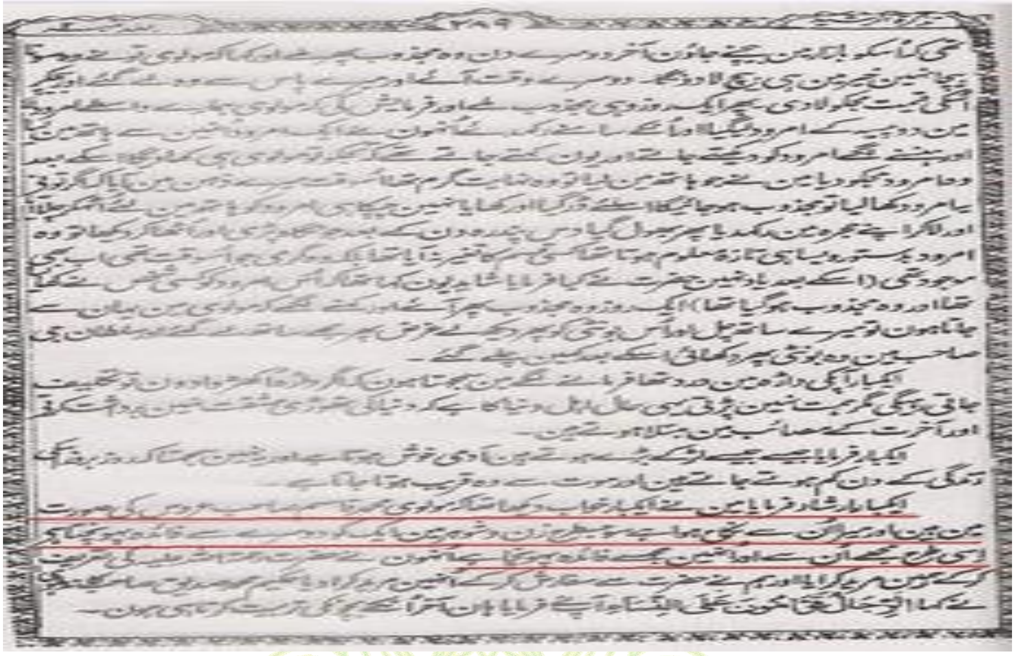
काश ! मैं औरत होती और थानवी साहब की बीवी होती

मौलवी अशरफी थानवी की बीवी बन ने की तमन्ना करने वाले ख्वाजा उजैरुल हसन साहब गौरी, थानवी साहब के मुरीद ए ख़ास बल्कि सबसे चहीते मुरीद और महबूब मुरीद थे और थानवी साहब के मौत तक सफ़र व हज़र में साया की तरह साथ दिया | एक बार इश्क व मुहब्बत के जोश में हज़रत ए वाला से बहुत झिझकते और शर्माते हुए दबी जुबान से अर्ज किया कि हज़रत ! एक बहुत ही बे हुदा खियाल दिल में बार बार आता है जिस को ज़ाहिर करते हुए भी शर्म दामनगीर होती है हज़रत वाला ने कहा कहिये कहिये ! शर्म से सर झुकाते हुए अर्ज किया कि मेरे दिल में बार बार यह ख्याल आता है कि काश ! **मैं औरत होता, हुज़ूर के निकाह में**"| (अशरफ अल सवानिह लेख़क ख्वाजा उजैरुल हसन साहब गौरी प्रकाशित मक्तबा ए थानवी देवबंद, भाग २ पृष्ट ७०)



दाढ़ी वाली दुल्हन

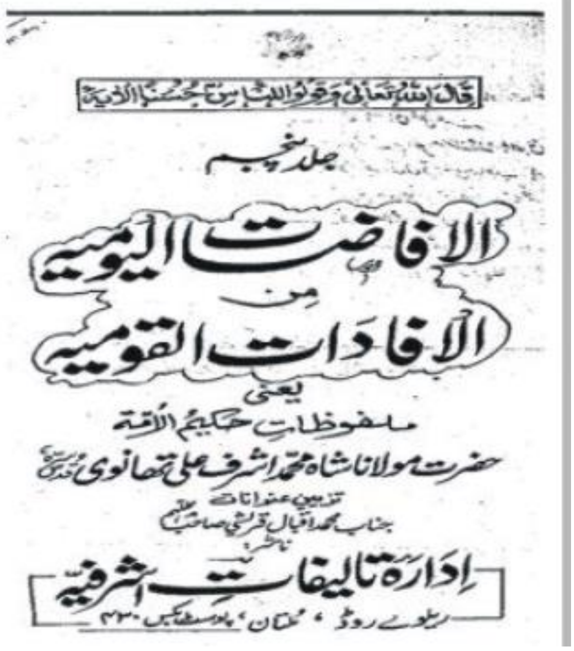
वहाबी, देवबंदी और तबलीगी जमात के पेशवा और जिन को तबलीगी जमा अत के मानने वाले "मुजद्दिद और इमाम ए रब्बानी के लक़ब से याद करते हैं, वह मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहब की हालत ए ज़िन्दगी कलमबंद करने वाले देवबंदी मौलवी और नामवर लेखक मौलवी आशिक इलाही मेरठी साहब लिखते है कि गंगोही साहब ने ख्वाब बयान किया कि ख्वाब में मैंने ने देखा कि मौलवी कासिम दुल्हन बने हुए हैं और मेरा उनसे निकाह हुआ और फिर आगे ख्वाब बयान करते हैं कि "सो जिस तरह से ज़न (बीवी) और शोहर में एक को दुसरे से फ़ाइदा (लाभ) पहुँचता है इसी तरह मुझे उनसे और उन्हें मुझ से फ़ाइदा (लाभ) पहुंचा है | (तज्किरतुर रशीद लेखक मौलवी आशिक इलाही मेरठी प्रकाशित दारुल किताब भाग २ पृष्ट ३६२/२९७)

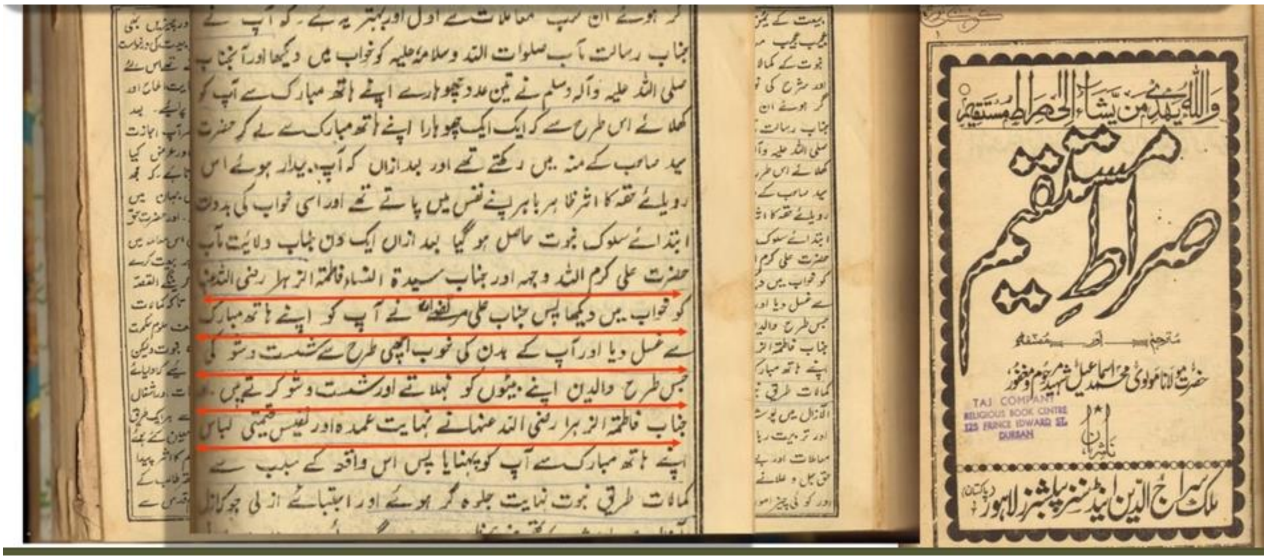


शहजादी ए रसूल हज़रत बीबी फ़ातिमा (رضی اللہ عنہا) की शान में गुस्ताखी

मौलवी अशरफ अली थानवी अपने एक मौलवी फजलुर्रहमान की ज़ुबानी ब्यान करते हैं कि "हम ने ख़्वाब में हज़रत बीबी फ़ातिमा (رضی اللہ عنہا) को देखा उन्होंने ने हम को अपने सीने से चिमटा लिया | (अल अफाज़ातुल यौमिया भाग ५ पृष्ट ३७)

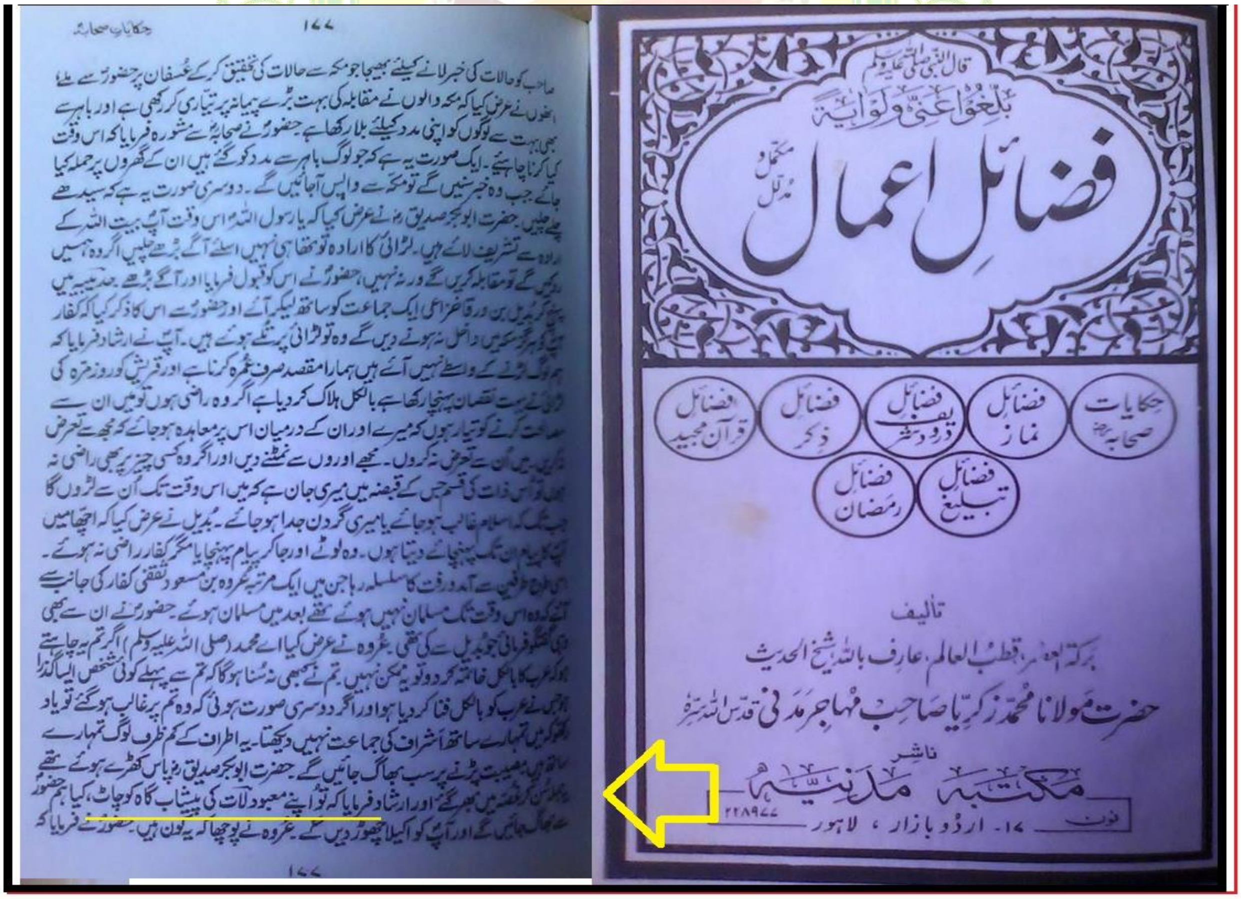






गुस्ताखे रसूल के बारे में सख्त लफ्ज़ का प्रयोग

तू अपने माबूद लात की पेशाब गाह को चाट | (फ़ज़ाइल ए आमाल पृष्ट १७७)

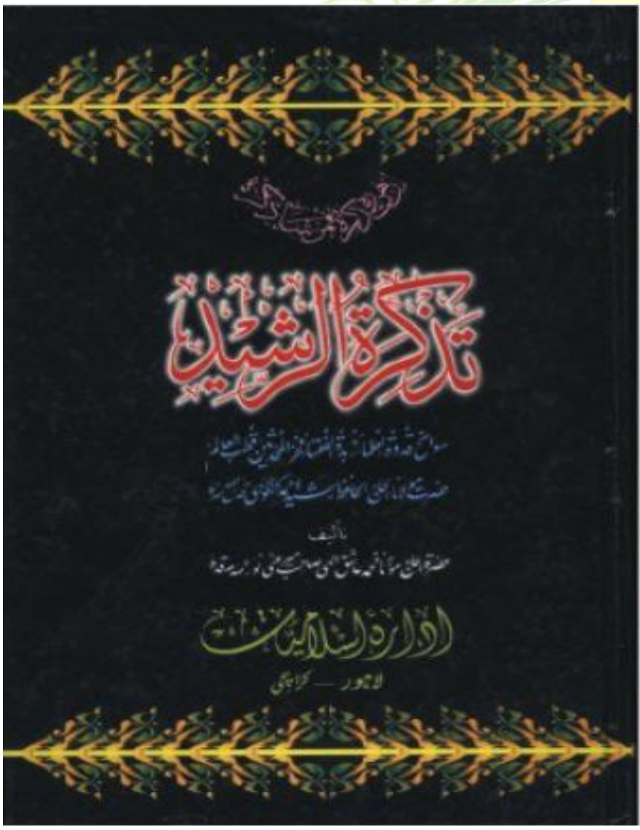


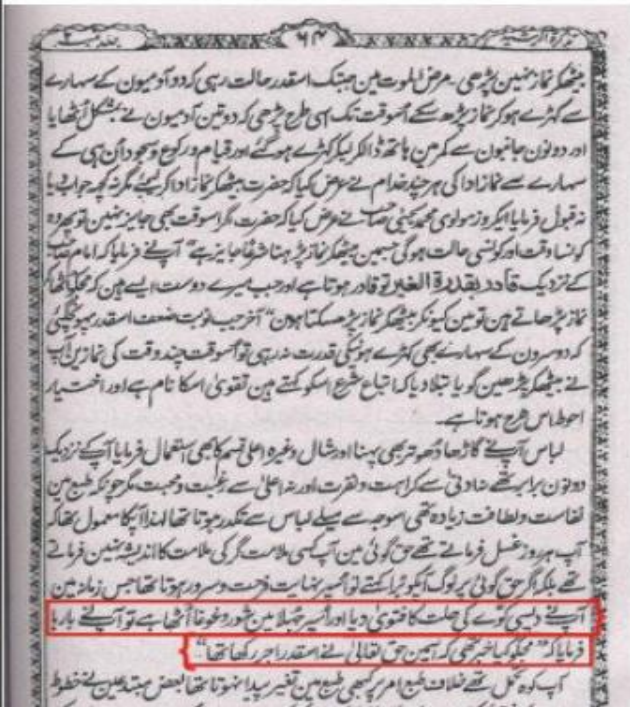
कौआ खाना सवाब

सवाल: जिस जगह ज़ाग ए मारोफ़ा (आम कौआ) को अक्सर हराम जानते हूँ और खाने वाले को बुरा कहते हूँ तो ऐसी जगह इस कौए खाने वाले को कुछ सवाब होगा न सवाब होगा न अजाब ?

उत्तर: सवाब होगा | (फ़तवा रशीदिया लेखक मौलवी रशीद अहमद गंगोही पृष्ट ६३७)

तजकिरा रशीदिया में लिखा है कि मुझ को क्या खबर थी कि हक तआला ने इसमें इस कदर अज्र रखा था ।





آپ نے دیسی کوے کی حلت کا فتویٰ دیا اور اس پر جہلا میں شور و غوغا اٹھا ہے تو آپ نے بار بار
فرمایا کہ "مجھ کو کیا خبر تھی کہ اس میں حق تعالیٰ نے اس قدر اجر رکھا تھا"

पड़ी हैं अंधे को आदत कि शोरबा ही से खाए
बटेर हाथ ना आई तो ज़ाग (कौआ) ले के चले

हज़रत इमाम हुसैन की शान में गुस्ताखी

मुहम्मद दीन बट्ट ने लिखा है कि "इमाम हुसैन ने जमाअत में तफ़रक़ा डाला और जमाअत से अलग हो कर शैतान के हिस्से में चले गए" | (रशीद इब्न रशीद पृष्ट २२५)

दूसरी जगह लिखता है कि "पस हुसैन बागी और बैअत तोड़ने वाले वाले ठहरे | (रशीद इब्न रशीद १८४)

नबी करीम (صلی اللہ علیہ والہ وسلم) ने हज़रत इमाम हुसैन (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) को सरदारे नौजवानाने जन्नत का लक़ब अता फ़रमाया और आपकी शहादत की पैशंगोई फरमाई अब जरा इनकी गंदी सोच पर गौर करें कि यह सुअर से भी ज्यादह गंदे लोग नबी करीम (صلی اللہ علیہ والہ وسلم) के मुकाबिले में जन्नत के नौजवानों के सरदार को बागी, मआज़ल्लाह शैतान के हिस्से में चले जाने वाला कहते हैं हालाँकि यह लोग खुद देव के हिस्से में चले गए हैं इनके दिल व दिमाग में देव बंद है | इसलिए गंदे गंदे बातें करते हैं |

देवबंदीयों के मौलवी ने यजीद पलीद को अमीरुल मोमिनीन लिखा और उनकी की शान में क़सीदे भी ....

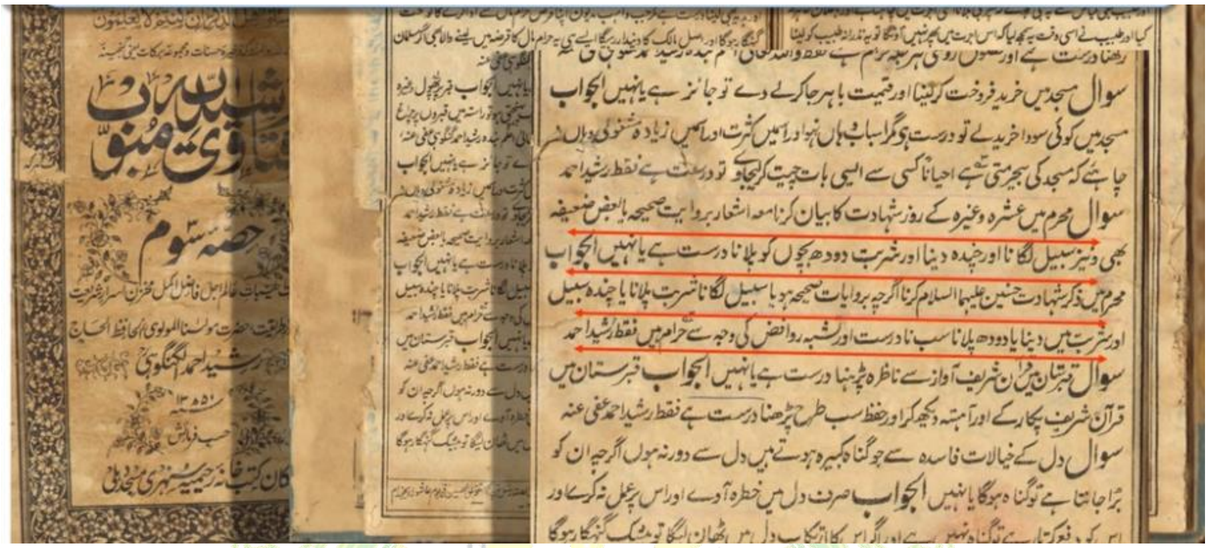

امیر المومنین سیدنا یزید رحمۃ اللہ علیہ

حیات سیدنا یزید

مجلس حضرت عثمان غنی

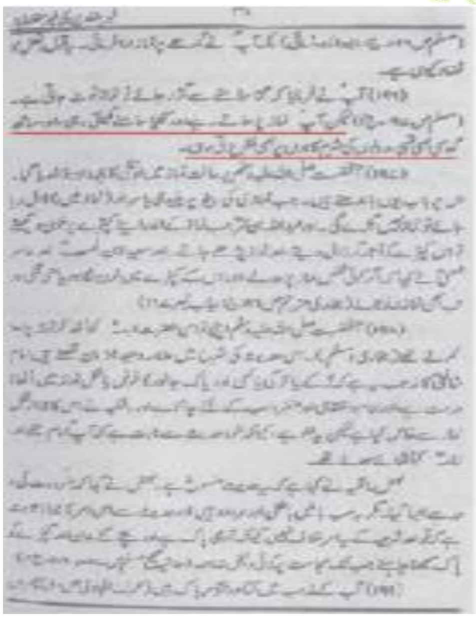
सबील लगाना शरबत पिलाना हराम है

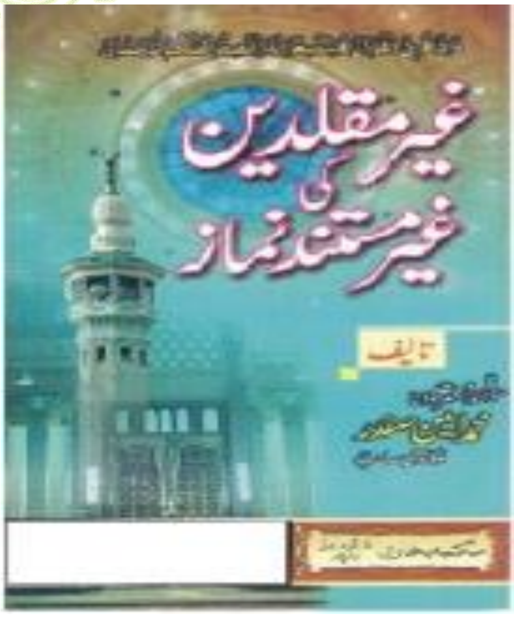
मौलवी रशीद गंगोही ने लिखा है "सबील लगाना शरबत पिलाना हराम है" (फतवा रशीदिया भाग ३ पृष्ट ११३)



हुज़ूर (ﷺ) पर घिनौना इलज़ाम

देवबंदी मुनाजिर अमीन सफ़दर औकाड़वी लिखता है कि आप नमाज़ पढ़ाते रहे और कुत्तिया सामने खेलती रही और गधी भी साथ थी दोनों के शर्मगाहों पर नज़र पड़ती रही | (ग़ैर मुक़ल्लिदीन की ग़ैर मुस्तनद नमाज़ ३८)





हुज़ूर (ﷺ)की ग़ैर औरत से बगलगीर होना

थानवी साहब ने अपनी मुरीदनी का ख़्वाब लिखा है कि मुरीदनी ने कहा कि ख्वाब में हुज़ूर ﷺ मुझ से बगलगीर हुए और इस ज़ोर से भींच दिया कि तख़्त सारा हिल गया जिस पर खड़े थे | (अस्सदकुर रूया भाग २ पृष्ट २३)

मोमिनों की अम्मी जान

हज़रत आयशा सिद्दीका (رضی اللہ تعالی عنہا) की शान में गुस्ताखी

एक मुरीद सालिह को मक्शूफ़ (कश्फ़) हुआ कि अहक़र (अशरफ अली थानवी) के घर हज़रत बीबी आयशा आने वाली हैं उन्हों ने मुझ से कहा मेरा (अशरफ अली थानवी) का ज़हन (दिल व दिमाग) उसी तरफ मुन्ताकिल हुआ कि (कमसिन औरत हाथ आएगी) इस मुनासिबत से कि जब हुजूर (صلی اللہ علیہ والہ وسلم) ने हज़रत आयशा (رضی اللہ تعالی عنہا) से निकह किया तो हुज़ूर सन्न (उम्र) शरीफ़ पचास से ज्यादह था हज़रत आयशा बहुत कम उम्र थीं वही किस्सा यहाँ है | (रिसाला अल इमदाद माह सफ़र १३३५ हिजरी)

हज़रत ख़दीजा (رضی اللہ تعالی عنہا) और हज़रत आयशा (رضی اللہ تعالی عنہا) फरयादी बन कर देवबंदी दरवाज़े पर

आज हज़रत आयशा सिद्दीका (رضی اللہ تعالی عنہا) और हज़रत ख़दीजा (رضی اللہ تعالی عنہا) मुफ़्ती किफायतुल्ला देहलवी और अहमद सईद के दरवाज़े पर आयीं और फ़रमाया हम तुम्हारी माएँ हैं किया तुम्हें मालूम नहीं कि आज कुफ्फ़ार ने हमें गालियाँ दी

हैं और देखो वह उम्मुल मोमिनीन आयशा (رضی اللہ تعالی عنہا) दरवाज़े पर तो खड़ी नहीं | (अताउल्लाह शाह बुखारी पृष्ट १९९)

सहाबा को काफ़िर कहने वाला सुन्नी मुस्लमान ही रहता है

देवबंदी के इमाम मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने लिखा है कि जो शख्स सहाबा ए कराम में से किसी की तकफीर करे वह अपने गुनाह ए कबीरा के सबब सुन्नत जमाअत से ख़ारिज ना होगा | (फ़तवा रशीदिया पृष्ट २४८)

मौलवी थानवी की कहानी उन्हीं की जुबानी

मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने फ़रमाया कि एक रोज़ में पेशाब कर रहा था भाई साहब ने आकर मेरे सर पर पेशाब करना शुरू कर दिया, एक रोज़ ऐसा आया कि भाई साहब पेशाब कर रहे थे मैं ने उन के सर पर पेशाब करना शुरू कर दिया | (मल्फूजात ए हकीमुल उम्मत भाग ४ पृष्ट २६०)

मौलवी अशरफी अली थानवी साहब तिथि २१ जमादिल अव्वल १३१५ हिजरी बादे नमाज़ ए जुमा अपनी मजलिस में बे हया औरत कि हया की मिसाल देते हुए इर्शाद फरमाते हैं कि एक शख्स किसी मकान पर उसको दरयाफ्त (तलाश) करने आया तो उसकी बीवी नई ब्याही हुई थी, जुबान से कैसे बोले और बतलाना जरूरी था, इसलिए कहा नहीं, लहंगा उठा कर और

मूत कर और उस पर फांद कर गई जिस से बतला दिया गया कि दरिया पार गया है बस या शर्म की, कि मुंह से ना बोली और शर्मगाह दिखा दी" | (अल अफाजातुल यौमिया भाग २ पृष्ट २८)

यह वाकियात मामूली मौलवी की नहीं देवबंदी फिरका के मुजद्दिद के हैं |

बीवी खफ़ा हो तो उस्तुरे से सफ़ाई

मौलवी अशरफ अली थानवी ने लिखा है कि एक शख्स मेरे पास आया कि मेरी तोंद बढ़ी हुई है नापाकी के बाल किस तरह लूं और कहा कि फुलां आलिम ने मेरे सवाल के जवाब में बतलाया कि बीवी से उतरवा लिया करो और जिन्हूं ने बतलाया है वह बहुत बड़े आलिम हैं इस वजह से वह शख्स परेशान था मैं ने कहा कि यहाँ एक लतीफा है कि कसीफा है वह यह कि अगर बीवी खफ़ा हो जाए और उस्तुरा से साफ कर दे तो बड़ा मज़ा है | (अफाजातुल यौमिया भाग ७ पृष्ट २५९)

थाना भवन में बे हयाइ रहते हैं

यहाँ तो जो बहुत बे हया होगा वह ठहर सकता है वरना अगर ज़रा भी गैरत होगी हरगिज़ न ठहर सकता, कौन ज़िल्लत ग्वारा करे | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ३ पृष्ट ११८)

आ मादा (नारी) नर (पुरुष) आ गया

मौलवी अशरफ अली थानवी ने मज़ा हन फ़रमाया कि आप को एलान कर देना था कि आ मादा (नारी) नर (पुरुष) आ गया | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ४ पृष्ट ३०७)

कुरान शरीफ पर.......करना

एक दफआ (बार) एक बन्दे ने अर्ज किया कि मैं ने ख़्वाब देखा है मेरा अंदेशा है कि मेरा इमान न जाता रहे, हज़रत (थानवी) ने फ़रमाया ! मियां बयान तो करो, उन साहब ने अर्ज किया कि मैंने देखा है कि कुरान शरीफ पर पेशाब कर रहा हूँ, हज़रत (अशरफ अली थानवी) ने फ़रमाया यह तो बहुत अच्छा ख़्वाब है" | (मज़ीदुल मजीद पृष्ट १६६, अल अफाजातुल यौमिया)

देवबंदियों का तबर्रुक

मौलवी अशरफ अली थानवी एक मर्तबा (बार) मौलाना हसन अमरोही के घर बैतूल खला में गए तो मौलाना अहमद हसन ने अपने हाथों से इस्तंजे के ढेले और लोटा बैतूल खला में रखा मौलवी अशरफ अली ने बहुत "पास व पेश की हालत में फ़रमाया कि यह ढेले तो तबर्रुक हो गए अब इस्तंजा का हे से किया जाए | (अशरफ अल सवानिह भाग १ पृष्ट २५७)

मौलवी आशिक इलाही मेरठी, मौलवी कासिम नानोतवी की नानी साहिबा के संबंध में लिखते है" जिस मरीज़ को तीन साल मर्ज़ ए इस्हाल में इस तरह गुजरीं कि करवट बदलना भी दुशवार हो तो इसके संबंध यह खियाल बे मौक़ा न था कि बिस्तर की बदबू धोबी के यहाँ भी ना जाएगी, मगर देखने वालों ने देखा कि गुस्ल के लिए चारपाई से उतारने पर पोतड़े (पखाना लगे हुए कपड़े) निकाले गए जो नीचे रख दिए गए थे तो इन में बदबू की जगह खुशबू और ऐसी निराली महक फूट ती थी कि एक दुसरे को सुंघाते और हर मर्द औरत तअज्जुब करता, चुनांचे

बगैर धुलवाए उन को तबर्रुक बना कर रख लिया गया | (ताज्किरातुल खलील पृष्ट ९६-९७)



सुल्तानुल औलिया कुतुबुल अक़ताब हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर जिलानी (رضی اللہ عنہ) के इसाल ए सवाब के लिए तकसीम की जाने वाली, हलाल व पाकीज़ा कमाई की जायज़ रक़म से खरीदी हुई मिठाई के लिए वहाबी देवबंदी तबलीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी ने यह हुक्म दिया कि इसे खाना नहीं चाहिए बल्कि ज़मीन में दफन कर देना चाहिए | (कमालात ए अशरफिया लेखक मुहम्मद इसा अल्लाहबदी बाब ०१, मल्फ़ूज़ ६२८, पृष्ट १५२)

टिप्पणी: और गंदी चीज़ ताबुरुक बना कर के रख ली

नफ़स को खूब खिलाओ

हज़रत हाजी साहब फ़रमाया करते थे कि नफ़स को खूब खिलाओ पिलाओ | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ३ पृष्ट २८८)

हलवे के लालच में दांतों को जवाब

एक साहब ने हज़रत गंगोही से अर्ज़ किया था कि हज़रत दांत बनवा लीजिए फ़रमाया कि किया होगा दांत बनवा कर फिर बोटियाँ चबानी पड़ेंगी | अब तो दांत ना होने की वजह से लोगों को रहम आता है और नरम - नरम हलवा मिलता है | (अफाज़ातुल यौमिया भाग २ पृष्ट ९४ - क़-स-सुल अकाबिर पृष्ट १४२)

दुआ मिठाई के बगैर दुआ चिपकती नहीं

सब ने मौलाना से दुआ की दरखास्त कि मौलाना ने फ़रमाया : तुम लोग दुआ करो मैं भी दुआ करूंगा मगर मेरी दुआ तो मिठाई के बगैर चिपकती नहीं | (अरवाहे सलासा पृष्ट ८२)

वहाबी सर्कस का मसखरा

मौलवी अशरफ अली थानवी साहब के मल्फूज़त का मजमुआ हसनुल अज़ीज़ में है कि थानवी साहब का एक नौकर था जिस का नाम नियाज़ था, नियाज़ के घर लड़का पैदा हुआ लिहाज़ा वह थानवी साहब से लड़के का नाम क्या रखूँ ? यह पूछता है | थानवी साहब ने जवाब दिया कि तेरा नाम नियाज़ है लिहाज़ा अपने लड़के का नाम प्याज़ रख ले ताकि बाक बेटे का नाम हम वज़न काफ़िया हो जाएँ | (हसनुल अज़ीज़)

नोट: ऐसी लग्व, लिचर, फोहड़, फुहश, बेहूदा, बे तुकी, बे मानी, अहमकाना बातें थानवी साहब के मल्फ़ूज़ और सवानिह हयात से संबंध रखने वाली किताबों में इतनी अधीक तादाद में हैं कि अगर सीरत इन बातों और जुमलों को जमा किया जाये तो एक बहुत बड़ी किताब बन जाएगी |

हाफिज़ (ज़ामिन) साहब को मछली के शिकार का बहुत शौक़ था | एक बार नदी पर शिकार खेल रहे थे किसी ने कहा हज़रत हमें आप ने फ़रमाया **अब की मारों तेरी** | (अरवाहे सलासा पृष्ट २२५ लाहोर)

हाफिज़ जी का क़िस्सा
कि निकाह में बड़ा मज़ा है

एक सिलसिले में मौलाना अशरफ अली थानवी साहब ने फ़रमाया कि मकतब के लड़कों ने हाफिज़ जी को निकाह की तरगीब दी कि हाफिज़ जी निकाह कर लो बड़ा मज़ा है, हाफिज़ जी ने कोशिश कर के निकाह कर किया और रात भर रोटी (योनि के साथ) से लगाकर खाई मज़ा कया खाक आता, सुबह को लड़कों पर खफा होते हुए आए कि सुसरे कहते थे कि बड़ा मज़ा है,बड़ा मज़ा है, हम ने रोटी लगा कर खाई हमें तो ना नमकीन मालूम हुई न मीठी ना कड़वी, लड़कों ने कहा हाफिज़ मारा करते हैं, आई शब् (रात) हाफिज़ जी ने बे चारी को खूब ज़द कोब किया दे जूता दे जूता, तमाम महल्ला जाग उठा और जमा हो गया और हाफिज़ जी को बुरा भला कहा, फिर सुबह को आए और कहने लगा कि ससरों ने दक कर दिया, रात हम ने

मारा भी कुछ भी मज़ा न आया और रुसवाई भी हुई, तब लड़कों ने खुल कर हक़ीक़त बयान की कि मारने से मुराद यह है अब जो शब् (रात) आई तब हाफिज़ जी को हक़ीक़त मुन्कशिफ हुई, सुबह को जो आए तो मूंछ का एक एक बाल खिल रहा था और खुशी में भर हुए थे "| (मल्फूज़ाते हकीमुल उम्मत भाग २० पृष्ट ९४)


ملفوظات حکیم الامت
جلد 20
ادارہ تالیفات اشرفیہ

सर पर इमामे के बजाए
औरत का पाएजामा

मशहूर है कि कोई बुज़ुर्ग थे, उनकी शादी हुई, पहली रात (शब) थी, कपड़े क्यूँ ना उतारे जाते सुबह सवेरे जब उठ कर बाहर आने लगे तो अँधेरे में गलती से इमामा समझ कर बीवी का पायजामा सर से लपेट लिया बाहर निकले तो बड़ा मखूल हुआ | अफाज़तुल यौमिया भाग ९ पृष्ट २५३ - अशरफुल लताइफ़ पृष्ट १७०)

यक़ीनन यह बुज़र्ग देवबंदी ही होंगे इस लिए कि इन के यहाँ ग़ैर देवबंदी तो बुज़ुर्ग हो ही नहीं सकता खुद थानवी साहब लिखते हैं कि अहले बिद-अत और गैरल्लाह की इबादत करने वालों की मिसाल ऐसी है जैसे शैतान की | (मज़ीदुल मजीद पृष्ट ७३ - मल्फूजाते हकीमुल उम्मत भाग १५ पृष्ट १७६)

ब्याह का मज़ा

मैं ने अपने बचपन में एक छोटी से किताब देखी उस में लिखा था कि किसी लड़की ने अपनी सहेली से दरयाफ्त (पूछा) किया कि शादी होने के बाद क्या होता है वह हमें भी बतला दो | उस शादी शुदा ने जवाब दिया कि तुम जब मुझ जैसे हो जाओ गी खुद जान लो गी |

ब्याह जूँही जब तुम्हारा होवे गा
जब मज़ा मालूम सारा होवे गा

(मज़ीदुल मजीद पृष्ट ६९ - मल्फूजाते हकीमुल उम्मत भाग १५ पृष्ट १७३ - अफाज़ातुल यौमिया भाग १० पृष्ट २४०)

अशरफ अली थानवी
अंग्रेजों का वजीफा ख़ोर

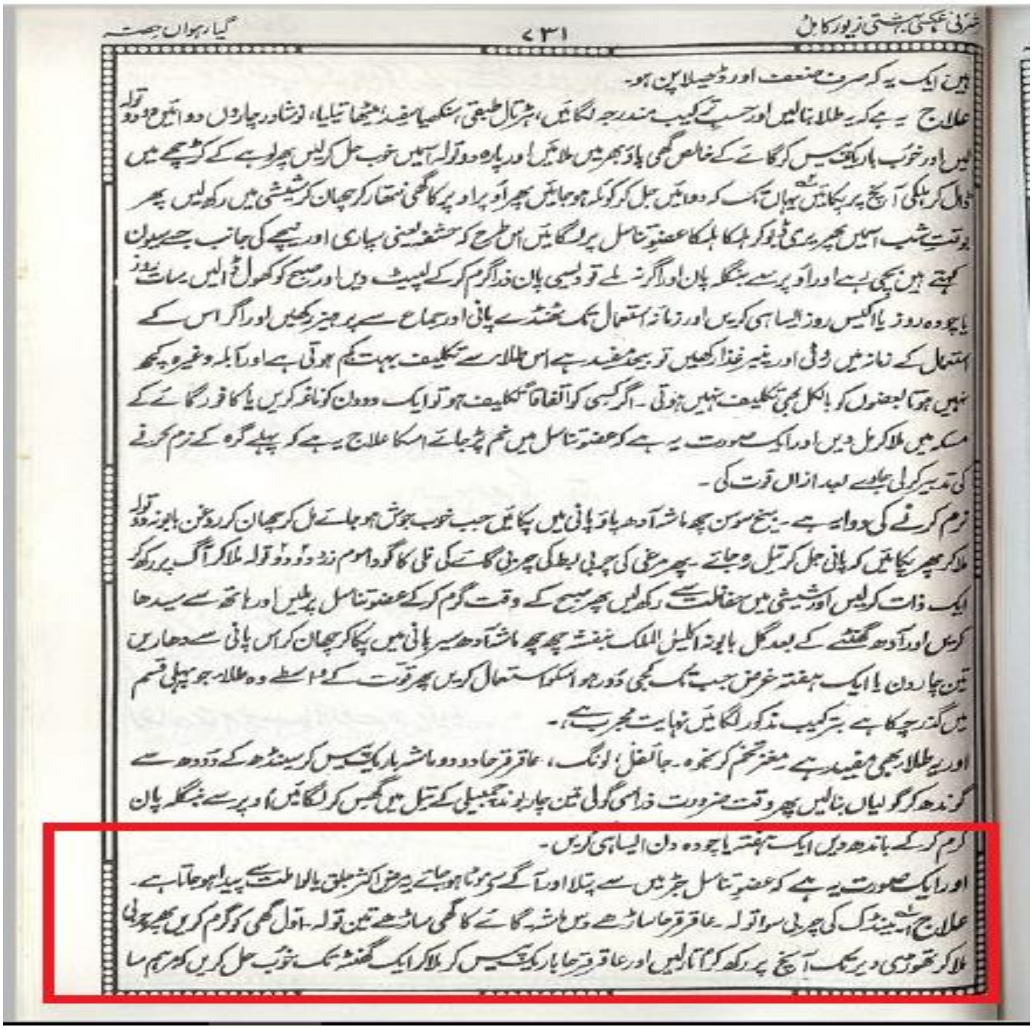
हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी साहब हमारे आप के मुस्लिम बुज़ुर्ग व पेशवा थे इन के संबंध में कुछ लोगों को यह कहते हुए सुना गया है कि उन को ६०० रूपया माहवार हुकूमत की जानिब से दिए जाते थे| (अल सद्रैन पृष्ट ९)

टिपण्णी : उस समय सिपाही की तनखाह ७०० से ९०० रूपए होती थी |

देवबंदी बच्चीयों के लिए
थानवी साहब का ख़ास तुहफ़ा

बेहश्ती ज़ेवर मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने सिर्फ औरतों के लिए लिखी थी लेकिन इस में कुछ तिब्बी चुट्किले भी दर्ज फरमाएं हैं: मुलाहिजा करतें हैं |

१. एक सूरत यह है कि अज़व तानासुल (लिंग) जड़ में पतला और आगे से मोटा हो जावे | (बेहश्ती ज़ेवर भाग ११ पृष्ट ७३१)



حرفی عکسی بہشتی زیور کامل　　۷۳۱　　گیارہواں حصہ

میں گذر چکا ہے بترکیب مذکور لگائیں نہایت مجرب ہے۔

اور یہ طلا بھی مفید ہے مغز تخم کرنجوہ۔ جائفل، لونگ، عاقرقرحا دو دو ماشہ باریک پیس کر سینڈھ کے دودھ سے گوندھ کر گولیاں بنالیں پھر بوقت ضرورت ذرا سی گولی تین چار بوند چنبیلی کے تیل میں گھس کر لگائیں اوپر سے بنگلہ پان

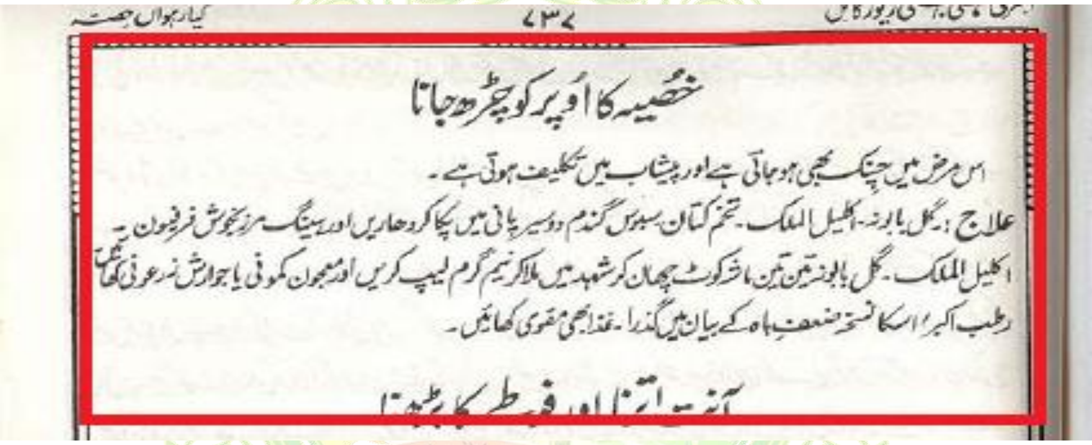
گرم کر کے باندھ دیں ایک ہفتہ یا چودہ دن ایسا ہی کریں۔

اور ایک صورت یہ ہے کہ عضو تناسل جڑ میں سے پتلا اور آگے سے موٹا ہو جائے یہ مرض اکثر جلق یا لواطت سے پیدا ہوتا ہے۔

علاج ہینڈرک کی چربی سوا تولہ۔ عاقرقرحا ساڑھے دس ماشہ گائے کا گھی ساڑھے تین تولہ۔ اول گھی کو گرم کریں پھر چربی ملا کر تھوڑی دیر تک آنچ پر رکھ کر اتار لیں اور عاقرقرحا باریک پیس کر ملا کر ایک گھنٹہ تک خوب حل کریں کہ مرہم سا

२. ख़्वाहिशे नफ्सनी बहाल खुद हो मगर अज़व तानासुल (लिंग) में कोई नुक़्स पड़ जाये इसकी इस वजह से संभोग पर कुदरत (ताक़त) न हो,इसकी कई सूरतें (वजूहात) हैं एक यह कि सिर्फ जुअफ और ढीला पर हो | (बेहश्ती ज़ेवर भाग ११ पृष्ट ७३०- ७३१)

३. खुस्या का उपर चढ़ जाना इस मर्ज़ (बिमारी) से चिनक भी होती है | (बेहश्ती ज़ेवर भाग ११ पृष्ट ७३७)



گیارہواں حصہ   ۷۳۷

خصیہ کا اوپر کو چڑھ جانا

اس مرض میں چنک بھی ہو جاتی ہے اور پیشاب میں تکلیف ہوتی ہے۔

علاج: گل بابونہ۔ اکلیل الملک۔ تخم کتان۔ سبوس گندم دو سیر پانی میں پکا کر دھاریں اور سینگ مرزنجوش فرفیون۔ اکلیل الملک۔ گل بابونہ تین تین ماشہ کوٹ چھان کر شہد میں ملا کر نیم گرم لیپ کریں اور معجون کمونی یا جوارش زرعونی کھائیں رطب اکبر اسکا نسخہ ضعف باہ کے بیان میں گذرا۔ غذا بھی مقوی کھائیں۔

नोट: देवबंदी मौलवी जब अज़व मखसूस (लिंग) के मुख्तलिफ तसव्वुरात व हालत के पाठ अपनी देवबंदी दो शिजाओं (लड़कियों) को पढ़ाते होंगे तो फिर इस की तशरीह करते हुए शायद .... और जब लड़कियाँ इस किताब का मुताला करती होंगी तो खियाल ही खियाल में अपने महबूब के इन हिस्सों का तसव्वुर कर के कहाँ पहुँच जाती होगी | याद रहे कि बेहश्ती ज़ेवर सिर्फ लड़कियों के लिए लिखी है और आज ताक्वितुल इमान के बाद बेहश्ती ज़ेवर को देवबंदी के हर घर में होना जरूरी समझा जाता है तजर्बा कर लें कि देवबंदी हो और उस के

घर में यह दो किताबें न हूँ यह हो ही नहीं सकता बल्कि हर देवबंदी अपनी लड़की को जहेज़ में बहश्ती ज़ेवर जो कई रंगों में छापी गई है देना लाजिम समझते हैं |

थानवी की फुहश गोई से रगबत

मौलवी अशरफ अली थानवी साहब लतीफों बल्कि बेहूदा-बेहूदा और फुहश-फुहश हिकायतों से भी वह नताइज (सीख) और नसाइह (नसीहत) मुस्तन्बत (बयान) फरमाते कि सुबहानल्लाह.... (अशरफुल सवानिह भाग १ पृष्ट)

थानवी के मामू की कहानी थानवी साहब की ज़ुबानी

मौलाना अशरफ अली साहब के मामू ने वाअज़ (बयान) कहने की यह शर्त लगाईं कि" मैं बिलकुल नंगा हो कर बाज़ार से निकलों इस तरह कि एक शख्स तो आगे से मेरे अज़व तनासुल (लिंग) को पकड़ कर खींचें और दोसरा पीछे से ऊँगली करे, साथ में लड़कों की फौज हो और वह शोर मचाते जाएँ, **भड़वा है रे, भड़वा है रे, भड़वा है रे|** (अल अफाज़ातुल यौमिया भाग ९ पृष्ट २१२)

लड़की नहीं बल्कि लड़के से इश्क़

उलमा देवबंद के अकाबिर उलमा के किरदार के फोहड़ पर के संबंध से काफी मुताला फ़रमाया | अकाबिर हूँ या असागिर, उलमा ए देवबंद के जमाअत में अधिकतर ऐसे मुल्लाओं की पाई जाती है जो दिल से दिल अटकने और मिलाने के मुआमले में

फ़ौरन दिल को पानी कर देते हैं | मौलवी कासिम नानोतवी, बानी ए दारुल उलूम देवबंद के शागिर्द रशीद मौलवी मंसूर अली साहब मुरादाबादी का ऐसा एक ग़ैर फितरी कारनामा खुद उनकी ज़ुबानी सुने | इस वाकिया को वहाबी, देवबंदी के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी ने किताब" हिकायते औलिया" में नक़ल फ़रमाया है |

हिकायत: हज़रत वालिद साहिब मरहूम ने फ़रमाया कि मौलाना मंसूर अली खान मरहूम मुरादाबादी हज़रत नानोतवी रहमतुल्लाह के तलामिज़ा (शागिर्द) में से थे | तबीअत के बहुत पुख्ता थे इसलिए जिधर माइल होती थी पोख्तगी और इनहिमाक के साथ उधर झुकते थे | उन्होंने ने अपना वाकिया खुद भी मुझ से नक़ल फ़रमाया कि मुझे **एक लड़के से इश्क हो गया** और इस कदर मुहब्बत ने गलबा पाया कि रात दिन उसी की तसव्वुर में गुजरने लगे मेरी अजीब हालत हो गई | तमाम कामों में अख्तिलाल हो ने लगा | हज़रत की फिरासत ने भांप लिया लेकिन सुबहानल्लाह तरबीयत व निगरानी इसे कहते हैं कि निहायत बे तकल्लुफी के साथ हज़रत ने मेरे साथ दोस्ताना बरताव शुरू किया और इस क़दर बढ़ा या कि जैसे दो यार आपस में बे तकल्लुफ दिल लगी किया करते हैं, यहाँ तक खुद ही इस मुहब्बत का ज़िक्र छेड़ा, फ़रमाया कि हाँ भाई **वह (लड़का) तुम्हारे पास कभी आते भी हैं या नहीं** मैं शर्म व हिजाब से चुप रहा तो फ़रमाया कि नहीं भाई यह हालात तो इंसान ही पर आते हैं इस में छुपाने की क्या बात है गरज इस तरीक से मुझ से गुफ्तगू की कि मेरी ही ज़ुबान से **उस (लड़के) की**

मुहब्बत का इक़रार करा लिया | (हिकयात ए औलिया लेख़क मौलवी अशरफ अली थानवी प्रकाशित कुतुब खाना नाइमिया देवबंद हिकायत नम्बर २५१ पृष्ट २६४)

हजरत (मौलवी खलील अहमद) का एक जाकिर शागिल खादिम एक मदरसा में मुद्दरिस (उस्ताद) थे उन को **एक अमरद (बे-रेश) लड़का से ताअल-लुक हो गया उस की सूरत देखे बगैर चैन न आता था |** (तज़किरा तुल खलील पृष्ट ४९)

थानवी को अपने नफस पर इतमाद नहीं

मैं ने अपने लोगों को मुमानियत (मना) कर दी थी कि तसनीफ के कमरे में जहाँ में तन्हा होता हूँ किसी नो उम्र (अमरद) **लड़के को ना भेजा करें मुझे अपने नफस पर एतिमाद (कंट्रोल) नहीं |** (मजलिसे हकीमुल उम्मत पृष्ट ५७)

बअज़ अहले इल्म देवबंदी के नज़दीक जन्नत में लवातत का अमल

बअज़ अहले इल्म ने लिख दिया है कि जन्नत में लवातत (लड़कों के साथ गंदा काम करना) होगी | हालाँकि या फअल (काम) क़बीह (बहुत गंदा) है इस लिए इस कि इजाज़त वहां भी नहीं हो सकती, फिर फ़रमाया जिन लोगों की तबीअत उसी तरफ़ माइल है वह दुनिया में तो वजह ए तक्वा इस फअल (काम) से बचे रहे मगर उन्हों ने वहाँ के लिए गूंजाइश निकल ली | (हसनुल अज़ीज़ पृष्ट ८९)

ख़ूबसूरत लड़के (अमरद) को देखना

लखनऊ के अतराफ़ में एक मुक़ाम पर एक आलिम रहते थे वह **एक लड़के पर आशिक़ थे** और उस को बहुत मुहब्बत से पढ़ाते थे | जब वालिद साहब को उस के हुस्न का क़िस्सा मालूम हुआ | वह हस्बे आदत उसे देखने चल दिए ..... जिस वक़्त वालिद साहब पहुंचे हैं तो उस वक़्त लड़का कोठरी के अन्दर था वालिद साहब असबाब रख कर उन आलिम से मुसाफहा करने गए | जब यह सह दरी में पहुंचे तो वह लड़का उन को देख कर सह दरी में से निकला | वालिद साहब ने मुसाफहा के लिए (उन आलिम साहब से) हाथ बढाए थे कि उन कि नज़र उस लड़के पर पड़ गई | जिस से मुसाफहा तो रह गया और वालिद साहब उस लड़के को देखने में मुस्तगर्क हो गए | उन आलिम ने जब यह देखा कि यह मुसाफहा करना चाहते थे मगर यह मुसाफाहा नहीं कर सके तो उन्होंने मुंह फेर कर अपने पीछे देखा तो उनको मालूम हुआ कि लड़का खड़ा है और यह उस को देखने में मसरूफ हैं | जब उनको मालूम हुआ कि यह हज़रत भी हमारे माह रंग मालूम होते हैं तो उन्हों ने उस लड़के को आवाज़ दी और कहा कि इन साहब से मुसाफहा करो | (अरवाहे सलासा भाग ५ पृष्ट २३४)

औरत से नज़र बाज़ी

एक मौलवी साहब ने अपने एक खादिम से अपना वाकिया ब्यान किया | उस खादिम ने मुझ से रिवायत की, कि मैं ने

एक बहली का किराया किया जब बहली शहर के किनारे पहुंची तो वहाँ उस बहली का मकान था वहां उस ने बहली को रोका उसकी बीवी उस को खाना देने आई वह बहलीबान इस क़दर बद शक्ल था कि शायद ही कोई और दूसरा ऐसा हो और वह ऐसी हसीन कि शायद ही कोई दूसरी हो **मगर उस वक़्त उस को देख रहा था कि या मेरी तरफ़ नज़र करती है या नहीं ।**

(अफाज़ातुल यौमिया भाग ४ पृष्ट २६८)

जिस का दिल दिलबर में हो कब उस को बस आती है नींद
करवटें ही लेते साफ़ उड़ जाती है नींद

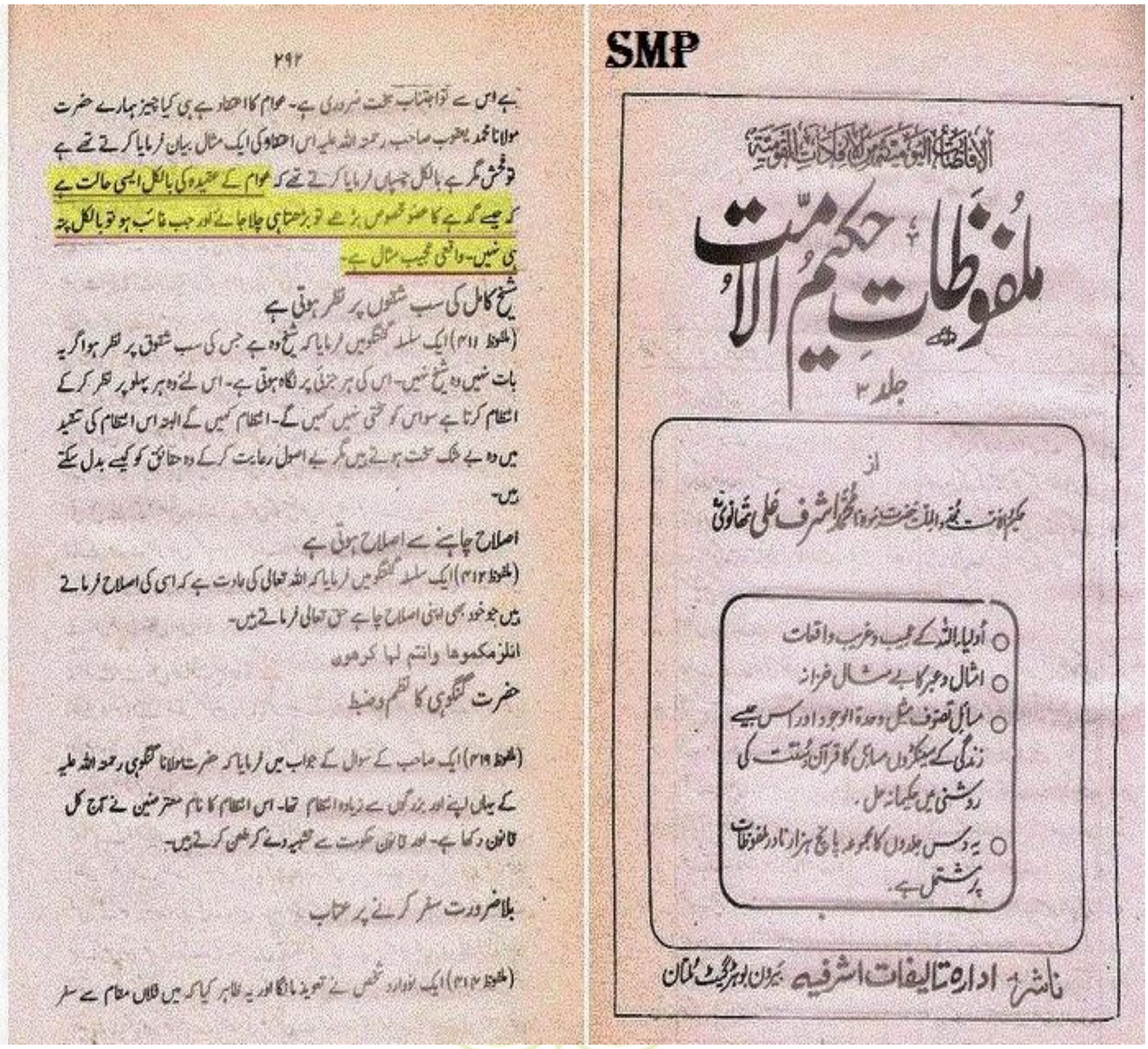
(अफाज़ातुल यौमिया भाग २ पृष्ट १०८)

अवाम का आस्था मिस्ल गधे का लिंग

आ-मतुल मुस्लिमीन जिन को अवाम कहा जाता हैं उन की तादाद बे शुमार है | अवाम के आस्था (इत्तिकाद) का मजाक और हंसी उड़ाते हुऐ थानवी साहब ने अवाम के आस्था को गधे के लिंग से मिसाल दी है | लिखते हैं "अवाम के इत्तिकाद (आस्था) है ही क्या चीज़, हमारे मौलाना मुहम्मद याकूब साहब रहमतुल्लाह इस इत्तिकाद (आस्था) की एक मिसाल बयान फ़रमाया करते थे, है तो फुहश मगर है बिलकुल चस्पाँ, फ़रमाया करते थे कि अवाम के अक़ीदे की बिलकुल ऐसी हालत है जैसे गधे का अज़व मखसूस (लिंग), बढ़े तो बढ़ता ही चला जाए और गायब हो तो बिलकुल पता ही नहीं, वाक़ई अजीब मिसाल है " |

(अल अफाज़ातुल यौमिया मिनल अफादातुल कौमिया (थानवी साहब के मल्फूज़) प्रकाशित मक्तबा ए दानिश देवबंद मल्फूज़ नम्बर ३४४ , भाग

२ किस्त २ पृष्ट ३५ / हसनुल अज़ीज़ लेखेक मौलवी अशरफ थानवी भाग ३ हिस्सा ३ किस्त १४, प्रकाशित तलिफत ए अशरफिया थाना भवन जिला मुज़फ्फर नगर)



۲۹۲

ہے اس سے تو اجتناب سخت ضروری ہے۔ عوام کا اعتقاد ہے ہی کیا چیز ہمارے حضرت مولانا محمد یعقوب صاحب رحمۃ اللہ علیہ اس اعتقاد کی ایک مثال بیان فرمایا کرتے تھے ہے تو فحش مگر ہے بالکل چسپاں فرمایا کرتے تھے کہ عوام کے عقیدہ کی بالکل ایسی حالت ہے کہ جیسے گدھے کا عضو مخصوص بڑھے تو بڑھتا ہی چلا جائے اور جب غائب ہو تو بالکل پتہ ہی نہیں۔ واقعی عجیب مثال ہے۔

شیخ کامل کی سب شقوں پر نظر ہوتی ہے

(ملفوظ ۲۱۱) ایک سلسلہ گفتگو میں فرمایا کہ شیخ وہ ہے جس کی سب شقوق پر نظر ہو اگر یہ بات نہیں وہ شیخ نہیں۔ اس کی ہر جزئی پر نگاہ ہوتی ہے۔ اس لئے وہ ہر پہلو پر نظر کر کے انتظام کرتا ہے سو اس کو سختی نہیں کہیں گے۔ انتظام کہیں گے البتہ اس انتظام کی تنقید میں وہ بے شک سخت ہوتے ہیں مگر بے اصول رعایت کر کے وہ حقائق کو کیسے بدل سکتے ہیں۔

اصلاح چاہنے سے اصلاح ہوتی ہے

(ملفوظ ۲۱۲) ایک سلسلہ گفتگو میں فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کی عادت ہے کہ اسی کی اصلاح فرماتے ہیں جو خود بھی اپنی اصلاح چاہے حق تعالیٰ فرماتے ہیں۔
انلزمکموھا وانتم لہا کرھون

حضرت گنگوہی کا نظم وضبط

(ملفوظ ۲۱۹) ایک صاحب کے سوال کے جواب میں فرمایا کہ حضرت مولانا گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں اپنے اور بزرگوں سے زیادہ انتظام تھا۔ اس انتظام کا نام معترضین نے آج کل قانون رکھا ہے۔ اور قانون حکومت سے تشبیہ دے کر طعن کرتے ہیں۔

بلا ضرورت سفر کرنے پر عتاب

(ملفوظ ۲۱۴) ایک نووارد شخص نے تعویذ مانگا اور یہ ظاہر کیا کہ میں فلاں مقام سے سفر

SMP

الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ

ملفوظات حکیم الامت

جلد ۳

از

حکیم الامت مجدد الملت حضرت مولانا محمد اشرف علی تھانوی

- اولیاء اللہ کے عجیب وغریب واقعات
- امثال وعبر کا بے مثال خزانہ
- مسائل تصوف مثل وحدۃ الوجود اور اس جیسے زندگی کے سینکڑوں مسائل کا قرآن وسنت کی روشنی میں حکیمانہ حل۔
- یہ دس جلدوں کا مجموعہ پانچ ہزار نادر ملفوظات پر مشتمل ہے۔

ناشر ادارہ تالیفات اشرفیہ بیرون بوہڑ گیٹ ملتان

अशरफ अली थानवी साहब लिखते हैं कि एक शख्स किसी माकन में अन्दर से कुण्डी लगा कर किसी औरत से जिना कर रहा था लोगों ने दस्तक दी तो अन्दर से कहता है मियां यहाँ जगह कहाँ है यहाँ तो खुद आदमी पर आदमी पड़ा है | (अल अफाज़ातुल यौमिया मिनल अफादातुल कौमिया (थानवी साहब के मल्फूज़) पृष्ट ४७)

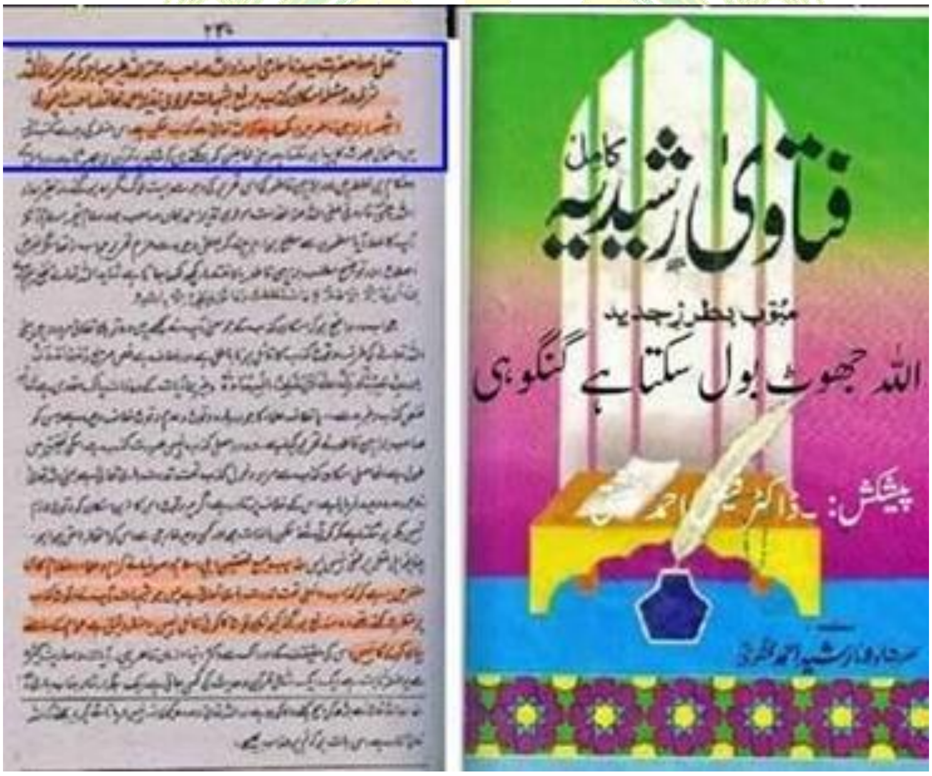
कमर बंद खोल देना

आप (मौलवी कासिम नानोतवी, बानी ए दारुल उलूम देवबंद) बच्चों से बहुत हँसी मजाक फरमाते थे उन के कमर बंद खोल दिया करते थे | (सवानिह कासमी भाग १ पृष्ट ४४४)

कुछ कुफ्री अकीदे

अल्लाह झूट बोल सकता है

मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि अल्लाह (سبحانه وتعالى) झूट बोल सकता है| (फ़तवा रशीदिया कामिल)



अल्लाह (سبحانه وتعالى) को पहले से इल्म नहीं होता

मौलवी हुसैन अली लिखते हैं कि अल्लाह (سبحانه وتعالى) को पहले से इल्म नहीं होता कि बंदा क्या करेंगे जब बन्दे करते हैं तो अल्लाह को इल्म (मालूम) होता है | (तफ़सीर बलगतुल हैरान पृष्ट १५७-१५८)

अल्लाह की शान में गुस्ताखी

बानी ए देवबंद मौलवी कासिम नानोतवी ने बचपन में ख़्वाब देखा था... गोया कि अल्लाह (سبحانه وتعالى) की गोद में बैठा हुवा हूँ | (सवानिह कासमी भाग १ पृष्ट १३२, मशाइख ए देवबंद पृष्ट १४३)

देवबंदी मौलवी अशरफ अली थानवी में अल्लाह (سبحانه وتعالى) को मकर करना (फ़रेब करने वाला लिखा है | (सुरह आले इमरान आयत ५४) معاذالله



हुज़ूर अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) का इल्म

मौलवी खलील अहमद अम्बेठ्वी ने लिखा है कि शैतान और मल्कुल्मौत का इल्म हुज़ूर अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) से ज्यादह है | (बराहीन ए काती आ पृष्ट ५१)

देवबंदियों के सरदार मौलवी अशरफी अली थानवी ने लिखा है कि हुज़ूर अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) को अल्लाह ने जैसा इल्म और जितना इल्म गैब अता फ़रमाया है वैसा इल्म जानवरों, पागलों और बच्चों को भी हासिल हैं | (हिफजुल इमान पृष्ट १३)



۱۳

تاویل سے ان الفاظ کا اطلاق جائز ہو تو خالق اور رازق وغیرہما بتاویل اسناد الی السبب کے بھی اطلاق کرنا جائز نہ ہوگا کیونکہ آپ ایجاد اور بقائے عالم کے سبب ہیں بلکہ خدا ... بمعنی مطاع کہنا بھی درست ہوگا اور جس طرح آپ پر عالم الغیب کا اطلاق اس تاویلِ خاص سے جائز ہوگا اسی طرح دوسری تاویل سے اس صفت کی نفی حق جل و علا شانہ سے بھی جائز ہوگی یعنی علم غیب بالمعنی الثانی بواسطہ اللہ تعالیٰ کے لئے ثابت نہیں۔ پس اگر اپنے ذہن میں معنی ثانی کو حاضر کرکے کوئی کہتا پھرے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عالم الغیب ہیں اور حق تعالیٰ شانہ، عالم الغیب نہیں۔ (نعوذ باللہ منہ) تو کیا اس کلام کو منہ سے نکالنے کی کوئی عاقل متدین اجازت دینا گوارا کر سکتا ہے؟ اس بنا پر تو بانوا فقیروں کی تمام تر بے ہودہ صدائیں بھی خلاف شرع نہ ہوں گی تو شریعت کیا ہوئی بچوں کا کھیل ہوا کہ جب چاہا بنا لیا جب چاہا مٹا دیا۔ پھر یہ کہ آپ کی ذات مقدسہ پر علم غیب کا حکم کیا جانا اگر بقول زید صحیح ہو تو دریافت طلب یہ امر ہے کہ اس غیب سے مراد بعض غیب ہے یا کل غیب، اگر بعض علوم غیبیہ مراد ہیں تو اس میں حضور ہی کی کیا تخصیص ہے، ایسا علم غیب تو زید و عمرو بلکہ ہر صبی (بچہ) و مجنون (پاگل) بلکہ جمیع حیوانات و بہائم کے لئے بھی حاصل ہے کیونکہ ہر شخص کو کسی نہ کسی ایسی بات کا علم ہوتا ہے جو دوسرے شخص سے مخفی ہے تو چاہیئے کہ سب کو عالم الغیب کہا جائے۔ پھر اگر زید اس کا التزام کرے کہ ہاں میں سب کو عالم الغیب کہوں گا تو پھر غیب کو منجملہ کمالات نبویہ کیوں شمار کیا جاتا ہے جس امر میں مومن بلکہ انسان کی بھی خصوصیت نہ ہو وہ کمالاتِ نبویہ سے کب ہو سکتا ہے۔ اور التزام نہ کیا جاوے تو نبی غیر نبی میں وجہ فرق بیان کرنا

حفظ الایمان

مع

بسط البنان و تغییر العنوان

(مصنفہ)

حکیم الامت حضرت مولانا محمد اشرف علی صاحب

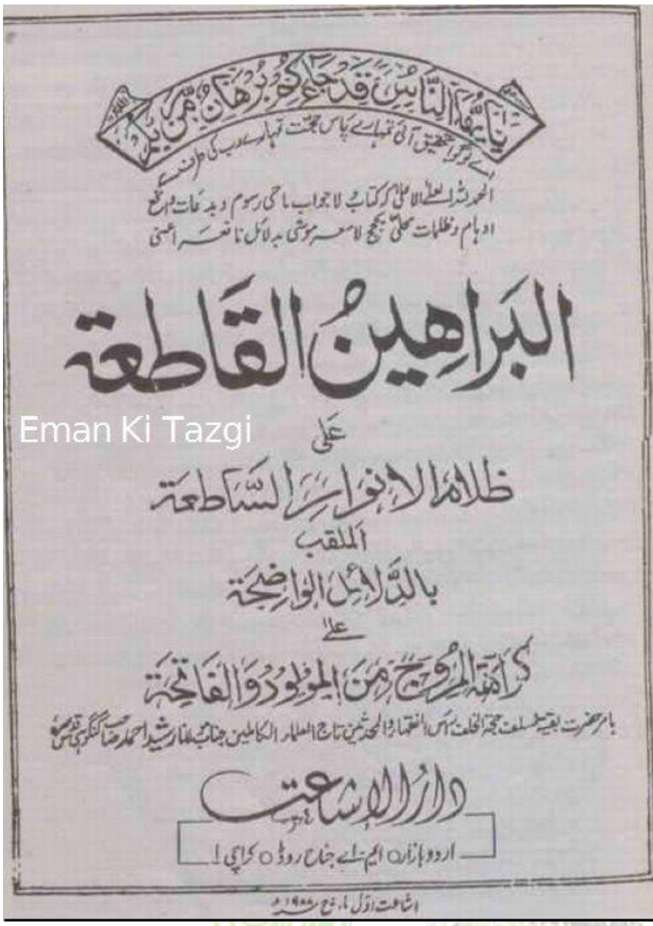
(ناشر)

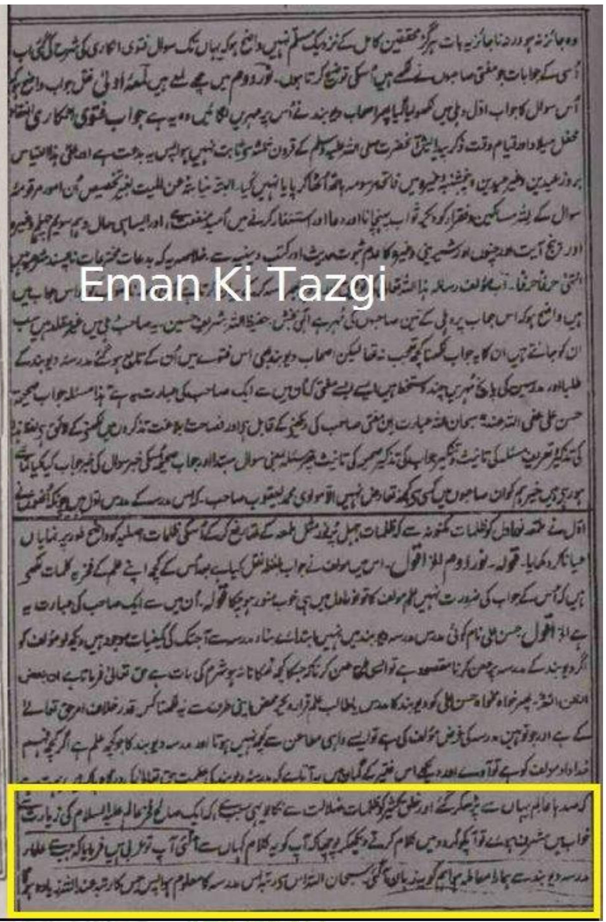
قدیمی کتب خانہ

مقابل آرام باغ کراچی ا

हुज़ूर उर्दू जुबान देवबंद के उलमा से सीखी

मौलवी खलील अहमद अम्बेठ्वी ने लिखा है कि हुज़ूर को देवबंद के उलमा के ताअल्लुक़ से उर्दू जुबान आई | (बराहीने कातिआ पृष्ट २६)





देवबंदियों को देवबंद नाम से बदबू आती है

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी लिखते हैं कि मेरे वालिद साहब ने देवबंदी लिखने से मना फ़रमाया क्यूंकि गिरोह बंदी की बदबू आती है | (मसलक ए देवबंद पृष्ट २०)



۲۰

لیکن جب ہم دارالعلوم میں مدرس بن گئے تو والد صاحبؒ نے ہمیں اپنے نام کے ساتھ دیوبندی لکھنے سے منع فرمادیا اور فرمایا کہ: ''اس سے فرقہ واریت اور گروہ بندی کی بو آتی ہے''۔

یہ وہی بات تھی جو رسول اللہ ﷺ نے اس موقع پر فرمائی تھی جب ایک مہاجر کا ایک انصاری سے کچھ نزاع ہو گیا اور مہاجر نے انصاری کو مارا، تو انصاری نے کہا:

''یاللانصار''

اور مہاجر نے کہا:

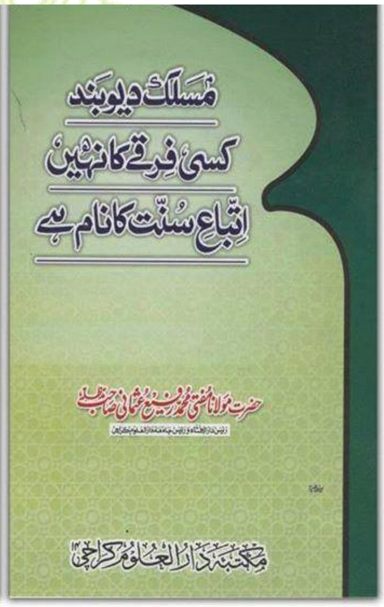
''یاللمھاجرین''

یعنی انصاری نے انصار کو اپنی مدد کیلئے پکارا اور مہاجر نے مہاجرین کو اپنی مدد کیلئے پکارا۔ رسول اللہ ﷺ نے یہ کلمات سنے تو اس پر ناراضگی کا اظہار فرمایا اور فرمایا:

''دعوھا فانھا منتنة''

یہ کلمات چھوڑ دو، یہ بدبودار ہیں۔

(صحیح بخاری جلد ۲، باب قولہ لئن رجعنا الی المدینہ لیخرجن الاعزّمنھا الاذل، ص ۹۲۷)۔



अब दारुल उलूम देवबंद के हकीक़त पढ़ें कि वहाँ पर कैसी तालीम दी जाती है जिस पढ़ कर आप खुद ही समझ जायेगें |

दारुल उलूम देवबंद के छात्रों की शरारतें

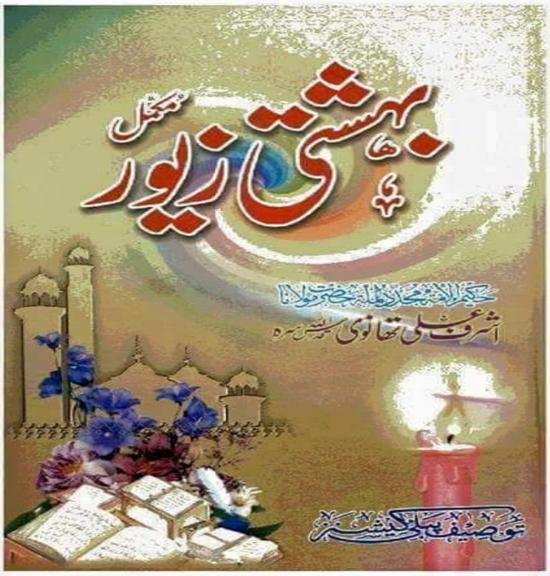
देवबंदी मौलवी मुनाजिर अहसान गिलानी ने देवबंद के त-ल-बा (छात्रों) की मुख्तलिफ (विभिन्न) शरारतों का ज़िक्र (उल्लेख) किया है | हम यहाँ सिर्फ खौफ ए तवालत की वजह से दो चीज़ें नक़ल करते हैं | हमारी त ल बा की यह टोली इस किस्म की हरकात भी किया करती थी यानी गोश्त (मास) की झल्ल्ली में पटास वाले पटाखे की गोलियों को लपेट कर कुत्तों के आगे डाल देती जिस में पत्थर का टुकड़ा भी महफूज़ कर दिया जाता, कुत्ते ग़रीब गोश्त की लालच में पूरा मुंह उन पर मारते | दांतों के नीचे दबने के साथ ही यह गोली मुंह के अन्दर फटती और एक हैबतनाक आवाज़ आती | ग़रीब एक अजीब मुसीबत में मुब्तला हो जाता इस तरह चाँदनी रातों में यही टोली यह हरकत भी किया करती थी कि कस्बा में इधर उधर गधे जो मारे मारे फिरते, उन को पकड़ते और दुम उठा कर पिसी हुई सियाह मिर्चों का सफूफ़ (पाउडर) उस के (शर्मगाह) अन्दर डाल दिया करते | तालिब इ इल्म उस पर सवार हो जाते और मिर्चों की वजह से गधों पर एक हाल तारी हो जाता कि लाख उन को रोकते मगर वह भागते चले जाते थे और खर सवारों का यह गिरोह अपनी अपनी शह सवारीयों के कमालात दिखाता | (इहाता दारुल उलूम में बीते हुए दिन पृष्ट ९-१९८ प्रकाशित मुल्तान)

गैर औरत से संभोग

मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने देवबंदी लड़कियों के लिए लिखी गई मशहूर व मारूफ किताब **बेहश्ती ज़ेवर** में लिखते हैं कि अपनी बीवी समझ कर गैर औरत से सुहबत कर ली, कुछ गुनाह नहीं | (बेहश्ती ज़ेवर भाग ४ पृष्ट १६८)

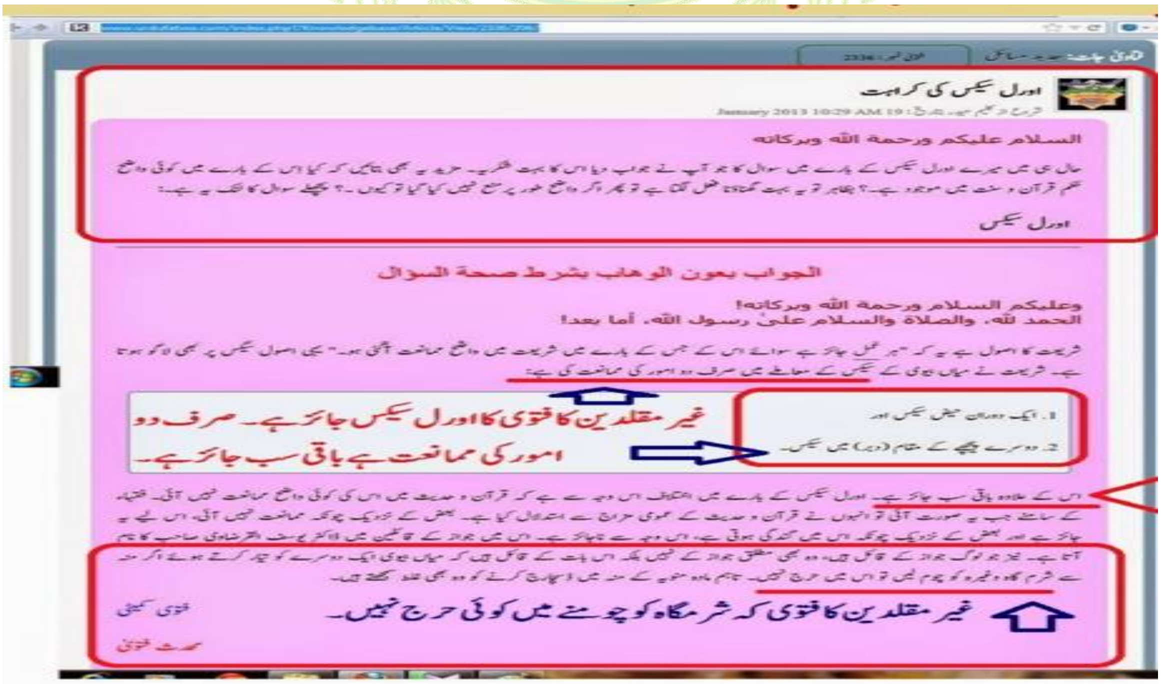

بہشتی زیور 168 حصہ چہارم

مہر مثل کا بیان



गैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक

औरत के मुंह में (लिंग) डालना जायज़ है


اورل سیکس کی کراہت

السلام علیکم ورحمة الله وبرکاته

الجواب بعون الوهاب بشرط صحة السؤال

وعلیکم السلام ورحمة الله وبرکاته!

الحمد لله، والصلاة والسلام علی رسول الله، أما بعد!

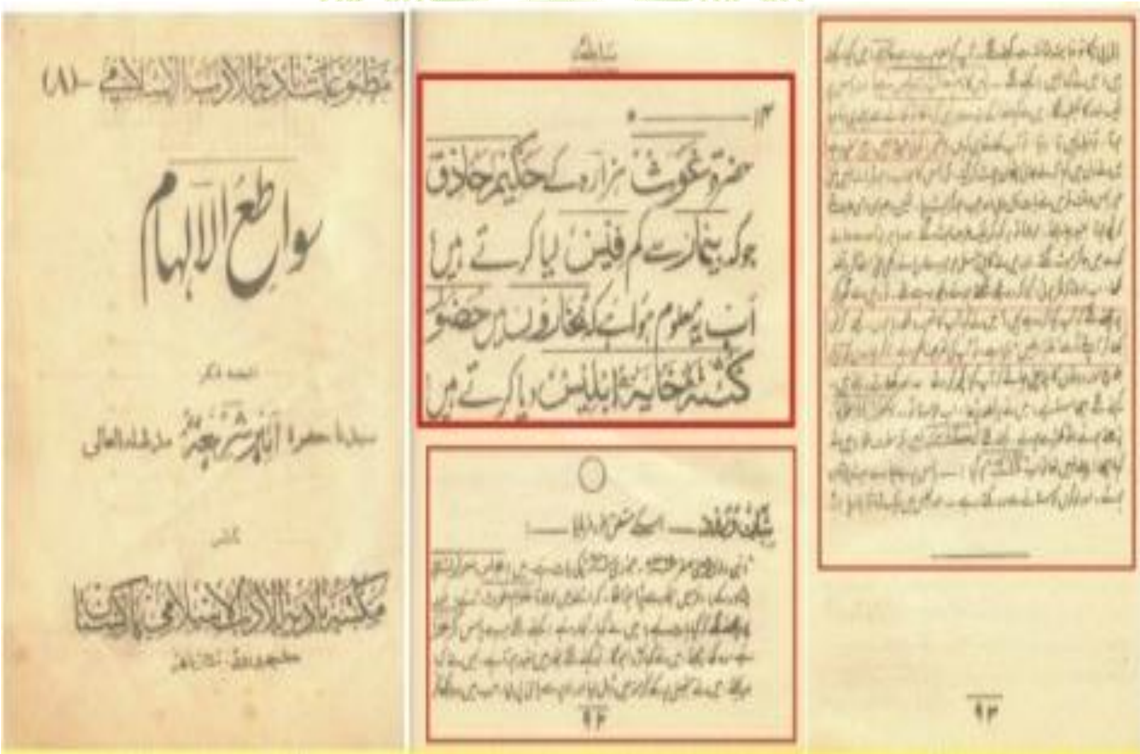
غیر مقلدین کا فتوی کا اورل سیکس جائز ہے۔ صرف دو امور کی ممانعت ہے باقی سب جائز ہے۔

غیر مقلدین کا فتوی کہ شرمگاہ کو چومنے میں کوئی حرج نہیں۔

देवबंदियों के वाहियापन और उरूज पर

मौलवी गुलाम गौस देवबंदी का अपने अमीरे शरीअत आता उल्लाह बुखारी के मुंह में खा या ए इब्लीस (शैतान का लिंग) का नुस्खा डाल दिया देवबंदी के अमीरे शरीअत ने सब जान लेने के बाद भी गैरत न खाई और ना उलटी कि बल्कि क़हक़हा लगाया खा या ए इब्लीस के म अ दे से अंत में मुन्ताकिल कर ते हुए डकारिया कत-आ लिखा :

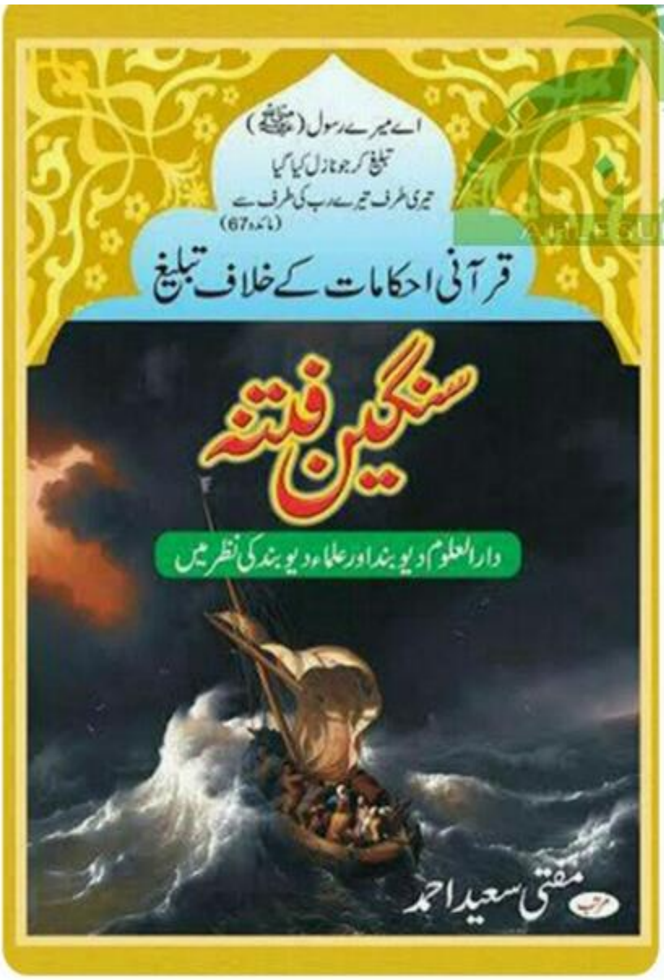
मुलाहिजा करें .... (सवातिउल इलहाम पृष्ट १४)


سواطع الالہام

حضرت غوث ہزاروی کے حکیم حاذق
جو کہ بخارے کم فیس لیا کرتے ہیں
آپ یہ معلوم ہوا کہ بخاری حضور
کشتۂ خصیۂ ابلیس دیا کرتے ہیں

तबलीगी जमाअत अपनी नज़र में

मौलवी मंज़ूर अहमद मेंगल से तब्लीगियों ने पूछा कि आप के मदरसे में दीन का काम होता है तो मौलवी साहब ने गुस्सा में आकर फरमाया कि "**बस दिन को यह त ल बा (छात्र) मेरे ऊपर और रात को मैं इन के ऊपर होता हूँ |** (संगीन फ़ितना)





۔۔۔۔اور اسکی اصلاح ہوگئی۔ اور پھر کہا کہ یہ تبلیغ کا کام بین الاقوامی کام ہے اسکے مقابلے میں درس قرآن میں بیٹھنے کی مثال اس طرح ہے کہ کسی نے اپنے گھر کے صحن میں کچھ آلو ٹماٹر لگائے اب اس چھوٹی سی جگہ یہ آلو ٹماٹر سے تو اسکے اپنے گھر کا کھانا بھی تیار نہیں ہوسکتا اس میں اور چیزوں کی بھی ضرورت ہے اور اسکے علاوہ گھر کی دیگر ضروریات آلو پیاز کیا پوری کریں گے...اور اس تبلیغ کے کام کی مثال اس طرح ہے کہ کسی نے بہت بڑی زمین یہ تمام سبزیاں لگائی ہوں اور خود بھی کھائے اور دوسرے کو بھی فروخت کر کے تمام گھر کی ضروریات پوری کرے یہ ہے تبلیغ کا عالمی کام اور اس کے عالمی فائدے....درس قرآن کا مقابلے میں (معاذ اللہ)

لاکھوں کے اجتماعات میں ایسی باتیں سننے کے بعد یہ لوگ علمائے کرام کے پاس کیا ذہن لیکر جاتے ہیں۔

کیا جامعہ فاروقیہ میں بھی دین کا کام ہوتا ہے۔

اسی طرح حضرت مولانا شاہ فیصل صاحب (شیر پاؤ لانڈھی والے) فرماتے ہیں کہ مدرسہ جامعہ فاروقیہ میں کچھ تبلیغی...**حضرت مولانا منظور احمد مینگل صاحب دامت برکاتہم سے ملنے آئے**...باتوں باتوں میں بار بار کہنے لگے کہ حضرت یہاں مدرسہ میں دین کا کام بھی ہوتا ہے...حضرت مولانا منظور احمد مینگل صاحب فرمانے لگے کہ یہاں کوئی دین کا کام نہیں ہوتا...بس دن کو یہ تمام طلبہ میرے اوپر اور رات کو میں ان کے اوپر ہوتا ہوں...بے غیرتو... یہاں کیا یہ رات دن صبح شام قرآن وحدیث کا سیکھنا سکھانا تمہیں دین کا کام نظر نہیں آتا....چلو دفعہ ہو جاؤ یہاں سے....

اسی طرح یہ باتیں ان کو کون سکھاتا ہے ان کے بڑے مراکز کہاں پر ہیں جہاں سے یہودی عسائی قادیانی ہی والی باتیں کہ اللہ کا راستہ یہ ہی ہے اور دین کا کام یہ ہی ہے۔ سیکھتے سکھاتے اور پھر مسلمانوں کے روپ میں آکر کس انداز میں پھیلاتے ہیں۔

استاذ مولانا عبدالعزیز صاحب فرماتے ہیں کہ کراچی قائد آباد لانڈھی کی توحیدی مسجد میں نماز کے

बे सनद हकीमुल उम्मत
ना फ़क़ीह ना मुफ़स्सिर बल्कि जाहिल

मुझ को मदरसे से सनद नहीं मिली | मदरसा ने दी ही नहीं हम ने मांगी नहीं क्यूंकि यह इतक़ाद (यक़ीन) था कि हम को कुछ आता नहीं फिर सनद क्या मांगते | (अफाज़ातुल यौमिया भाग १ पृष्ट २८२ - मजलिस ए हकीमुल उम्मत पृष्ट २४४)

मैं फ़क़ीह नहीं मुहद्दिस नहीं मुजतहिद नहीं मुफस्सिर नहीं |

(अफाज़ातुल यौमिया भाग १ पृष्ट १७१)

अल हम्दुलिल्लाह ! अब तक यही एतक़ाद है आप चाहे हलफ़ ले लीजिये मुझे कुछ नहीं आता |

(अफाज़ातुल यौमिया भाग ९ पृष्ट १६३)

मैं तवाजो (इन्क्सारी) से नहीं कहता | वाकिया है कि (मुझे) इल्मी लियाक़त कभी हासिल हूई ही नहीं |

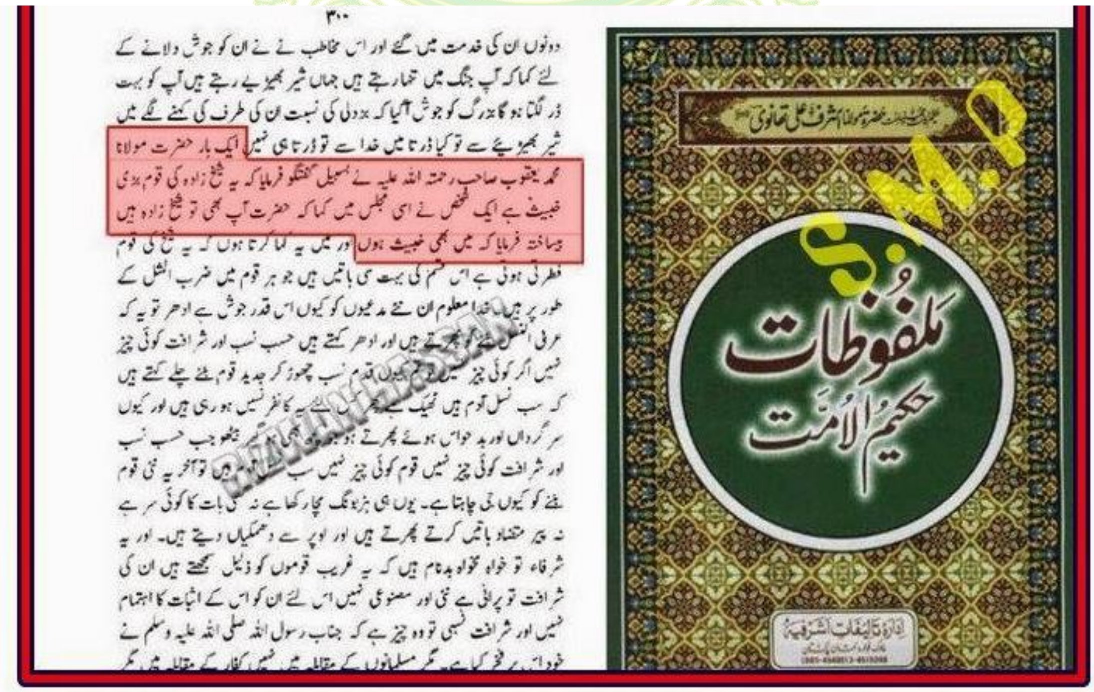
(अफाज़ातुल यौमिया भाग ४ पृष्ट १६३)

थानवी का इक़रार

देवबंदियों के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी ने इकरार किया है कि हम ना लाएक हैं गुनाहगार हैं सियाह्कार हैं नाबिकार हैं गुस्ताख़ हैं | (अफा जातुल यौमिया भाग ६ पृष्ट ३२१)

फिर दूसरी किताब में लिखा गया है कि मैं तो अपने को कुत्तों और सूअरों से भी बदतर समझता हूँ अगर किसी को यकीन ना हो तो मैं इस पर हलफ़ उठा सकता हूँ | (अशरफुल सवानिह भाग ४ पृष्ट ४३)

थानवी साहब फरमाते थे कि मैं खबीस हूँ | (हज़रत थानवी के हैरत अंगेज़ वक़िआत पृष्ट ६३०- मल्फ़ूज़ात हकीमूल उम्मत भाग ६ पृष्ट ३००)



देवबंदी मौलवी याकूब नानोतवी ने भी कहा है कि मैं भी ख़बीस हो | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ६ पृष्ट २११)

सच तो यह है कि हमारे बुज़ुर्ग हम को बिगाड़ गए कोई और पसंद ही नहीं आता | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ६ पृष्ट २०५)

बद तमीज़ी की मश्क़ थानवी पर

देवबंदी हकीमुल उम्मत अशरफ अली थानवी फ़रमाते हैं कि सारे दुनिया से बद तमीज़ी सीख कर आते हैं और मुझ पर मश्क़ की जाती है | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ६ पृष्ट २६३)

वली होने में तो मेरे शक नहीं मगर बिगाड़ने का वली हूँ संवारने का नहीं | अरवाहे सलासा पृष्ट ३३५ - मवा इज़ मिलादुन्नबी पृष्ट २८७)

चिड़िया छोड़ आऊं

देवबंदी हकीमुल उम्मत अशरफ अली थानवी फ़रमाते हैं कि यहाँ पर एक हाफिज़ साहब थे बच्चों को पढ़ाया करते थे उन्हों ने एक क़ाईदा (क़ानून) मुक़र्रर किया था और वह इस वजह से कि लड़के वहीँ बैठे बैठे बदबू फैलाते रहते थे | हाफिज़ साहब ने परेशान हो कर हुक्म दिया कि बाहर जाकर ऐसा किया करो | हाफिज़ साहब ने यह तजवीज़ फ़रमाया कि यह कह कर इजाज़त लिया करो कि चिड़िया छोड़ आऊं | बस बच्चों को एक बात हाथ आ गई | हर वक़्त उनके लिए शुगल हो गया | एक इधर से उठता है हाफिज़ जी ! चिड़िया छोड़ आऊं, एक उधर से उठता है हाफिज़ जी ! चिड़िया छोड़ आऊं | हाफिज़

जी बे चारे दिक (तंग) आ गए, तब कहा अबे यहीं छोड़ दिया करो | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ८ पृष्ट २५६)

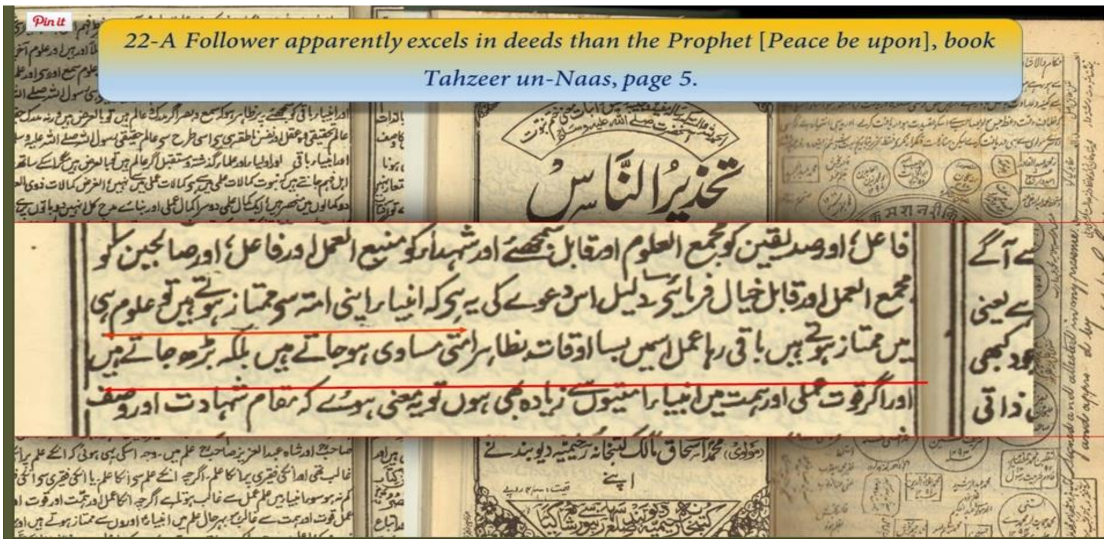
थानवी के जिस्म का मैल

मौलवी अशरफ अली थानवी ने खादिम से इरशाद फ़रमाया कि कमर मल दो, उन्होंने कमर मलना शुरू की तो दरयाफ्त फ़रमाया कि मैल भी निकल रहा है या नहीं उन्होंने ने कहा कि नहीं ..... थानवी ने कहा में तो समझता हूँ कि मैल जो बदन से नहीं निकलता वह सब दिल में जमा होता रहता हैं | (अफाज़ातुल यौमिया भाग ९ पृष्ट २७१)

नमाज़ में हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) का ख्याल

मौलवी इस्माइल देहलवी ने लिखा है कि नमाज़ में हुज़ूर अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) की तरफ खियाल का सिर्फ जाना भी बैल, गधे के खियाल में डूब जाने से बुरा है | (सीरत ए मुस्तकीम फ़ारसी पृष्ट ८६)

मौलवी कासिम नानोतवी ने लिखा है कि उम्मती बा ज़ाहिर अमल में नबी से बढ़ जाता है | (तहजीरून नास पृष्ट ०५)



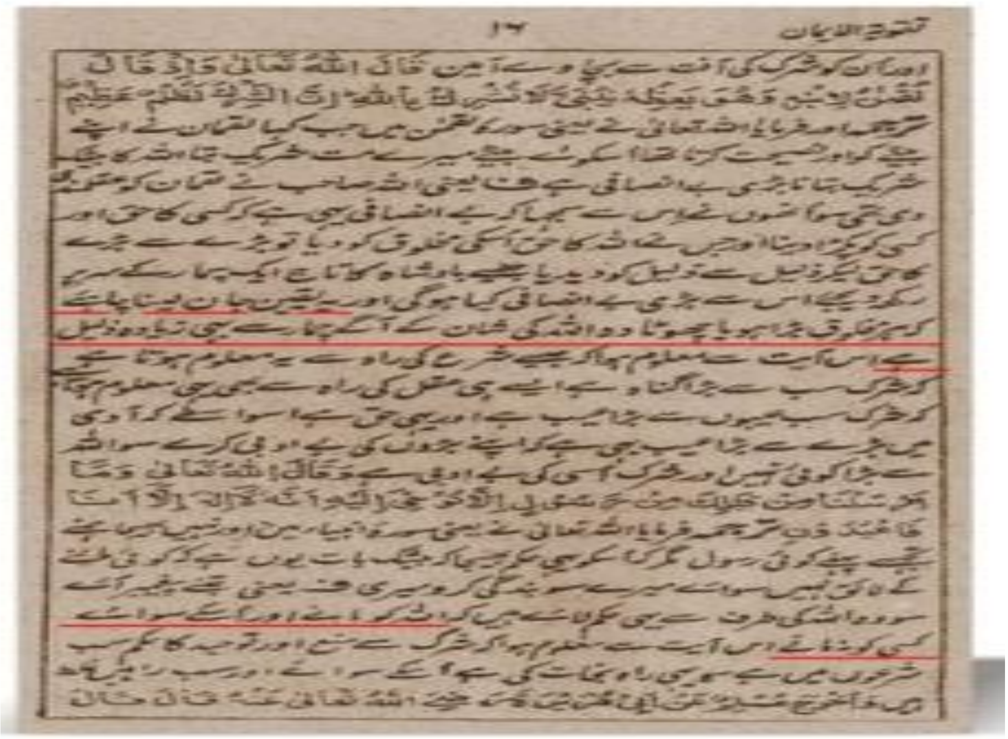
मौलवी कासिम नानोतवी ने लिखा है कि जो खूसुसियात नबी अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) की है वही दज्जाल की है | (आबे हयात पृष्ट १६९)

मौलवी इस्माइल देहलवी ने लिखा है हुज़ूर मर कर मट्टी में मिल गए | (तक्वीयतुल इमान पृष्ट ५९)

इंसाफ करो ! देवबंदियों के मौलवी ने लिखा है कि भाई हम तो क़ब्र में सिर्फ नमाज़ पढ़ा करेंगे | (अरवाहे सलासा पृष्ट ३५७)

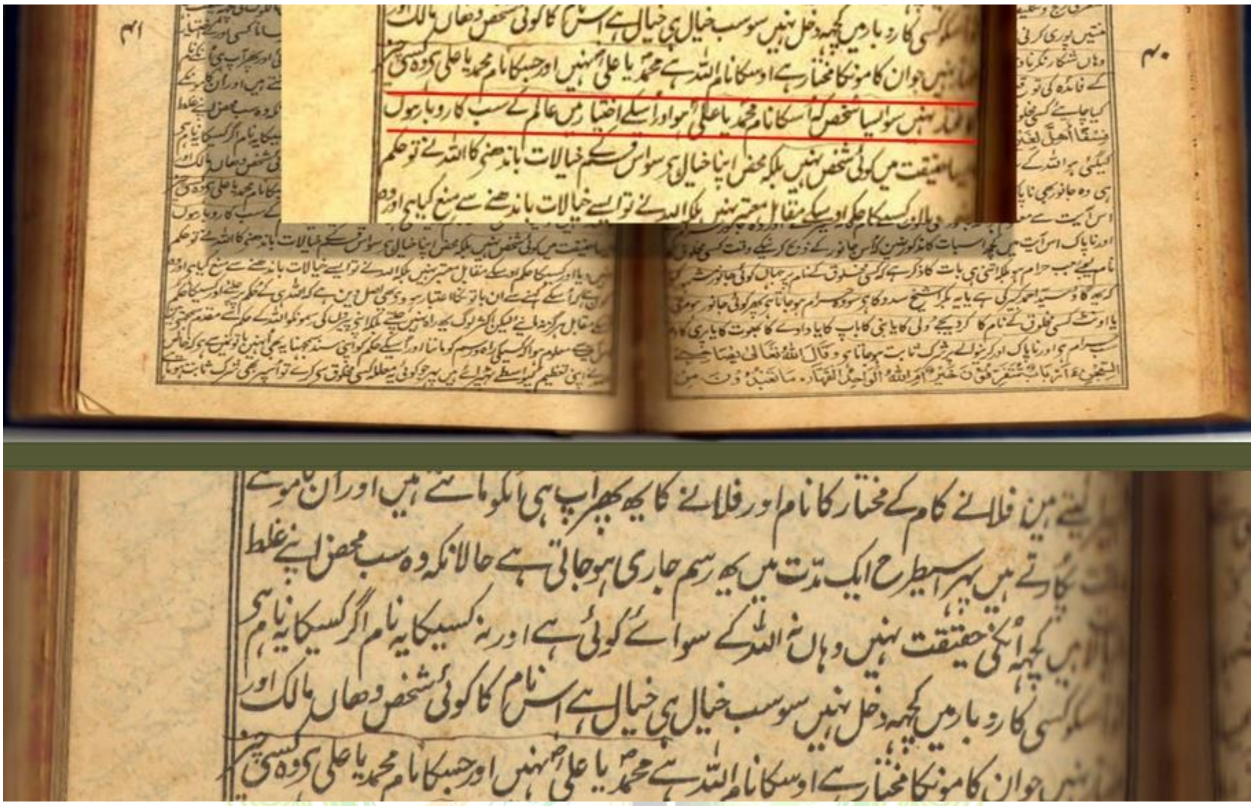
देवबंदी मौलवी इस्माइल देहलवी ने लिखा है नबी, रसूल सब नाकारा हैं | (तक्वीयतुल इमान पृष्ट २९)

इस्माइल देहलवी ने लिखा है कि तमाम मख्लूक़ अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़लील है| (तक्वीयतुल इमान पृष्ट १६)


تقویۃ الایمان ۱۶

मौलवी इस्माइल देहलवी ने लिखा है कि गाँव में जैसा दर्जा चोधरी, जमीनदार का है ऐसा दर्जा उम्मत में नबी का है | (तक्वीयतुल इमान पृष्ट ६१)

मौलवी इस्माइल देहलवी ने लिखा है कि जिस का नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं, नबी और वाली कुछ नहीं कर सकते | (तक्वीयतुल इमान पृष्ट ४१)

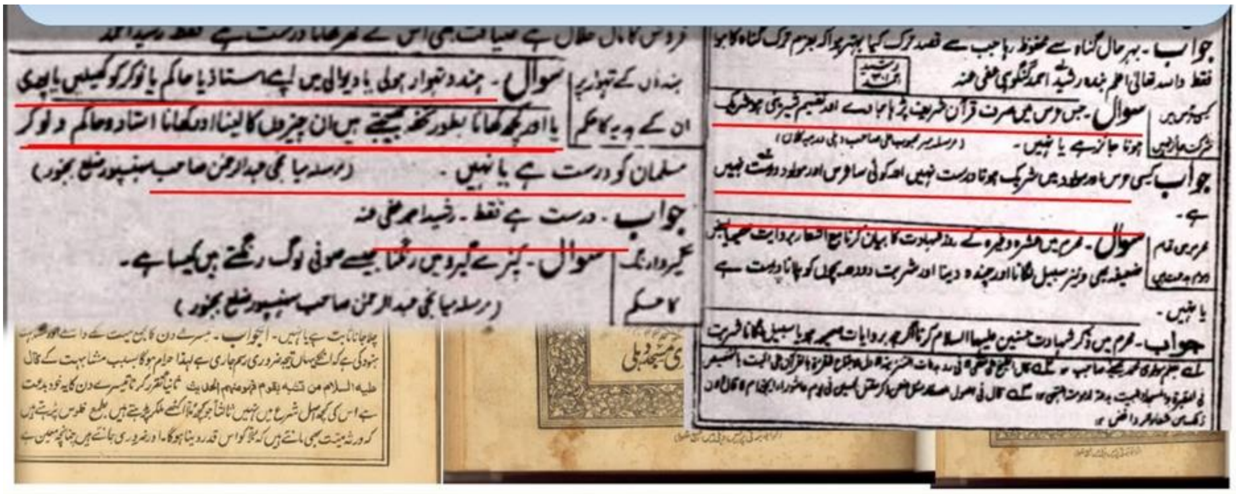

پکارتے ہیں پھر اسی طرح ایک مدت میں یہ رسم جاری ہو جاتی ہے حالانکہ وہ سب محض اپنے غلط
ہیں کچھ انکی حقیقت نہیں وہاں بجز اللہ کے سوائے کوئی نہیں ہے اور نہ کسیکا یہ نام اگر کسیکا یہ نام
اسکو کسی کاروبار میں کچھ دخل نہیں سو سب خیال ہی خیال ہے اس نام کا کوئی شخص وہاں مالک اور
نہیں جوان کاموں کا مختار ہے اوسکا نام اللہ ہے محمد یا علی نہیں اور جسکا نام محمد یا علی ہے وہ کسی

मौलवी इस्माइल देहलवी का एतराफ़

मौलवी इस्माइल देहलवी ने तक्वीयतुल इमान लिखने के बाद अपने ख़ास ख़ास लोगों को जमा (इकठ्ठा) किया और उनके सामने तक्वीयतुल इमान पेश की और फ़रमाया कि मैंने यह किताब लिखी है और मैं जानता हूँ इसमें बअज (कुछ) जगह ज्यादह तेज़ अल्फाज़ भी आ गए हैं और बअज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है मसलन (जैसे कि) उन उमूर को जो शिर्क ए ख़फी थे शिर्क ए जली लिख दिया गया है इन वजूह (सबब) से मुझे अंदेशा है इसकी ईशाअत (प्रस्तुत) से शोरिश (दंगा फसाद) जरूर होगी मैंने यह किताब लिख दी, गो (अगरचे) इस से

शोरिश होगी मगर तवक्को (उम्मीद) है कि लड़ भिड़ कर खुद ठीक हो जायेंगे | (अरवाहे सलासा हिकायत ५९)

रशीद गंगोही ने लिखा है कि हिंदूओं की होली, दीवाली का प्रशाद वगैरह जायज़ है | (फतवा रशीदिया भाग २ पृष्ट १२३)


سوال۔ ہندو تہوار ہولی یا دیوالی میں اپنے استاد یا حاکم یا نوکر کو کھیلیں یا پوری یا اور کچھ کھانا بطور تحفہ بھیجتے ہیں ان چیزوں کا لینا اور کھانا استاد و حاکم و نوکر مسلمان کو درست ہے یا نہیں۔ (مرسلہ مولوی عبد الرحمن صاحب سنبہوری ضلع بجنور)
جواب۔ درست ہے فقط۔ رشید احمد عفی عنہ

فातिहा खाने या शीरनी पर पढ़ना बिदअत ज़लालत है हरगिज़ हरगिज़ ना करना चाहिए | (फतवा रशीदिया)


فتاویٰ رشیدیہ ۵۹۸ حرمت اور جواز کے مسائل

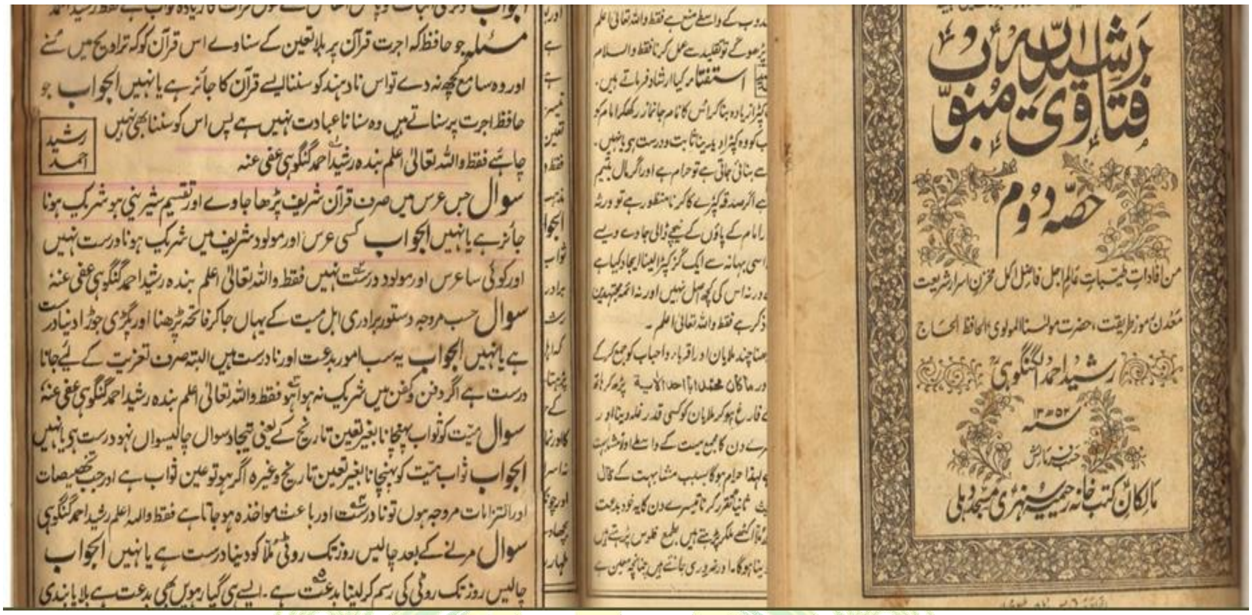
مسئلہ فاتحہ کا پڑھنا کھانے پر یا شیرینی پر بروز جمعرات کے درست ہے یا نہیں۔
الجواب فاتحہ کھانے یا شیرینی پر پڑھنا بدعت ضلالت ہے ہرگز نہ کرنا چاہئے فقط رشید احمد۔

(سوال) جوں کا مارنا گرم پانی میں یا دھوپ میں جائز ہے یا نہیں۔
(جواب) جوں کا مارنا گرم پانی میں یا دھوپ میں جائز ہے کچھ حرج نہیں فقط واللہ تعالیٰ اعلم

حلال کوّا کھانا
(سوال) جس جگہ زاغ معروفہ کو اکثر حرام جانتے ہوں اور کھانے والے کو برا کہتے ہوں تو ایسی جگہ اس کوا کھانے والے کو کچھ ثواب ہوگا یا نہ ثواب ہوگا نہ عذاب۔
(جواب) ثواب ہوگا۔

فتاویٰ رشیدیہ مبوب حصہ دوم

मिलाद शरीफ में भी शिरकत करना दरुस्त नहीं फतवा रशीदिया भाग २ पृष्ट १३०)



مسئلہ جو حافظ کہ اجرت قرآن پر بلا تعین کے سناوے اس قرآن کو کہ تراویح میں سنے اور وہ سامع کچھ نہ دے تو اس نادہند کو سننا ایسے قرآن کا جائز ہے یا نہیں الجواب جو حافظ اجرت پر سناتے ہیں وہ سنانا عبادت نہیں ہے پس اس کو سننا بھی نہیں چاہیے فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

سوال جس عرس میں صرف قرآن شریف پڑھا جاوے اور تقسیم شیرینی ہو شریک ہونا جائز ہے یا نہیں الجواب کسی عرس اور مولود شریف میں شریک ہونا درست نہیں اور کوئی سا عرس اور مولود درست نہیں فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

سوال حسب مروجہ دستور برادری اہل میت کے یہاں جا کر فاتحہ پڑھنا اور پگڑی جوڑا دینا درست ہے یا نہیں الجواب یہ سب امور بدعت اور نادرست ہیں البتہ صرف تعزیت کے لیے جانا درست ہے اگر دفن و کفن میں شریک نہ ہوا ہو فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

سوال میت کو ثواب پہنچانا بغیر تعین تاریخ کے یعنی تیجا دسواں چالیسواں نہ درست ہے یا نہیں الجواب ثواب میت کو پہنچانا بغیر تعین تاریخ وغیرہ اگر ہو تو عین ثواب ہے اور جب تخصیصات اور التزامات مروجہ ہوں تو نادرست اور باعث مواخذہ ہو جاتا ہے فقط واللہ اعلم رشید احمد گنگوہی

سوال مرنے کے بعد چالیس روز تک روٹی ملا کو دینا درست ہے یا نہیں الجواب چالیس روز تک روٹی کی رسم کر لینا بدعت ہے۔ ایسے ہی گیارہویں بھی بدعت ہے بلا پابندی

فتاوی رشیدیہ مبوب حصہ دوم

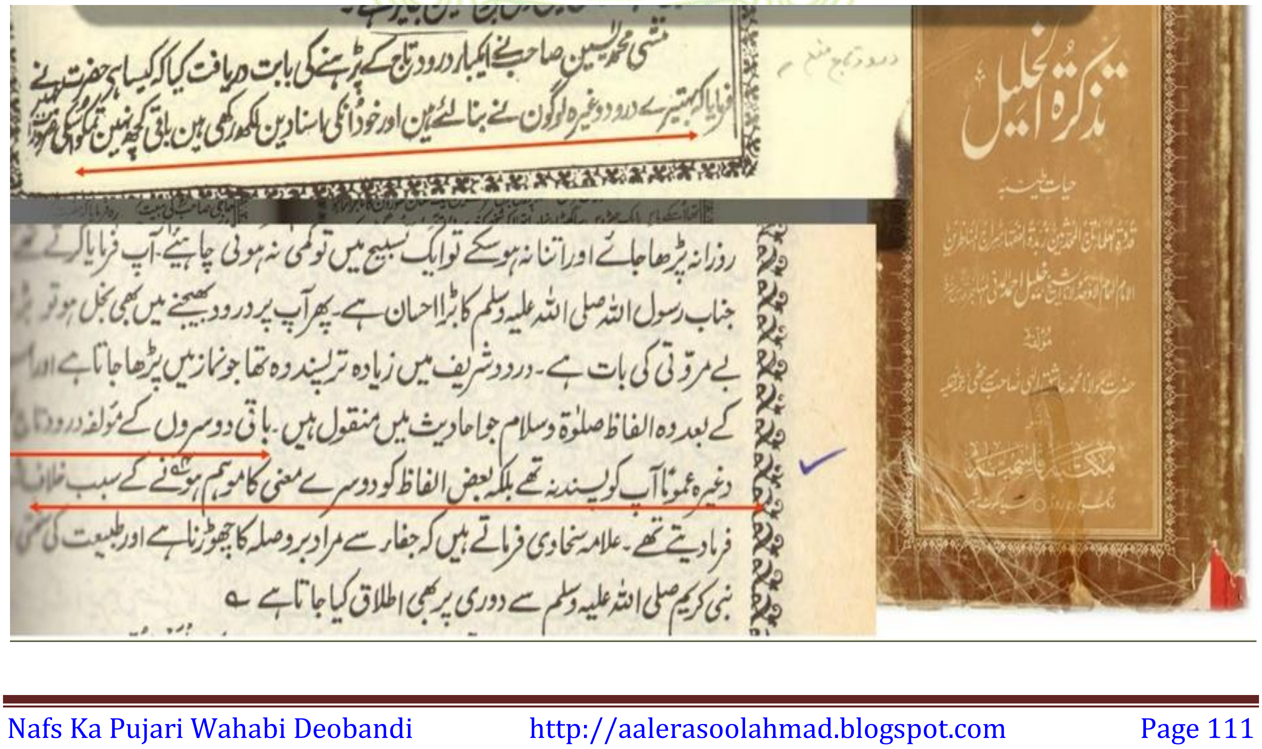
رشید احمد گنگوہی

مالکان کتب خانہ رحیمیہ سنہری مسجد دہلی

मौलवी ज़कारिया कान्धल्वी ने लिखा है कि दूरूद ताज ना पसंदीदा है और पढ़ना ना जायज़ है| (फ़ज़ाइल ए आमाल पृष्ट ७२-७३ बाब फ़ज़ाइल दरूद शरीफ़ प्रकाशित मक्तबा आरिफीन कराची)

दुरूद ए ताज वगैरह ना पसंद थे |

(तज्किरुतुल ख़लील)



منشی محمد یسین صاحب نے ایکبار درود تاج کے پڑھنے کی بابت دریافت کیا کہ کیسا ہے حضرت نے فرمایا کہ بہتیرے درود وغیرہ لوگوں نے بنا لیے ہیں اور خود انکی اسنادیں لکھ رکھی ہیں باقی کچھ نہیں

روزانہ پڑھا جائے اور اتنا نہ ہو سکے تو ایک تسبیح میں تو کمی نہ ہونی چاہیے۔ آپ فرمایا کرتے جناب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا بڑا احسان ہے۔ پھر آپ پر درود بھیجنے میں بھی بخل ہو تو بے مروتی کی بات ہے۔ درود شریف میں زیادہ تر پسند وہ تھا جو نماز میں پڑھا جاتا ہے اور اس کے بعد وہ الفاظ صلوٰۃ وسلام جو احادیث میں منقول ہیں۔ باقی دوسروں کے مؤلفہ درود تاج وغیرہ عموماً آپ کو پسند نہ تھے بلکہ بعض الفاظ کو دوسرے معنی کا موہم ہونے کے سبب خلاف فرما دیتے تھے۔ علامہ سخاوی فرماتے ہیں کہ جفار سے مراد بر وصلہ کا چھوڑنا ہے اور طبیعت کی سختی نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سے دوری پر بھی اطلاق کیا جاتا ہے

تذکرۃ الخلیل

इख्तितामिया

यह तो थे बतौर नमूना ग़ैर मुक़ल्लिदीन और देवबंदियों की पुस्तक के चंद हवाले से वरना अगर आप ग़ैर मुक़ल्लिदीन और देवबंदियों की पुस्तकों को उठा कर देखें तो आप को बे शुमार हया सोज़ और गंदे मसाइल मिलेंगे और वह भी कुरान व हदीस के नाम पर, आखिर में हम पाठकों से पूछते हैं कि जितने गंदे और हया बाखता मसाइल ग़ैर मुक़ल्लिदीन और देवबंदियों ने अल्लाह और उसके रसूल (صلی اللہ علیہ والہ وصحابہ وسلم) से मनसूब किए हैं क्या किसी हिन्दू, सिख, इसाई, या यहूदी ने भी अपने मज़हबी पेशवाओं (धार्मिक गुरु) से मनसूब किये हैं ???

या ग़ैर मुक़ल्लिदीन और देवबंदी उन सब पर सबक़त (बढ़त) ले गए हैं ?

आखिर में हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं अल्लाह तअला ग़ैर मुक़ल्लिदीन और देवबंदियों को हिदायत की दौलत से नवाजें और उम्मत मुस्लिमा को इस फितने के मकर व फ़रेब से महफ़ूज़ रखे ! (आमीन)

صدق الله العظيم

वसीयत-ए-आला हजरत

इमाम ए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा عليه الرحمه

जिस से अल्लाह व रसूल की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वो तुम्हारा कैसा ही प्यारा हो उस से जुदा हो जाओ । जिसको बारगाह-ए-रिसालत में जरा भी गुस्ताख देखो फिर वो तुम्हारा कैसा ही मुअज्जम क्यूँ न हो अपने अन्दर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकालकर फेंक दो ।

मैं पौने चौदह बरस की उम्र से यही बताता रहा और इस वक्त फिर यही अर्ज करता हूँ । अल्लाह तआला जरूर अपने दीन की हिमायत के लिये किसी बंदे को खड़ा कर देगा । मगर नहीं मालूम मेरे बाद जो आये कैसा हो और तुम्हें क्या बताये ।इसलिये इन बातों को खूब सुन लो हुज्जतुल्लाह कायम हो चुकी । अब मैं कब्र से उठ कर तुम्हारे पास बताने न आऊँगा । जिसने इसे सुना और माना कयामत के दिन उसके लिये नूर-व-नेजात है और जिसने न माना उसके लिये जुल्मत-व- हलाकत ।"

दवात ए अमल

१. ईमान की रक्षा के लिए आला हज़रत अल शाह इमाम अहमद रजा खान अलैहिर रह्मां और अन्य उलेमा ए अहले सुन्नत व जमाअत की पुस्तकों का अध्ययन कीजिए जो

हज़रात खुद न पढ़ सकें वह अपने पढ़े लिखे भाई से अनुरोध करें कि वह पढ़कर सुनाए।

२. मसलके अहले सुन्नत व जमाअत और मशरबे क़ादरीयत या चिश्तीयत या सुहरवर्दीयत या नकशबंदीयत पर मज़बूती से स्थिर रहें और बदमज़हबों की सुहबत से बचें।

३. फ़राइज़ व वाजिबात की अदाई को हर कार्य पर प्राथमिकता दीजिए इसी तरह हराम और मकरूह कार्यों और बिदआत से परहेज़ कीजिए कि इसी में दुनिया और आखिरत की भलाई है।

४. फरीज़ा ए नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात तमाम तर कोशिश से अदा कीजिए कि कोई साधना और मुजाहिदा इन फ़राइज़ की अदाई के बराबर नहीं है।

५. पाँचों वक्तों की नमाज़ें अपने निकट के सुन्नी मस्जिदों में अदा करें और इमाम साहब का भी ख्याल रखा करें क्योंकि वह कौम का रहबर व रहनुमा है |

६. ज्यादा से ज्यादा शरीअत की पाबंदी करें |

७. ख़ुश इख्लाकी, हुसन ए मामला और वादा वफाई से अपनी पहचान बनाइए।

८. अपनी जुबान, हाथ या किसी और तरीके से हरगिज़ हरगिज़ कभी भी किसी को तकलीफ़ न पहुंचाए | यहाँ तक कि पेड़, पौधों और जानवरों को भी |

९. क़र्ज हर हाल में भुगतान कीजिए कि शहीद के सभी पापों को माफ कर दिए जाते हैं लेकिन क़र्ज माफ नहीं किया जाता है। किताबों में है कि जो दुनिया में लगभग तीन पैसे क़र्ज दबालेगा क़ियामत के दिन उस के बदले सो बा जमाअत नमाज़ देनी पड़ जाएंगी। गौरतलब है कि आप से हुकूकुल एबाद (बन्दों के हक़ की अदाइ) में कोताही न हो।

१०. .कुरान शरीफ की तिलावत कीजिए और उसके मतलब व मफाहीम समझने के लिए कुरआने पाक का सबसे अच्छा कंज़ुल इमान तर्जुमा ए कुरान (इमाम अहले सुन्नत अल-शाह इमाम अहमद रजा खान अलैहिर रह्मां) पढ़कर इमान ताजा कीजिए।

११. अपने अपने मशरब के शजरा शरीफ में दिए गए वज़ाइफ़ की पाबंदी करें।

१२. प्रत्येक चांद्र मास की **६ तारीख** को सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ (قدس سرہ النورانی) **११ तारीख** को ग़ौस आज़म महबूबे सुबहानी शेख अब्दुल कादिर जिलानी (قدس سرہ النورانی) और **२८ तारीख** को ग़ौसुल आलम महबूबे यज़दानी सुल्तान सैयद अशरफ जहांगीर सिमनानी (قدس سرہ النورانی) की फातिहा का व्यवस्था करें ।

१३.	फातिहा, उर्स, मिलाद शरीफ, शादियों और इस तरह के सभी समारोहों में भोजन, मिठाई और फलों के इलावा उलेमा-ए-अहले सुन्नत की पुस्तकों का भी वितरण कीजिए।

१४.	अल्लाह और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकाम व फरमान जानने, उन पर अमल करने और दूसरों तक पहुंचाने के लिए सभी सुन्नी संगठनों और आंदोलनों अपने आप को और दूसरों को भी शामिल कीजिए।

१५.	हर शहर में सुन्नी पत्रिकाओं, लिटरेचर या किताबें प्रदान करने के लिए पुस्तकालय स्थापित कीजिए यह तबलीग़ भी है और अच्छी व्यापार भी।

१६.	इस्लामी बहनों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए कम से कम हर महीने में अपने क़ुर्ब व जवार में इस्लामी बहनों की समारोहों इन्तिज़ाम कीजिए।

१७.	मज़ारात में उल्टी-सीधी हरकतें करना जैसे बे पर्दा महिलाओं का जाना, नाच गाना करना, चरस पीना, जगह जगह नकली आमिलों और नकली पीरों की बोर्ड होना आदि। इन सब कामों को अहले सुन्नत व जमाअत पर डाल बदनाम करने की नापाक कोशिश की जाती है इसलिए इन सभी ख़राफ़ातों से मुक्त करने की भरपूर कोशिश करें ।

१८. कोई व्यक्ति मज़ाराते औलिया पर जाकर सजदा या परिक्रमा करता है तो उसे सख्ती से रोका जाए और उन्हें अहले सुन्नत व जमाअत की सही शिक्षाओं से अवगत कराया जाए।

१९. **ऑल इंडिया उलेमा व मशाईख बोर्ड** की सदस्यता स्वीकार कीजिए, और सदस्यता फार्म कार्यालय से हासिल कीजिए।

अंत .... में

اللهم اختم لنا بحسن الخاتمه ولا تختم علینا بسوء الخاتمه اللهم ارزقنی شهادة فی سبیلك واجعل موتی فی بلد رسول لك صلی الله علیه وسلم وصلی الله علی خیر خلقه محمد واله واصحابه اجمعین برحمتك یا ارحم الراحمین

मौत आए दर ए नबी (صلی اللہ علیہ والہ وصحابہ وسلم)पर **सय्यद**
वरना थोड़ी सी जमीं हो शहे सिमनां के क़रीब

फ़क़ीर ए क़ादरी गदा ए अशरफ़ ए सिमनां

आले रसूल अहमद अल-सिद्दीक़ी अल-अशरफ़ी अल-क़ादरी कटिहारी

रियाद (सऊदी अरब)

११ रबीउल गौस १४३७ हिजरी बरोज़ गुरुवार बाद नमाज़े मग़रिब

Please Like, Download, Share and Subscribed
For Eisal e Sawaab All Muslims (Sunni Muslims)

YouTube Channel
http://www.youtube.com/c/AaleRasoolAhmad

Follow on twitter
www.twitter.com/aaleashrafi

Email
aalerasoolahmad@gmail.com

Facebook
www.facebook.com/aalerasoolahmad
Blogger
www.aalerasoolahmad.blogspot.com
Linkedin
aalerasoolahmad
Scribd
www.scribd.com/aale8rasool8ahmad
Slideshare
www.slideshare.net/mdalerasool
Priterest
www.pinterest.com/aalerasoolahmad

Note: if you find any typing mistake or wrong reference Please inform above address In Sha Allah I will edit very soon.

جزاک اللہ خیرا واسعا

Introduction to AIUMB

All India Ulama & Mashaikh Board (AIUMB) has been established with the basic purpose of popularizing the message of peace of Islam and ensuring peace for the country and community and the humanity. AIUMB is striving to propagate Sunni Sufi culture globally .Mosques, Dargahs, Aastanas, and Khanqwahs are such fountain heads of spirituality where worship of God is supplemented with worldly duties of propagating peace, amity, brotherhood and tolerance.

AIUMB is a product of a necessity felt in the spiritual, ethical and social thought process of Khaqwahs.Khanqwahs also have made up their mind to update the process and change with the changing times. As it is a fact that Khanqwahs cannot ignore some of the pressing problems of the community so the necessity to change the work culture of these centers of preaching and learning and healing was felt strongly. AIUMB condemns all those deeds and words that destabilize the country as it is well known that this religion of peace never preaches hatred .Islam is for peace. Security for all is the real call. AIUMB condemns violence in all its form and manifestation and always ready to heal the wounds of all the mauled and oppressed human beings. The integral part of the manifesto of AIUMB is peace and development. And that is why Board gives first priority to establish centers of quality modern education in Sunni Sufi dominated ares of the country. The other significant objectives of the Board are protection of waqf properties, development of Mosques, Aastanas, Dargahs and Khanqwahs.

This Board is also active in securing workable reservation for Muslims in education and employment in proportion to their population. For this we have been organizing meetings in U.P, Rajasthan, Gujrat, Delhi, Bihar, West Bengal, Jharkhand, Chattisgadh, Jammu& Kashmir, and other states besides huge Sunni Sufi conferences and Muslim Maha Panchayets. Sunni conference (Muradabad 3rd Jan 2011) Bhagalpur (10th May 2010) and Muslim Maha Panchayet at Pakbara Muradabad (16th October 2011) and also Mashaikh e tareeqat conference of Bareilly (26th November 2011) are some of the examples.

HISTORICAL FACT AND THE NEED OF THE HOUR

The history of India bears witness to that fact that when Alama Fazle Haq Khairabadi gave the clarion call to fight for the freedom of our country all the Khanqahs and almost all the Ulama and Mashaikh of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat rose in unison and gave proof of their national unity and fought for Independence which resulted in liberation of our country from British rule.

But after gaining freedom, our Khanqahs and The Ulama of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat went back to the work of dawa and spreading Islam, thinking that the efforts that were undertaken to gain freedom are distant from religion and leaving it to others to do the job. Thus the Independence for which our Ulama and Mashaikh paid supreme sacrifice and laid down their lives resulted in us being enslaved and thereby depriving us legimative right to participate in the governance of our country.

After the Independence hundreds of issues were faced by the Umma, whether religious or economic were not dealt with in a proper way and we kept lagging behind. During the lat 50 years or so a handful of people of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat could become MLA's, MP's and minister due to their individual efforts lacking all along solid organized community backing as a result of which Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat remained disassociated with the Government machinery and we find that we have not been able to found foothold in the Waqf Board, Central Waqf Board, Hajj Committee, Board for Development of Arbi, Persian & Urdu or Minorities Commission. Similarly when we look towards political parties big or small we see a specific non-Sunni lobby having strong presence. In all the Institution mentioned above and in all political parties Sunni presence is conspicuous by its absence.

Time and again Ulama and Mashaikh have declared that the Sunni's constitutes a total of approximately 75% of all Muslim population. This assertion have lived with us as a mere slogan and we have not been able to assert ourselves nor have we made any concerted efforts to do so.

It is the need of the hour that The Ulama and Mashaikh should unite and come on single platform under the banner of Ahl-E- Sunnah Wal-Jamaat to put forward their message to the

Sunni Qaum. To propagate our message Sunni conferences should be held in the District Head Quarters and State Capitals at least once a year to show our strength and numbers this is an uphill task and would require huge efforts but rest assured that once we do that we shall be able to demonstrate our number leaving the non-Sunni way behind thereby changing the perception of political parties towards us and ensuring proper representation in every field.

AIMS AND OBJECTIVES OF AIUMB

- To safeguard the right of Muslim in general and Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in particular.
- To fight for proper representation of responsible person of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in national and regional politics by creating a peaceful mass movement.
- To ensure representation of Sunni Muslim in Government Organization especially in Central Sunni Waqf Boards and Minorities Commission.
- To fight against the stranglehold and authoritarianism of non-Sunni's in State Waqf Board.
- To ensure representation of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in the running of the state waqf board.
- To end the unauthorized occupation of the Waqf properties belonging to Dargahs, Masajids, Khanqahs and Madarasas, by ending the hold of non-Sunni's and to safeguard Waqf properties and to manage them according to the spirit of Waqf.
- To create an envoirment of trust and understanding among Sunni Mashaikh, Khanqahs and Sunni Educational institution by realizing the grave danger being paced by Ahl-E-Sunnah

Wal-Jamaat. To rise above pettiness, narrow mindedness and short sightedness to support common Sunni mission.

- To work towards helping financially weak educational institutions.

- To provide help to people suffering from natural calamities and to work for providing help from Government and other welfare institutions.

- To help orphans, widows, disabled and uncared patients.

- To help victims of communalism and violence by providing them medical, financial and judicial help.

- To organize processions on the occasion of Eid-Miladun-Nabi (SAW) in every city under the leadership of Sunni Mashaikh. To restore the leadership of Sunni Mashaikh in Juloos-E-Mohammadi (SAW) wherever they were organized by Wahabi and Deobandis.

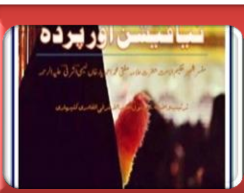
- To serve Ilm-O-Fiqah and to solve the problem in matters relating to Shariah by forming Mufti Board to create awareness among the Muslims to understand Shariah.

- To establish Interaction with electronic and print media at district and state level to express our viewpoint on sensitive issues.

Ashrafe–Millat Hazrat Allama Maulana Syed Mohammad Ashraf Kichhowchhwi
President & Founder All India Ulama & Mashaikh Board
Email: ashrafemillat@yahoo.com
Twitter: www.twitter.com/ashrafemillat
Facebook: www.facebook.com/AIUMBofficialpage
Website: www.aiumb.com

Head Office :
20, Johri Farm,
2nd Floor, Lane No. 1
Jamia Nagar, Okhla
New Delhi India -25
Cell : 092123-57769
Fax : 011-26928700
Zonal Office:
106/73-C,
Nazar Bagh, Cantt. Road,
Lucknow Uttar Pradesh India.
Email : aiumbdel@gmail.com





فیشن اور پردہ
مؤلف حکیم الامت حضرت مفتی احمد یار خاں نعیمی اشرفی



इमाम अहमद रज़ा खां अलैहिर्रहमा
देवबंदियों की नज़र में (हिंदी)



حضور مفتی اعظم ہند کی نماز جنازہ کا امام کون؟



زکوٰۃ اور صدقۂ فطر



Ashrafi Dulha (Roman Urdu)



شب برات آزادی کی رات



Aala Hazrat Aur Radd e Bid'at
(Roman Urdu)



अक़ीदा ए इल्म ए गैब
और देवबंद की क़लाबज़ियाँ (हिंदी)



حضرت سیدنا امام حسین اور یزید پلید بن معاویہ خالدی اموی



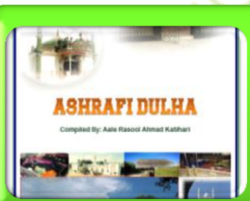
हुज़ूर का साया न था



حیات سید مخدوم اشرف جہانگیر سمنانی رضی اللہ عنہ



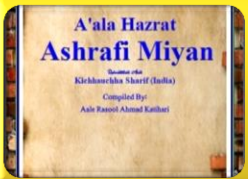
خانوادۂ اشرفیہ کی عالمی درسگاہیں



Ashrafi Dulha (Roman Urdu)



اعلیٰ حضرت اشرفی میاں کچھوچھوی رضی اللہ عنہ



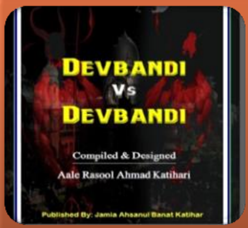
A'ala Hazrat Ashrafi Miyan (English)



देवबंदियों की
रसूल दुश्मनी की ताज़ा मिसाल



حاجی سید عبدالرزاق نورالعین الحسنی والحسینی



Devbandi Vs Devbandi



شجرہ قادریہ چشتیہ اشرفیہ



کرامات سید سلطان اشرف جہانگیر سمنانی قدس سرہ

اشرفی پنج سورہ (زیر ترتیب)

Scribd: www.scribd.com/aale8rasool8ahmad
Slideshare:www.slidshare.net/mdalerasool
www.archive.com/aale_rasool_ahmad
www.aalerasoolamad.blogspost.com